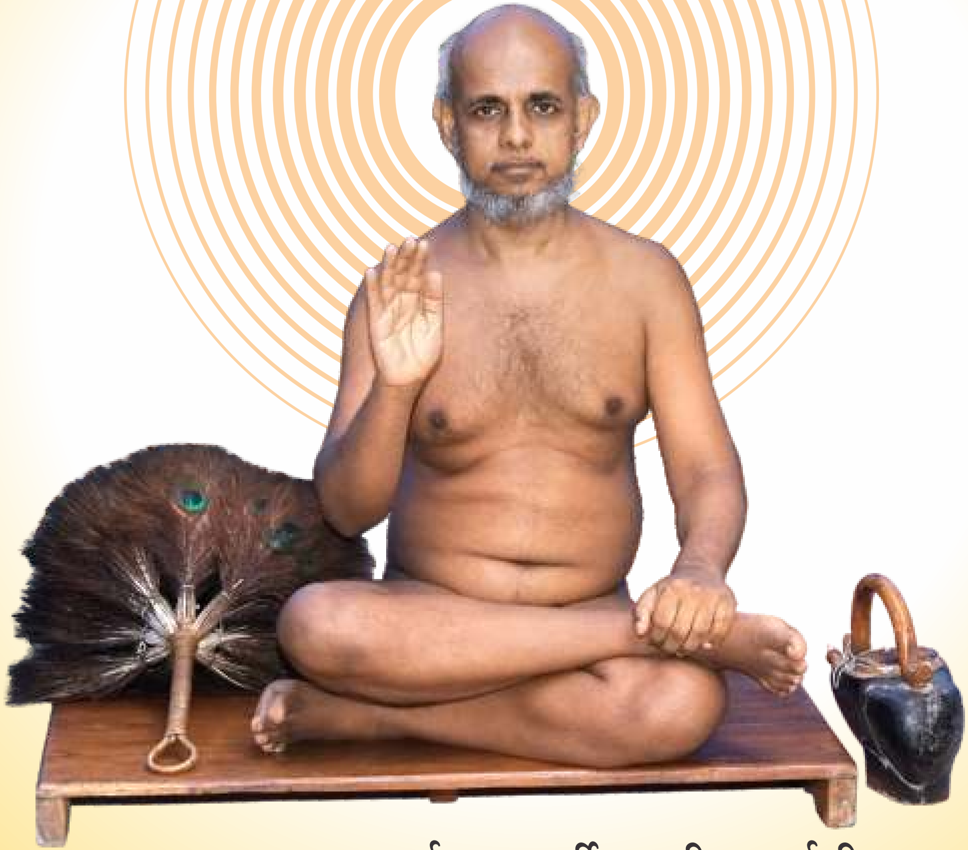

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

प्राकृत अभ्यास सौरभ

लेखक
डॉक्टर कमलचन्द जी सोगाणी

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी, श्री महावीर जी (राजस्थान)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

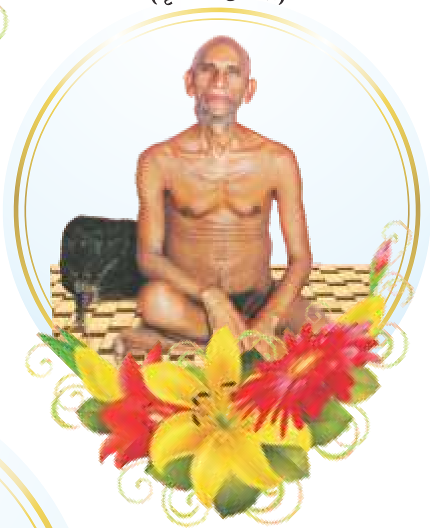

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

प्राकृत अभ्यास सौरभ

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी

राजस्थान

प्राकृत अभ्यास सौरभ

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
(पूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र)
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
राजस्थान

☐ प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी,
जैनविद्या संस्थान,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी,
श्रीमहावीरजी–322220 (राजस्थान)

☐ प्राप्ति-स्थान
1 **जैनविद्या संस्थान, श्रीमहावीरजी**
2 **अपभ्रंश साहित्य अकादमी**
दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी,
सवाई रामसिंह रोड,
जयपुर–302004

☐ प्रथम बार, 1997, 1100

☐ मूल्य
पुस्तकालय संस्करण 75/–
विद्यार्थी संस्करण 60/–

☐ मुद्रक
मदरलैण्ड प्रिंटिंग प्रेस
6–7, गीता भवन, आदर्श नगर
जयपुर–302004

अनुक्रमणिका

अभ्यास संख्या	विषय	अभ्यास की आधार-पुस्तक एवं पाठ संख्या	पृष्ठ संख्या
	आरम्भिक		
	प्रकाशकीय		
1.	वर्तमानकाल	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 1–8	1
2.	विधि एवं आज्ञा	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 9–16	6
3.	भूतकाल	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 17–18	11
4.	भविष्यत्काल	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 19–26	15
5.	अकर्मक क्रिया	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 27	20
6.	आवृत्ति	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 1–16	24
7	आवृत्ति	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 19–26	28
8.	आवृत्ति	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 1–27	32
9.	आवृत्ति	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 1-27	36
10.	सम्बन्धक भूतकृदन्त	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 28	39
11.	हेत्वर्थक कृदन्त	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 29	44

12.	आवृत्ति	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 28–29	49
13.	अकारान्त पुल्लिग संज्ञा (एकवचन)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 30–31	53
14.	अकारान्त पुल्लिग संज्ञा (बहुवचन)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 32	58
15.	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा (एकवचन)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 34–35	63
16.	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा (बहुवचन)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 36	68
17.	आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा (एकवचन)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 38-39	73
18.	आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा (बहुवचन)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 40	78
19.	आवृत्ति	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 30-40	83
20.	भूतकालिक कृदन्त (कर्तृवाच्य)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 42	88
21.	वर्तमान कृदन्त	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 43	95
22.	भूतकालिक कृदन्त (भाववाच्य)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 45	102
23.	आवृत्ति	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 1–45	107
24.	अकर्मक क्रिया (भाववाच्य)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 47	110
25.	विधिकृदन्त (भाववाच्य)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 49	113

26.	आवृत्ति	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 42–49	116
27.	संज्ञा (द्वितीया—एकवचन, बहुवचन)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 51–52	119
28.	सकर्मक क्रिया	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 53	124
29.	संज्ञा (इ, ईकारान्त व उ, ऊकारान्त पु., नपुं., स्त्री.)	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 55–61	126
30.	संज्ञा	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 54–59	129
31.	संज्ञा, सकर्मक क्रिया	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 53–54	131
32.	कृदन्त, कर्मवाच्य, तृतीया	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 57–62	134
33.	विविध कृदन्त	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 64	138
34.	संज्ञा, चतुर्थी, षष्ठी— एकवचन, बहुवचन	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 66–69	139
35.	संज्ञा, पंचमी, सप्तमी— एकवचन, बहुवचन	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 71–77	141
36.	प्रेरणार्थक प्रत्यय	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 78	143
37.	स्वार्थिक प्रत्यय, विविध सर्वनाम, अव्यय	प्राकृत रचना सौरभ पाठ 79–81	146
38.	अनियमित कर्मवाच्य	—	148
39.	अनियमित भूतकालिक कृदन्त	—	151
40.	व्याकरणिक विश्लेषण-पद्धति	—	160

41.	प्राकृत कथा (कस्सेसा भज्जा)	—	164
42.	प्राकृत कथा (गामिल्लओ सागडिओ)	—	182
43.	प्राकृत कथा (ससुरगेहवासीणं चउजामायराणं कहा)	—	188
44.	प्राकृत कथा (विउसीए पुत्तबहूए कहाणगं)	—	196
45.	प्राकृत कथा (अमंगलिय पुरिसस्स कहा)	—	205
46.	प्राकृत कथा (गेहे सूरो)	—	208

परिशिष्ट—

	अंक-योजना	—	218
	मॉडल प्रश्नपत्र 1, 2, 3, 4	—	220
	शुद्धि पत्र	—	226

आरम्भिक

'प्राकृत अभ्यास सौरभ' पाठकों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

यह सर्वविदित है कि तीर्थंकर महावीर ने जनभाषा प्राकृत में उपदेश देकर सामान्यजनों के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त किया। भाषा संप्रेषण का सबल माध्यम होती है। उसका जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। जीवन के उच्चतम मूल्यों को जनभाषा में प्रस्तुत करना प्रजातान्त्रिक दृष्टि है।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी द्वारा संचालित 'जैनविद्या संस्थान' के अन्तर्गत 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' की स्थापना सन् 1988 में की गई। हमें यह लिखते हुए गौरवपूर्ण प्रसन्नता है कि प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी के सतत् सहयोग से डॉ. कमलचन्द सोगाणी ने नियमित कक्षाओं एवं पत्राचार की स्वनिर्मित योजना के माध्यम से अपभ्रंश व प्राकृत के अध्ययन-अध्यापन के द्वार खोलने का एक अनूठा कार्य किया है। अपभ्रंश डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्राकृत का अध्यापन मुख्यत: पत्राचार के माध्यम से किया जाता है। 'प्राकृत अभ्यास सौरभ' में पत्राचार के अभ्यासों का संकलन है। इस पुस्तक के प्रकाशन से अध्ययनार्थी प्राकृत भाषा को सीखने में अधिक समय दे सकेंगे और विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में लगाकर विद्यार्थियों को प्राकृत का अध्यापन सुविधापूर्वक करा सकेंगे।

'प्राकृत अभ्यास सौरभ' पुस्तक के लिए हम डॉ. कमलचन्द सोगाणी के आभारी हैं। पुस्तक-प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के कार्यकर्त्ता एवं मदरलैण्ड प्रिंटिंग प्रेस धन्यवादार्ह हैं।

बलभद्रकुमार जैन
संयुक्त मन्त्री

नरेशकुमार सेठी
अध्यक्ष

प्रबन्धकारिणी कमेटी,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी

प्रकाशकीय

प्राकृत भाषा भारतीय आर्यभाषा-परिवार की एक सुसमृद्ध लोक भाषा रही है। वैदिककाल से ही यह लोक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित रही है। इसका प्रकाशित-अप्रकाशित एवं लुप्त साहित्य इसकी गौरवमयी गाथा कहने में समर्थ है। भारतीय लोक-जीवन के बहुआयामी पक्ष, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक परम्पराएं प्राकृत साहित्य में निहित हैं। महावीर-युग और उसके बाद विभिन्न प्राकृतों का विकास हुआ, जिनमें से तीन प्रकार की प्राकृतों के नाम साहित्य क्षेत्र में गौरव के साथ लिये जाते हैं। वे हैं—अर्धमागधी, शौरसेनी और महाराष्ट्री। जैन आगम साहित्य एवं काव्य-साहित्य इन्हीं तीन प्राकृतों में गुम्फित है। महावीर की दार्शनिक-आध्यात्मिक परम्परा अर्ध-मागधी एवं शौरसेनी प्राकृत में रचित है और काव्यों की भाषा सामान्यत: महाराष्ट्री कही गई है। इन्हीं तीनों प्राकृतों का भारत के सांस्कृतिक इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान है। अत: इनका सीखना-सीखाना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी बात को ध्यान में रखकर 'प्राकृत रचना सौरभ' की रचना की गई थी। इसी क्रम में 'प्राकृत अभ्यास सौरभ' प्रकाशित है।

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा मुख्यत: पत्राचार के माध्यम से प्राकृत का अध्यापन किया जाता है। 'प्राकृत रचना सौरभ' पर आधारित अभ्यास हल करने के लिए अध्ययनार्थियों को भेजे जाते हैं। इस तरह से अध्ययनार्थी क्रम से प्राकृत व्याकरण रचना का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। किन्तु अभ्यासों को भेजने में बहुत समय खर्च हो जाता है और अध्ययनार्थियों को व्याकरण-रचना के अभ्यास के लिए कम समय मिल पाता है। अत: (1) इस कठिनाई को दूर करने के लिए सभी अभ्यासों को एक पुस्तक का रूप देकर 'प्राकृत अभ्यास सौरभ' पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। यह पुस्तक सभी अध्ययनार्थियों को प्रारम्भ से ही भेज दी जायेगी, और अध्ययनार्थी इन अभ्यासों को निर्दिष्ट योजनानुसार हल करके भेजते रहेंगे। जो समय अभ्यासों को भेजने में लग जाता था, वह प्राकृत भाषा को सीखने में लग सकेगा। (2)दूसरी कठिनाई और अनुभव की गई— कई विश्वविद्यालय प्राकृत भाषा सिखाने का कार्य प्रारम्भ करना चाहते हैं। उन विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' के पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना सुविधा-जनक नहीं होता है। वे विश्वविद्यालय इस पुस्तक को पाठ्यक्रम में लगाकर अध्यापन का कार्य अपने ही स्थान पर कर सकते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'प्राकृत अभ्यास सौरभ' से प्राकृत अध्ययन अध्यापन के कार्य को गति मिलेगी और 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' अपने उद्देश्यों की पूर्ति में द्रुतगति से अग्रसर हो सकेगी।

पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था के लिए जैनविद्या संस्थान समिति का आभारी हूँ। अकादमी के कार्यकर्ता एवं मदरलैण्ड प्रिंटिंग प्रेस धन्यवादार्ह हैं।

(डॉ. कमलचन्द सोगाणी)
संयोजक
जैनविद्या संस्थान समिति

अभ्यास-1

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. वह हँसता है। 2. वे दोनों नाचती हैं। 3. तुम छिपते हो। 4. मैं रूसता हूँ। 5. वे दोनों जागती हैं। 6. हम सब सोते हैं। 7. तुम सब जीते हो। 8. वे सब ठहरती हैं। 9. मैं नहाता हूँ। 10. वह होती है। 11. तुम दोनों हँसते हो। 12. हम सब नाचते हैं। 13. वे सब छिपते हैं। 14 तुम रूसते हो। 15. मैं जागता हूँ। 16. वह सोता है। 17 वे सब जीते हैं। 18. मैं ठहरता हूँ। 19. वे नहाती हैं। 20. तुम सब होते हो। 21. तुम नाचते हो। 22. वे सब हँसती हैं। 23. वह छिपती है। 24. वे सब रूसते हैं। 25. तुम जागते हो। 26. तुम सब सोते हो। 27. मैं जीता हूँ। 28 हम सब ठहरते हैं। 29 वह नहाती है। 30 वे दोनों होती हैं। 31. मैं हँसता हूँ। 32 तुम सब नाचती हो। 33. हम छिपते हैं। 34. वह रूसती है। 35 हम सब जागते हैं। 36. मैं सोता हूँ। 37. वह जीती है 38 तुम ठहरते हो। 39. हम दोनों नहाते हैं। 40. मैं होती हूँ। 41. तुम हँसते हो। 42. वह नाचता है। 43. मैं छिपती हूँ। 44 हम सब रूसते हैं। 45. तुम दोनों जागते हो। 46. वे सब सोती हैं। 47. हम दोनों जीते हैं। 48. वह ठहरती है। 49. तुम सब ठहरते हो। 50. तुम नहाते हो। 51. हम हँसते हैं। 52. मैं नाचती हूँ। 53. तुम दोनों छिपते हो। 54. तुम सब रूसते हो। 55. वह जागती है। 56. तुम सोते हो। 57. तुम जीते हो। 58. तुम दोनों ठहरते हो। 59 तुम दोनों नहाते हो। 60. हम सब होते हैं।

उदाहरण—

वह हँसता है=सो हसइ/हसए/हसदि/हसदे/हसेइ/हसेदि।

नोट—इस अभ्यास-1 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 1 से 8 का अध्ययन कीजिए।

(ख) प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 1 से 8 के पादटिप्पणों में दिए गए निम्न नियमों के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

पाठ 1—नियम (3) (अकारान्त क्रिया)

1. मैं रूसता हूँ। 2. मैं जागता हूँ। 3. मैं जीता हूँ। 4. मैं सोता हूँ। 5. मैं नाचती हूँ।

पाठ 2—नियम 1 (ii)

6. तुम छिपते हो। 7. तुम नाचते हो। 8. तुम रूसती हो। 9. तुम सोते हो। 10. तुम नहाते हो।

पाठ 3—नियम 1 (ii), (iii), **नियम 2** (iii)

11. वह सोता है। 12. वह होता है। 13. वह नाचता है। 14. वह जीता है। 15. वह हँसता है।

पाठ 8—नियम 6 (i), (ii), (iii)

16. हम सब नाचते हैं। 17. मैं नहाता हूँ। 18. वह जीती है। 19. वे सब ठहरती हैं। 20. तुम दोनों हँसते हो। 21. तुम रूसते हो। 22 तुम सब जीते हो। 23. वह होती है। 24. वे सब रूसते हैं। 25 वह नहाती है।

उदाहरण—

1. मैं रूसता हूँ=अहं/हं/अम्मि रूसं।

6. तुम छिपते हो=तुमं/तुं/तुमे लुक्कसि/लुक्कसे/लुक्केसि।

11. वह सोता है=स/से सयइ/सयति/सयेति।

16. हम सब नाचते हैं=अम्हे/वयं णच्चेज्ज/णच्चेज्जा।

(ग) निम्नलिखित क्रियाओं के वचन के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ····णच्चन्ति	2. ····जग्गेमि	3. ···सयम
4. ···रूसइ	5. ····ठामि	6. ····हससे
7. ····लुक्कध	8. ····ण्हाम	9. ····जीवं
10. ····जग्गसि	11. ····सयए	12. ····होमि

13. ····णच्चमो　14. ····रूसह　15. ····लुक्कन्ति
16. ····ण्हामो　17. ··· सयं　18. ····जीवसे
19. ··· लुक्केति　20. ··· ठाइ　21. ··· हसमु
22. ····जीवित्था　23. ····जग्गन्ते　24. ····ण्हामु
25. ····णच्चं　26. ··· रूसेसि　27. ····सयदि
28. ····जीवेदि　29. ··· होह　30. ····सयेज्ज
31. ····जग्गिरे　32. ····रूसमि　33. ····हसध
34. ··· लुक्केसि　35. ····णच्चसे　36. ····सयदे
37. ····जग्गेमो　38. ····रूसेध　39. ···जीवमु
40. ····हसन्ते　41. ····लुक्केइत्था　42. ··· ठासि
43. ····होम　44. ····रूसेज्जा　45. ····जीवेन्ति
46. ····ण्हाह　47. ····णच्चति　48. ····हसए
49. ····लुक्कमु　50. ····सयह　51. ····जग्गन्ति
52. ····होदि　53. ····णच्चन्ते　54. ··· ण्हाएज्जा
55. ····सयेति　56. ····ण्हाइत्था　57. ····रूसेन्ति
58. ····सयन्ते　59. ····ठादि　60. ··· जीवं
61. ····णच्चेमि　62. ····रूससे　63. ····णच्चइ
64. ····सयामि　65. ····सयेइ　66. ····जीवह
67. ····होएज्जा　68. ··· सयमो　69. ··· सयेन्ति

उदाहरण—
ता/ते णच्चन्ति　अहं/हं/अम्मि जग्गेमि　अम्हे/वयं सयम

(घ) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के वर्तमानकाल में क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे (हस)　2. तुमं (सय)　3 सो (णच्च)
4. अहं (रूस)　5. तुम्हे (लुक्क)　6. ते (जग्ग)
7. वयं (जीव)　8. सा (ण्हा)　9. ता (ठा)
10. तुज्झे (हो)　11. अम्हे (लुक्क)　12 ताओ (रूस)
13. हं (णच्च)　14. सो (जग्ग)　15. तुह (जीव)

16. अम्हे (ण्हा)	17. ता (हो)	18. तुब्भे (सय)
19. तुमे (लुक्क)	20. तुम्हे (रूस)	21 वयं (गच्च)
22. अम्मि (जग्ग)	23. सो (जीव)	24. तुं (ण्हा)
25. तुब्भे (हो)	26. ताउ (ठा)	27. तुज्झे (हस)
28. तुमे (ठा)	29. ते (सय)	30. सा (हस)

उदाहरण—

अम्हे हसमो/हसमु/हसम ।

(च) निम्नलिखित वर्तमानकालिक क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप एवं उनके प्रत्यय लिखिए—

1. गच्चन्ति	2. सयसि	3. रूसइ
4. जग्गं	5. सयित्था	6. णच्चति
7. रूसमि	8. लुक्कन्ति	9. हससे
10. ठादि	11. ण्हामु	12. सयसे
13. जीवह	14. रूसन्ते	15. जग्गेसि
16. जीवसे	17. लुक्कमि	18. हसेदि
19. होम	20. गच्चं	21. जीवति
22 ण्हामि	23. हसध	24. रूसन्ते
25. गच्चसि	26. होइत्था	27. लुक्किरे
28 होसि	29. ठामु	30. जग्गेमि
31. जीवए	32. णच्चए	33. जीवदे
34. रूसेति	35. लुक्कं	36. हसति

उदाहरण –

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय
1. णच्चन्ति	अन्यपुरुष	बहुवचन	णच्च	न्ति
4. जग्गं	उत्तमपुरुष	एकवचन	जग्ग	अनुस्वार

(छ) निम्नलिखित के सर्वनाम शब्द लिखिए—

1. उत्तम पुरुष प्रथमा बहुवचन	2. मध्यम पुरुष प्रथमा बहुवचन
3. अन्य पुरुष प्रथमा बहुवचन (पुल्लिग)	4 उत्तम पुरुष प्रथमा एकवचन
5. अन्य पुरुष प्रथमा एकवचन (पुल्लिग)	6. मध्यम पुरुष प्रथमा एकवचन
7. अन्य पुरुष प्रथमा बहुवचन (स्त्रीलिंग)	8 अन्य पुरुष प्रथमा एकवचन

उदाहरण—

उत्तम पुरुष प्रथमा बहुवचन अम्हे/वयं

(ज) निम्नलिखित सर्वनामों के पुरुष, विभक्ति, वचन एवं लिंग लिखिए—

1. अम्हे	2. ते	3. तुम्भे
4. वयं	5. तुमं	6. सो
7. अहं	8. तुज्झे	9. ताओ
10. सा	11. हं	12. तुह

उदाहरण—

	पुरुष	विभक्ति	वचन	लिंग
अम्हे	उत्तम पुरुष	प्रथमा	बहुवचन	तीनों लिंग

अभ्यास-2

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. वे दोनों नाचें। 2. हम सब सोवें। 3. वह हँसे। 4. तुम सब जीवो। 5. मैं रूसूं। 6. तुम छिपो। 7. वे दोनों जागें। 8. वे सब ठहरें। 9. वह होवे। 10. तुम दोनों हँसो। 11. हम सब नाचें। 12 मैं नहाऊँ। 13. तुम रूसो। 14. वे सब छिपें। 15. वह सोए। 16. मैं जागूँ। 17. वे सब जीवें। 18. वह नहावे। 19. मैं ठहरूं। 20. तुम सब होवो। 21. वे सब हँसें। 22. तुम नाचो। 23. वह छिपे। 24. तुम जागो। 25 वे सब रूसें। 26. मैं जीवूं। 27. तुम सब सोवो। 28. हम दोनों ठहरें। 29. वे सब होवें। 30. वे दोनों ठहरें। 31. मैं हँसूं। 32. तुम दोनों नाचो। 33. हम सब छिपें। 34. वह रूसे। 35. हम सब जागें। 36. मैं सोवूं। 37. वह जीवे। 38. तुम ठहरो। 39. हम सब नहावें। 40. मैं होऊँ। 41 वह नाचे। 42 तुम हँसो। 43. मैं छिपूं। 44. वे सब सोवें। 45. हम सब हँसें। 46. तुम दोनों जागो। 47. वे सब रूसें। 48. वह ठहरे। 49. तुम सब ठहरो। 50. तुम नहावो। 51. हम दोनों रूसें। 52. तुम सब छिपो। 53. मैं नाचूं। 54. तुम सब रूसो। 55 वह जागे। 56. तुम सोवो। 57. तुम जीवो। 58. तुम दोनों ठहरो। 59. तुम सब नहावो। 60. हम सब सोवें।

उदाहरण—
वे दोनों नाचें = ते/ता णच्चन्तु/णच्चेन्तु।

(ख) प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 9 से 16 के पादटिप्पणों में दिए गए निम्न नियमों के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

पाठ 9—नियम 3 (ii)

1. मैं जीवूं। 2. मैं हँसूं। 3. मैं छिपूं। 4. मैं जागूं। 5. मैं नाचूं।

नोट—इस अभ्यास-2 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 9 से 16 का अध्ययन कीजिए।

पाठ 10—नियम 2 (iii)

6. तुम जागो। 7. तुम रूसो। 8. तुम सोवो। 9. तुम जीवो। 10. तुम छिपो।

पाठ 11—नियम 2 (ii)

11. वह सोये। 12. वह रूसे। 13. वह छिपे। 14. वह जागे। 15. वह जीवे।

पाठ 12—**नियम** 2 (i)

16. मैं ठहरूं। 17. तुम होवो। 18. वह नहावे। 19. तुम ठहरो। 20. वह होवे।

पाठ 13—**नियम** 2 (ii)

21. हम दोनों जीवें। 22. हम सब छिपें। 23. हम दोनों नाचें। 24. हम सब जागें। 25. हम दोनों रूसें।

पाठ 14—**नियम** 2 (ii)

26. तुम दोनों छिपो। 27. तुम सब रूसो। 28. तुम दोनों जागो। 29. तुम सब जीवो। 30. तुम सब नाचो।

पाठ 15—**नियम** 2 (ii)

31. वे दोनों जागें। 32. वे सब जीवें। । 33. वे दोनों नाचें। 34. वे सब सोवें। 35. वे दोनों हँसें।

पाठ 16—**नियम** 6 (i)

36. हम सब ठहरें। 37. तुम सब होवो। 38. वे सब नहावें। 39. हम सब होवें। 40. वे सब ठहरें।

उदाहरण—

1. मैं जीवूं =अहं/हं/अम्मि जीवेज्जा/जीवेज्जामि।

6. तुम जागो =तुमं/तुं/तुमे जग्गेज्जा/जग्गेज्जासि/जग्गेजाहि।

11. वह सोये =सो/सा सये/सयेज्जा।

16. मैं ठहरूँ =अहं/हं/अम्मि ठाएज्जा/ठाएज्जामि।

21. हम दोनों जीवें =अम्हे/वयं जीवेज्जाम।

26. तुम दोनों छिपो =तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे लुक्केज्जाह।

31. वे दोनों जागें =ते/ता जग्गेज्जा।

36. हम सब ठहरें =अम्हे/वयं ठाएज्जाम।

(ग) निम्नलिखित क्रियाओं के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ····हसधि	2. ··· जग्गेउ	3. ··· होदु
4. ····सयमु	5. ····णच्चामो	6. ··· रूसह
7. ····जीवन्तु	8. ····हसेमु	9. ····लुक्केह
10. ····जग्गेज्जा	11. ····ठामु	12. ···णच्चेसु
13. ····सयेन्तु	14. ··· ण्हाएज्जाह	15. ····हसामो
16. ····रूसहि	17. ····जीवध	18. ··· होज्जाम
19. ····लुक्केमो	20. ····ण्हामु	21. ·· जग्गेज्जसु
22. ····सयेमु	23. ····जीवेहि	24. ····लुक्कउ
25. ····रूसे	26. ····ठादु	27. ··· जग्गेमो
28. ····सयह	29. ····णच्चन्तु	30. ····होज्जाह
31. ····सयमो	32. ····ठाह	33. ··· लुक्केध
34. ····ण्हाहि	35. ····ठाउ	36. ··· रूसामु
37. ····होसु	38. ····णच्चेदु	39. ···· जग्गन्तु
40. ····ण्हन्तु	41. ····सयेज्जामि	42. ····हसह
43. ····ण्हाह	44. ····जीवध	45. ····लुक्केमु
46. ····होमु	47. ····ठामो	48. ····णच्चेज्जहि
49. ····जग्गेज्जासि	50. ···सयेउ	51. ····जीवेज्जा
52. ····हससु	53. ····ण्हाउ	54. ····रूसेन्तु
55. ····लुक्केधि	56. ····ठाहि	57. ····ठामु
58. ····रूस	59. ··· होज्जा	60. ····सयेज्जाहि

61. ··· जग्गउ	62. ····होसु	63. ····ण्हाधि
64. ·· सयेसु	65. ····होमो	66. ····रूसमो
67. ·· जग्गिमु	68. ··· सयहि	69. ····होन्तु

उदाहरण—

तुम/तुं/तुह हसधि   सो/सा जग्गेउ   सो/सा होदु

(घ) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी हुई क्रिया के विधि एवं आज्ञा के रूप के सभी विकल्प लिखिए—

1. तुह (सय)	2. हं (रूस)	3. तुम्हे (लुक्क)
4. अम्हे (हस)	5. सो (णच्च)	6. वयं (जीव)
7. ते (जग्ग)	8. सा (ण्हा)	9. तुब्भे (हो)
10. ताओ (ठा)	11. तुज्झे (हस)	12. अम्हे (लुक्क)
13. तुं (सय)	14. अहं (णच्च)	15. ता (रूस)
16. सो (जग्ग)	17. तुमं (जीव)	18. अम्मि (ण्हा)
19. ता (णच्च)	20. तुमं (सय)	21. ते (लुक्क)
22. अम्हे (णच्च)	23. तुज्झे (रूस)	24. हं (जग्ग)
25. सो (जीव)	26. तुह (ण्हा)	27. अम्हे (हो)
28. ते (ठा)	29. तुब्भे (हस)	30. ताउ (णच्च)

उदाहरण—

तुह सयहि/सयसु/सयधि/सय/सयेज्जसु/सयेज्जहि/सयेज्जे।

(च) निम्नलिखित विधि एवं आज्ञा की क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप एवं प्रत्यय लिखिए—

1. जीवेमु	2. जग्गउ	3. सयहि
4. रूसामो	5. ठाहि	6. णच्चह
7. लुक्केन्तु	8. होज्जाह	9. हसेज्जा
10. ण्हासु	11. जग्गमो	12. सयेउ

13. लुक्क	14. णच्चेमो	15. रूसेज्जाहि
16. होउ	17. हसन्तु	18. जीवदु
19. सयेध	20. रूसेन्तु	21. लुक्केज्जासि
22. होज्जाम	23. ठामो	24. णच्चेहि
25. होह	26. ण्हाधि	27. हसमु
28. सयेज्जसु	29. ठान्तु→ठन्तु	30. जग्गेज्जे
31. होमु	32. हसहि	32. रूसेसु
34. होसु	35. लुक्केह	36. ण्हाएज्जामि

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय
जीवेमु	उत्तम पुरुष	एकवचन	जीव	मु

अभ्यास-3

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. वह हँसा। 2. वे दोनों नाचीं। 3. तुम छिपे। 4. मैं रूसा। 5. वे दोनों जागीं। 6. हम सब सोए। 7. तुम सब जीए। 8. वे सब ठहरीं। 9. मैं नहाया। 10 वह हुई। 11. तुम दोनों हँसे। 12. हम सब नाचे। 13. वे सब छिपे। 14. तुम रूसे। 15. मैं जागा। 16. वह सोया। 17. वे सब जीये। 18. मैं ठहरा। 19. वे सब नहाईं। 20. तुम सब हुए। 21. तुम नाचे। 22 वे सब हँसीं। 23. वह छिपी। 24. वे सब रूसीं। 25. तुम जागे। 26. तुम सब सोये। 27. मैं जीया। 28. हम सब ठहरे। 29. वह नहाई। 30. वे दोनों हुईं। 31. मैं हँसा। 32 तुम सब सोये। 33 हम सब छिपे। 34. वह रूसी। 35. हम सब जागे। 36 मैं सोया। 37. वह जीयी। 38. तुम ठहरे। 39. हम दोनों नहाये। 40 मैं हुई। 41. तुम हँसे। 42 वह नाचा। 43. मैं छिपी। 44. हम सब रूसे। 45. तुम दोनों जागे। 46. वे सब सोईं। 47. हम दोनों जीये। 48. वह ठहरी। 49. तुम सब ठहरे। 50. तुम नहाये। 51. हम सब हँसे। 52 मैं नाची। 53. तुम दोनों छिपे। 54. तुम सब रूसे। 55. वह जागी। 56. तुम सोये। 57. तुम जीये। 58. तुम दोनों ठहरे। 59. तुम दोनों नहाये। 60. तुम सब हुए।

उदाहरण—

1. वह हँसा = सो हसीअ।

8. वे सब ठहरीं = ता ठासी ठाही/ठाहीअ।

नोट—इस अभ्यास-3 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 17-18 का अध्ययन कीजिए।

(ख) प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 17–18 के पादटिप्पणों में दिए गए निम्न नियमों के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

पाठ 17—नियम 4

1. मैं हँसा। 2. तुम हँसे। 3. वह हँसा। 4. हम सब छिपे। 5. तुम सब जीये। 6. वे सब रूसे। 8. वह जागी। 9. वे सब नाचीं। 10. मैं सोया।

पाठ 18—नियम 4 (i)

11. मैं ठहरा। 12. हम सब हुए। 13. तुम नहाये। 14 तुम सब ठहरे। 15. वे सब नहाये।

उदाहरण —

1. मैं हँसा=अहं/हं/अम्मि हसित्था/हसिसु।

11. मैं ठहरा=अहं/हं/अम्मि ठाइत्था/ठाइंसु।

(ग) निम्नलिखित क्रियाओं के वचन के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ····णच्चीअ	2. ···रूसीअ	3. ····जीवीअ
4. ··· लुक्किकत्था	5. ····जग्गीअ	6. ····ठासी
7. ····सयित्था	8. ···ठाहीअ	9. ····होसी
10. ····ण्हाही	11. ····ण्हासी	12. ····होही
13. ····होइंसु	14. ····ण्हाहीअ	15. ····हसीअ
16. ···सयीअ	17. ··· होहीअ	18. ····लुक्कीअ

उदाहरण—

अहं/अम्हे/तुमं/तुम्हे/सो/ते णच्चीअ।

(घ) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के भूतकाल में क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे (हस)	2. तुमं (सय)	3. सो (णच्च)
4. अहं (रूस)	5. तुम्हे (लुक्क)	6. ते (जग्ग)
7. वयं (जीव)	8. सा (ण्हा)	9. ता (ठा)
10. तुब्भे (हो)	11. तुं (लुक्क)	12. हं (रूस)
13. ता (णच्च)	14. सा (जग्ग)	15. अम्मि (ण्हा)
16. तुह (जीव)	17. ते (हो)	18. तुज्झे (सय)
19. अम्मि (लुक्क)	20. तुम्हे (रूस)	21. अम्हे (णच्च)
22. अहं (जग्ग)	23. सो (जीव)	24. तुह (ण्हा)
25. वयं (हो)	26. ता (ठा)	27. तुब्भे (हस)
28. ते (सय	29. अम्मि (लुक्क)	30. तुमं (रूस)

उदाहरण—

1. अम्हे हसीअ/हसित्था/हसिसु ।

8. सा ण्हासी/ण्हाही/ण्हाहीअ/ण्हाइत्था/ण्हाइंसु ।

(च) निम्नलिखित भूतकालिक क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप एवं प्रत्यय लिखिए—

1. णच्चीअ	2. ठाही	3. हसित्था
4. रूसीअ	5. होही	6. लुक्कीअ
7. ण्हाहीअ	8. जग्गिसु	9. होइत्था
10. जीविसु	11. ठासी	12. ठाइत्था
13. सयीअ	14. ण्हाही	15. ण्हाइंसु

16. हसीअ	17. जग्गीअ	18. होसी
19. जीवीअ	20. ठाहीअ	21. ण्हासी

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय
णच्चीअ	उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष	एकवचन, बहुवचन	णच्च	ईअ

अभ्यास-4

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. तुम सब जीवोगे। 2. वे दोनों नाचेंगे। 3. हम सब सोयेंगे। 4. वह हँसेगा। 5. मैं रूसूंगा। 6 तुम छिपोगे। 7. वे दोनों जागेंगी। 8 वे सब ठहरेंगी। 9. वह होवेगा। 10. तुम दोनों हँसोगे। 11. हम सब नाचेंगे। 12. मैं नहाऊँगा। 13. तुम रूसोगे। 14. वे सब छिपेंगे। 15. वह सोयेगा। 16. मैं जागूँगा। 17. वे सब जीवेंगे। 18 वह नहावेगा। 19. मैं ठहरूँगा। 20. तुम सब होवोगे। 21. वे सब हँसेंगे। 22. तुम नाचोगे। 23. वह छिपेगा। 24. तुम जागोगे। 25. वे सब रूसेंगे। 26. मैं जीवूंगी। 27. तुम सब सोवोगे। 28. हम दोनों ठहरेंगे। 29. वे सब होवेंगे। 30. वे दोनों ठहरेंगे। 31. मैं हँसूंगा। 32. तुम दोनों नाचोगे। 33. हम सब छिपेंगे। 34. वह रूसेगा। 35. हम सब जागेंगे। 36. मैं सोवूंगा। 37. वह जीवेगा। 38. तुम देखोगे। 39. मै होऊँगी। 40. वह नाचेगा। 41. तुम हँसोगी। 42. मै छिपूंगी। 43. हम सब नहाएंगे। 44. वे सब सोवेंगे। 45. हम सब हँसेंगे। 46. तुम दोनों जागोगे। 47. वे सब रूसेंगे। 48. वह ठहरेगा। 49. तुम सब ठहरोगे। 50. तुम नहावोगे। 51. हम दोनों रूसेंगे। 52. तुम सब छिपोगे। 53. मै नाचूंगा। 5 तुम सब रूसोगे। 55. वह नाचेगा। 56. तुम सोवोगे। 57. तुम जीवोगे। 58. मै छिपूंगी। 59. तुम सब नहावोगे। 60. हम सब हँसेंगे।

उदाहरण –

तुम सब जीवोगे=तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे जीविहिह/जीविहिध/जीविहित्था/
जीविस्सह/जीविस्सध/जीविस्सइत्था/
जीविस्सिह/जीविस्सिध/जीचिस्सिइत्था।

नोट—इस अभ्यास-4 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 19 से 26 का अध्ययन कीजिए।

(ख) प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 19 से 26 तक के पादटिप्पणों में दिए गए निम्न नियमों के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

पाठ 19 नियम 3 (i) (ii) (iii)

1 मैं सुनूंगा । 2. मैं रोऊँगा । 3. मैं जाऊँगा । 4. मैं छोड़ूंगा । 5. मैं कहूँगी । 6. मैं छेदूँगा । 7. मैं जानूँगा । 8. मैं देखूँगा । 9. मैं दूंगा । 10. मैं करूँगा ।

पाठ 19 — नियम 4

11. मैं रोऊँगी । 12. मैं खाऊँगा । 13. मैं होऊँगा । 14. मैं देखूँगी । 15. मैं भेदूँगा ।

पाठ 20—नियम 5 (i) (ii)

16. तुम सुनोगे । 17. तुम रोओगे । 18. तुम जाओगे । 19. तुम छोड़ोगी । 20. तुम कहोगे ।

पाठ 21— नियम 5 (i) (ii)

21. वह सुनेगा । 22. वह रोएगा । 23. वह जाएगी । 24. वह छोड़ेगा । 25. वह कहेगा ।

पाठ 23— नियम 5, 6

26. हम सब सुनेंगे । 27. हम सब कहेंगे । 28. हम दोनों छेदेंगे । 29. हम सब जानेंगे । 30. हम सब देखेंगे ।

पाठ 24— नियम 5, 6

31. तुम सब सुनोगे । 32. तुम सब कहोगी । 33. तुम सब जाओगे । 34. तुम दोनों देखोगे । 35 तुम सब जानोगे ।

पाठ 25— नियम 5, 6

36. वे सब सुनेंगे । 37. वे सब कहेंगे । 38. वे दोनों जाएंगे । 39. वे सब छेदेंगे । 40. वे सब जानेंगी ।

उदाहरण—

1. मैं सुनूंगा=अहं/हं/अम्मि सोच्छं ।

11. मैं रोऊँगी=अहं/हं/अम्मि रोच्छामि ।

16. तुम सुनोगे=तुमं/तुं/तुह सोच्छिसि/सोच्छेसि/सोच्छसि ।

21. वह सुनेगा=सो सोच्छिइ/सोच्छेइ/सोच्छइ ।

26. हम सब सुनेंगे=अम्हे/वयं सोच्छिमो/सोच्छिमु/सोच्छिम/सोच्छेमो/सोच्छेमु/सोच्छेम/सोच्छामो ।

31. तुम सब सुनोगे=तुम्हे/तुब्भे/तुज्झे सोच्छिह/सोच्छिध/सोच्छेह/सोच्छेध/सोच्छह ।

36. वे सब सुनेंगे=ते सोच्छिन्ति/सोच्छिन्ते/सोच्छिइरे/सोच्छेन्ति,सोच्छेन्ते/सोच्छेइरे ।

(ग) **निम्नलिखित क्रियाओं के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम के सभी विकल्प लिखिए—**

1. ····जीविस्सन्ति	2. ····हसिहिसि	3. ··· सयिस्सिमु
4. ····जग्गिहिसे	5. ····रूसिस्सिसि	6. ····सयिस्सन्ते
7. ··· लुक्किहामो	8. ··· सयिस्सामु	9. ··· रूसिहिमो
10. ····णच्चिस्सिन्ति	11. ····ठास्सं	12. ····लुक्किस्सध
13. ····ण्हास्साम	14. ····जीविस्सामि	15. ····जग्गिस्सिसि
16. ···सयिस्सिदि	17. ····होहामि	18. ····णच्चिहामो
19. ····रूसिस्सह	20. ····लुक्किस्सन्ति	21. ····ण्हाहिमो
22. ····जीविस्ससे	23. ····लुक्किस्सइ	24. ····ठास्सिदि
25. ····हसिहिमु	26. ····जीविस्सइत्था	27. ····जग्गिस्सन्ते
28. ····ण्हाहामु	29. ····णच्चिस्सं	30. ····रूसिस्ससि
31. ····सयिस्सदि	32. ····जीविस्सदे	33. ····होस्सह
34. ····सयिहामो	35. ····जग्गिस्सिइरे	36. ····रूसिहामि
37. ····हसिस्सध	38. ····लुक्किस्ससि	39. ····णच्चिस्ससे
40. ····सयिस्सिदे	41. ····जग्गिस्सिम	42. ····रूसिहिध

43. ....जीविस्साम्ु	44. ....हसिहिन्ते	45. .... लुक्किस्सइत्था
46. ....ठास्ससि	47 ....होस्सिम	48. ....रूसिहिसे
49. .. जीविस्सन्ति	50. ....ण्हास्सह	51. ....णच्चिस्सइ
52. ... हसिस्सए	53 ....लुक्किस्सिमु	54. ....सयिस्सिह
55 ... जग्गिस्सिन्ति	56. ....होहिदि	57 ....णच्चिहिन्ते
58. ... ण्हाहिह	59. ....ठास्सदि	60. ....जीविस्सइ

उदाहरण—

ते/ता जीविस्सन्ति तुमं/तुं/तुह हसिहिसि अम्हे/वयं सयिस्सिमु ।

(घ) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के भविष्यत्काल में क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे (हस)	2. तुमं (सय)	3. सो (णच्च)
4. अहं (रूस)	5. तुम्हे (लुक्क)	6. ते (जग्ग)
7. वयं (जीव)	8. सा (ण्हा)	9. ता (ठा)
10. अम्हे (लुक्क)	11. हं (णच्च)	12. तुह (जीव)
13. ता (हो)	14. ते (लुक्क)	15. वयं (णच्च)
16. सो (जीव)	17. तुब्भे (हो)	18. तुज्झे (हस)
19. ते (सय)	20. तुज्झे (हो)	21. ताओ (रूस)
22. सो (जग्ग)	23. अम्हे (ण्हा)	24 तुब्भे (सय)
25. तुम्हे (रूस)	26. अम्मि (जग्ग)	27. तुं (ण्हा)
28. ताउ (ठा)	29. ते (ठा)	30. तुम्हे (हस)

उदाहरण—

अम्हे हसिहिमो/हसिहिमु/हसिहिम/हसिस्सामु/हसिस्सामो/हसिस्साम/हसिस्सिमो/हसिस्सिमु/हसिस्सिम/हसिहामो/हसिहामु/हसिहाम ।

(च) निम्नलिखित भविष्यत्कालिक क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप एवं प्रत्यय लिखिए—

1. णच्चिस्सिन्ति	2. सयिहिसि	3. रूसिस्सइ

4. जग्गिस्सामि	5. सयिस्सइत्था	6. जीविस्सए
7. रूसेस्सं	8. लुक्किहिन्ति	9 हसिस्ससे
10. ठास्सदि	11. ण्हाहामु	12 सयिस्ससे
13. जीविस्सिह	14. लुक्किस्सामो	15. जग्गिस्ससि
16. जीविस्सिसे	17. लुक्किस्साम	18. हसिस्सदि
19. होस्सिम	20. णच्चिस्सए	21. जीविस्सदे
22. ण्हास्सं	23. हसिस्सध	24. रूसिस्सन्ते
25. णच्चिस्ससि	26. होस्सिइत्था	27. लुक्किस्सइरे
28. होहिसि	29. ठाहामु	30. हसिस्सिन्ति

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मलरूप	प्रत्यय
णच्चिस्सिन्ति	अन्यपुरुष	बहुवचन	णच्च	स्सि + न्ति

अभ्यास-5

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. मैं प्रयास करता हूँ। 2. वह कलह करता है। 3. तुम थकते हो। 4. वे छटपटाते हैं। 5. तुम सब शरमाते हो। 6. हम सब गिरते हैं। 7. वे दोनों रोते हैं। 8. तुम दोनों डरते हो। 9. हम दोनों काँपते हैं। 10. मैं मरता हूँ। 11. वे लड़ते हैं। 12. वह मूर्च्छित होता है। 13. तुम कूदते हो। 14 हम सब प्रयास करते हैं। 15. वे दोनों खेलते हैं। 16. तुम सब उठते हो। 17. हम दोनों घूमते हैं। 18. वे सब उछलते हैं। 19. तुम सब खुश होती हो। 20. वह बैठती है। 21. मैं थकता हूँ। 22 वे सब लड़ती हैं। 23. हम सब डरते हैं। 24. तुम काँपती हो। 25. वे दोनों शरमाती हैं। 26. तुम दोनों प्रयास करते हो। 27. हम दोनों बैठते हैं। 28. तुम सब कलह करते हो। 29. हम सब मूर्च्छित होती हैं। 30. मैं छटपटाती हूँ। 31. तुम शरमावो। 32 मैं बैठूं। 33 वह डरे। 34. तुम दोनों उछलते हो। 35. हम दोनों खेलें। 36 वे दोनों उठें। 37. तुम सब उछलो। 38. हम सब घूमें। 39. वे सब कूदें। 40. तुम प्रयास करो। 41. वह थके। 42 मैं गिरूँ। 43. तुम सब छटपटाओ। 44. हम दोनों प्रयास करें। 45. वे सब खुश होवें। 46. तुम दोनों मूर्च्छित होवो। 47. वे दोनों काँपें। 48. हम सब मरें। 49. वह खेले। 50. तुम सब लड़ो। 51. वह बैठे। 52. तुम दोनों उठो। 53. मैं कूदूं। 54. हम सब खुश होवें। 55. तुम सब प्रयास करो। 56. वे दोनों उछलें। 57. हम दोनों उठते हैं। 58. तुम दोनों शरमावो। 59. वे सब डरें। 60. वह घूमे।

उदाहरण—

मैं प्रयास करता हूँ = अहं/हं/अम्मि उज्जममि/उज्जमामि/उज्जमेमि।

नोट—इस अभ्यास-5 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 27 का अध्ययन कीजिए।

(ख) **प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 1–26 के पादटिप्पणों के नियमों के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—**

1. मैं हँसता हूँ । 2. तुम जागते हो । 3. वह ठहरता है । 4. हम सब जीते हैं । 5. तुम सब रूसते हो । 6. वे सब जागती हैं। 7. मैं जागूं । 8 तुम सोवो। 9. वह छिपे । 10. हम सब नाचें । 11. तुम सब ठहरो । 12. वे सब जीवें । 13. मैं जागा । 14 तुम हँसे । 15. वह छिपा । 16. हम सब जीए । 17. तुम सब छिपे । 18. वे सब सोये । 19. मैं जाऊँगा । 20. तुम सुनोगे । 21. वह रोयेगा । 22. हम सब सुनेंगे । 23. तुम सब कहोगे । 24. वे सब जागेंगे । 25. मैं होता हूँ । 26. तुम नहाते हो । 27. हम सब होते हैं । 28 तुम सब ठहरते हो । 29. वे सब नहाते हैं । 31. हम सब ठहरें । 32. तुम सब नहावो । 33. मैं ठहरा । 34 तुम हुए 35. वह नहाया ।

उदाहरण

1. मैं हँसता हूँ = अहं/हं/अम्मि हसं ।

(ग) **निम्नलिखित क्रियाओं के वचन के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—**

1. ····लज्जमु	2. ··· रुवित्था	3. ··· डरन्ते
4. ···· कलहइ	5. ····थक्कदु	6. ··· अच्छिरे
7. ·· पडमु	8. ··· उट्ठध	9. ····तडफडसि
10 ··· घुमेइ	11. ·· ण्हासि	12. उच्छलन्ति
13 ··· उज्जममु	14. ·· उल्लसदि	15. ··· कंपए
16. ·· मरेमि	17 ··· खेलन्ते	18. ·· कुल्लमो
19. ··· जुज्झसे	20. ··· मुच्छेसि	21. लज्जधि
22. ··· अच्छेधि	23 ··· थक्कित्था	24. ····रुवमि
25. ····कलहहि	26. ··· डरेदि	27. ··· पडम
28. ····उट्ठन्ति	29. ··· तडफडमि	30 ····घुमेह
31. ··· मुच्छमु	32. ·· जुज्झेज्जहि	33. ···· कुल्लदे
34. ··· खेलमो	35. ····मरेध	36. ····कंपन्तु
37. ····उल्लसेमु	38. ··· उज्जमेज्जे	39. ··· उच्छलउ

40. ....ठावि	41. ... घुमेह	42. ....तडफडेन्तु
43. ....उट्ठेज्जसु	44 ... पडमु	45. ... अच्छेदु
46. ....थक्केज्जे	47. ....कलहह	48. ... डरन्तु
49. ....रुवेमो	50. .. लज्जहि	51. ....होमि
52. ....कलहेउ	53. ....जुज्झेह	54. ....उल्लसेन्तु
55. ....खेलेहि	56. ....डरामो	57. ....घुमसु
58. ....तडफडिमु	59. ... लज्जह	60. ... डरेसु

उदाहरण—

अहं/हं/अम्मि लज्जमु तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे रुवित्था ते/ता डरन्ते ।

(घ) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के वर्तमानकाल तथा विधि एवं आज्ञा में क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

वर्तमानकाल	विधि एवं आज्ञा
1. अम्हे (जुज्झ)	16. अम्हे (तडफड)
2. तुह (उच्छल)	17. ताउ (कलह)
3. सो (कुल्ल)	18. तुज्झे (घुम)
4. हं (रुव)	19. ते (डर)
5. तुम्हे (खेल)	20. तुं (उज्जम)
6. ते (डर)	21. सा (उज्जम)
7. वयं (लज्ज)	22. अहं (उल्लस)
8. सा (कलह)	23. तुज्झे (कप)
9. ता (पड)	24. अम्मि (कंप)
10. तुब्भे (थक्क)	25. अह (पड)
11. ताओ (तडफड)	26. ताओ (मुच्छ)
12. ता (अच्छ)	27. अम्मि (खेल)
13. हं (रुव)	28. ताउ (कुल्ल)
14. सो (उट्ठ)	29. तुब्भे (उच्छल)
15. तुह (मर)	30. तुमं (उल्लस)

उदाहरण—

1. अम्हे जुज्झमि/जुज्झामि, जुज्झेमि ।

16. अम्हे तडफडमो/तडफडामो/तडफडेमो ।

(च) निम्नलिखित क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप, प्रत्यय एवं काल वर्तमान (व) या विधि एवं आज्ञा (वि) लिखिए—

1. डरहि	2. कलहह	3. थक्कइ
4. अच्छेध	5. तडफडउ	6. मरमि
7. उच्छलसि	8. उल्लसमो	9. कंपेदु
10. खेलह	11. कुल्लामि	12. जुज्झन्ति
13. मुच्छेसि	14. लज्जमु	15. रुवदि
16. घुमन्तु	17. पढमु	18. उज्जमथि
19. लज्जसे	20. कुल्लदे	

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय	काल
डरहि	मध्यम पुरुष	एकवचन	डर	हि	वि

———

अभ्यास-6

(क) **निम्नलिखित वाक्यों को प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1 तुम दोनों खुश होवो। 2. वे सब रोते हैं। 3. मैं बैठता हूँ। 4. हम दोनों डरते हैं। 5. वह हँसता है। 6. तुम सब सोवो। 7. वे सब शरमाते हैं। 8. तुम छटपटाते हो। 9. मैं जागती हूँ। 10. हम सब ठहरें। 11. वह काँपती है। 12. तुम नहावो। 13. तुम सब नाचो। 14. हम दोनों मरते हैं। 15. वे दोनों मरते हैं। 16. तुम घूमो। 17. वह ठहरता है। 18. मैं रूसता हूँ। 19. हम सब प्रयास करें। 20. तुम सब खेलो। 21. वह छिपे। 22. वे सब जीते हैं। 23. तुम कूदते हो। 24. मैं उछलूं। 25. हम सब सोवें। 26. तुम दोनों थकते हो। 27. वह उठे। 28. वे दोनों कलह करते हैं। 29. मैं लड़ती हूँ। 30. हम दोनों मूर्च्छित होते हैं। 31. वह कलह करता है। 32. हम सब ठहरें। 33. तुम सब रोते हो। 34. वे सब बैठें। 35. हम दोनों जागें। 36. वे सब डरते हैं। 37. मैं हँसूं। 38. वह गिरता है। 39. तुम शरमाते हो। 40. तुम कूदो। 41. वे दोनों छटपटाते हैं। 42. मै नहाता हूँ। 43. तुम सब प्रयास करते हो। 44. तुम सब हँसो। 45. वह मरती है। 46. वे सब होवें। 47. वह नाचती है। 48. मै घूमता हूँ। 49. तुम प्रयास करो। 50. वह खेलती है। 51. तुम सब छिपो। 52. वे सब मूर्च्छित होते हैं। 53. वह खुश होवे। 54 तुम सब उठते हो। 55. मैं कूदूं। 56. वे सब लड़ती हैं। 57. हम दोनों जीवें। 58. तुम सब बैठो। 59. हम सब खुश होते हैं। 60. वे सब घूमें।

उदाहरण—

तुम दोनों खुश होवो=तुब्भे/तुम्हे/तुज्झे उल्लसह/उल्लसध/उल्लसेह/उल्लसेध/उल्लसेज्जाह।

नोट—इस अभ्यास-6 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 1 से 16 का अध्ययन कीजिए।

(ख) प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 1 से 16 तक के पादटिप्पणों के नियमों के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

1. तुम छिपते हो । 2. मैं जागता हूँ । 3. वह हँसता है । 4. हम सब ठहरते हैं । 5. तुम सब नहाते हो । 6. वे सब होती हैं । 7. मैं हँसूं । 8. तुम जागो । 9. वह रूसे । 10. हम सब छिपें । 11. वे सब होवें ।

उदाहरण—

तुम छिपते हो = तुमं/तुं/तुमे लुक्कसि/लुक्कसे/लुक्केसि ।

(ग) निम्नलिखित क्रियाओं के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ....हसामो	2. ....कुल्लहि	3. ....णच्चमु
4. ....लज्जह	5. ....उट्ठेन्तु	6. ....ठामु
7. ....खेलइ	8. ....उल्लसेह	9. ....रुवउ
10. ....जीवसि	11. ....होम	12. ....अच्छदे
13. ....डरमि	14. ....ण्हाहि	15. ....मुच्छन्ति
16. ....जग्गित्था	17. ....कलहन्ति	18. .... घुम
19. ....उच्छलामि	20. ....सयमु	21. ....लुक्कह
22. ....जुज्झध	23. ....उज्जमेन्तु	24. ....तडफडसे
25. ....थक्कमो	26. .... पडेमि	27. ....मरसि
28. ....कंपेइ	29. ....रूससु	30. ....मरन्ते
31. ....सयेसु	32. ....कुल्लेउ	33. ....हसेमु
34. ....ठाइ	35 ....जग्गमु	36. ....णच्चेज्जसु
37. ....लज्जदि	38. ....उट्ठह	39. ....होउ
40. ....खेल	41. ....पडए	42. ....अच्छन्तु
43. ....उल्लसमि	44. ....तडफडेइ	45. ....कंपह
46. ....जुज्झिरे	47. ....उज्जम	48. ....उल्लसदु
49. ....ण्हामि	50. ....उच्छलेदु	51. ....जीवह
52. ....लुक्कमु	53. ....थक्कहि	54. ....डरेन्तु

55. ....घुमेमो	56. ....मुच्छसि	57. ....कलहघ
58. ....ठादु	59. ....हसेसु	60. ....रूसेमो

उदाहरण—

अम्हे/वयं हसामो   तुमं/तुं/तुह कुल्लहि   अहं/हं/अम्मि णच्चमु ।

(घ) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं के वर्तमानकाल (व) तथा विधि एवं आज्ञा (वि) में क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए–

वर्तमानकाल	विधि एवं आज्ञा
1. अम्हे (हस)	16. सो (रुव)
2. सो (कुल्ल)	17. अहं (लुक्क)
3. तुह (उज्जम)	18. तुज्झे (हो)
4. ते (उल्लस)	19. अम्हे (खेल)
5. हं (कंप)	20. तुह (ण्हा)
6. तुम्हे (जीव)	21. ते (घुम)
7. तुब्भे (ठा)	22. ताओ (रूस)
8. सा (णच्च)	23. सो (मर)
9. अम्हे (उल्लस)	24. वयं (जग्ग)
10. ता (लज्ज)	25. ताउ (डर)
11. सो (तडफड)	26. तुमं (थक्क)
12. तुं (सय)	27. ते (अच्छ)
13. तुज्झे (कलह)	28. तुम्हे (पड)
14. ते (उच्छल)	29. अम्मि (जुज्झ)
15. सा (उट्ठ)	30. तुं (मुच्छ)

उदाहरण—

1. अम्हे हसमो/हसमु/हसम ।   16. सो रुवउ/रुवेउ/रुवदु/रुवेदु ।

(च) निम्नलिखित क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप, प्रत्यय एवं काल वर्तमान (व) या विधि एवं आज्ञा (वि) लिखिए—

1. हसह	2. अच्छहि	3. लज्जइ
4. घुमामि	5. उट्ठ	6. खेलध
7. उल्लसेन्तु	8. लज्जमो	9. लुक्कसु
10. जीवसु	11. पडमि	12. जग्गदु
13. जुज्झदि	14. ठासु	15. रूसेमि
16. कंपसि	17. तडफडए	18. सयेह
19. उज्जमेमु	20. मुच्छेसि	21. कुल्लेमो
22. उच्छलित्था	23. णच्चन्ति	24. ण्हाइरे
25. होम	26. रुवन्ते	27. लुक्कधि
28. तडफडेह	29. णच्चमु	30. लज्जउ

उदाहरण —

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय	काल
हसह	मध्यम पुरुष	बहुवचन	हस	ह	वि

अभ्यास-7

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. तुम नाचोगे। 2. वह ठहरेगा। 3. तुम सब सोवोगे। 4. वह हँसेगी। 5. हम सब जागेंगे। 6. मैं जीवूंगा। 7. वे सब ठहरेंगी। 8. तुम सब होवोगे। 9. तुम रूसोगे। 10. हम सब नहावेंगे। 11. तुम दोनों जीवोगे। 12. वह छिपेगा। 13. हम सब सोयेंगे। 14. वे सब हँसेंगे। 15. वह जागेगी। 16. हम शरमायेंगे। 17. वे लड़ेंगे। 18. तुम खेलोगी। 19. वह उठेगी। 20. वे सब खुश होंगे। 21. वह घूमेगी। 22. वह छटपटावेगा। 23. वे सब रोवेंगे। 24. वे दोनों कांपेंगे। 25. वह मरेगा। 26. तुम बैठोगे। 27. तुम सब गिरोगे। 28. वे सब कूदेंगे। 29. वह खुश होगा। 30. तुम सब प्रयास करोगे।

उदाहरण—
तुम नाचोगे = तुमं/तुं/तुह णच्चिहिसि/णच्चिहिसे/णच्चिस्ससि/णच्चिस्ससे/
णच्चिस्सिसि/णच्चिस्सिसे।

(ख) प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 19 से 26 के पादटिप्पणों के नियमों के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

1. मैं रोऊँगा। 2. तुम खाओगे। 3. वह जाएगा। 4. हम सब कहेंगे। 5. तुम सब सुनोगे। 6. वे सब जानेंगे।

उदाहरण—
मैं रोऊंगा = अहं/हं/अम्मि रोच्छं।

नोट—इस अभ्यास-7 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 19 से 26 का अध्ययन कीजिए।

(ग) निम्नलिखित क्रियाओं के वचन के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. .... हसिस्ससि	2. .... लज्जिजस्सिम	3. ....खेलिस्सिदि
4. .... जीविस्सामि	5. ....डरिस्सह	6. .... जग्गिस्सन्ते
7. ....उच्छलिस्सिसे	8. .... जुज्झिस्सामो	9. ....थक्किस्सिदे
10. ....कंपिहिमि	11. ....सयिस्सिह	12. ....ठास्सन्ति
13. ....लज्जिहिसि	14. ....खेलिस्सामु	15. ....हसिहिन्ति
16. ....जुज्झिहामि	17. ....ण्हास्सिदि	18. ....लुक्किस्सिइरे
19. ....घुमिहिसे	20. .... उल्लसिस्समि	21. ....कुल्लिहिदि
22. .... उट्ठिस्सिमि	23. ....उल्लसिस्सिइत्था	24. ....होहिन्ते
25. ....ण्हास्सिसि	26. ....कलहिहिमु	27. ....सयिस्सइ
28. ....उज्जमिस्सं	29. .... पडिस्सिध	30. ....रूसिहिन्ति
31. ....कुल्लिस्सिसि	32. .... जग्गिस्ससि	33. ....उट्ठिहामो
34. .... पडिस्सए	35. ....तडफडिस्सिमि	36. ....उज्जमिस्सं
37 ....उच्छलिस्सइ	38. ....थक्किहिसे	39. ....मुच्छिस्सिम
40. ....हसिहिन्ति	41. ....णच्चिहिह	42. ....ठाहिसि
43. ....रुविहिमो	44. ....अच्छिहिइ	45. ....मुच्छिस्सिम
46. ....घुमिस्सिध	47. .... तडफडिस्सिसे	48 ....मरिहिहि
49. ....मरिहिमु	50. .... हसिस्सिदि	51. .... णच्चिस्सामि
52. .... होहिन्ति	53. ....अच्छिस्सइत्था	54. .... कंपिस्ससि
55. ....उल्लसिहिम	56. ....जीविहिदे	57. ....डरिहामि
58. ....कलहिस्सइ	57. .... रूसिहिन्ति	60. .... ण्हास्सामि

उदाहरण—

तुमं/तुं/तुह हसिस्ससि अम्हे/वयं लज्जिजस्सिम सो/सा खेलिस्सिदि ।

(घ) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के भविष्यत्काल में क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे (हस)	2. सो (कुल्ल)	3. तुह (उज्जम)
4. ते (लज्ज)	5. हं (कंप)	6. तुब्भे (जीव)
7. तुम्हे (ठा)	8. सा (णच्च)	9. वयं (उल्लस)
10. ताओ (लज्ज)	11. सो (तडफड)	12. तुं (सय)
13. तुज्झे (कलह)	14. ते (उच्छल)	15. सा (उट्ठ)
16. सो (रुव)	17. अहं (लुक्क)	18. तुम्हे (हो)
19. अम्हे (खेल)	20. तुमं (ण्हा)	21. ते (घुम)
22. ताउ (रूस)	23. सो (मर)	24. अम्हे (जग्ग)
25. सा (डर)	26. तुह (थक्क)	27. ते (अच्छ)
28. तुज्झे (पड)	29. अम्मि (जुज्झ)	30. तुमं (मुच्छ)

उदाहरण—

अम्हे हसिहिमो/हसिहिमु/हसिहिम/हसिस्सामो/हसिस्सामु/हसिस्साम/हसिस्सिमो/ हसिस्सिमु/हसिस्सिम/हसिहामो/हसिहाम/हसिहामु ।

(च) निम्नलिखित क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप एवं प्रत्यय लिखिए—

1. घुमिस्सामि	2. लज्जिस्सइ	3. उल्लसिस्सन्ति
4. हसिस्सामु	5. अच्छिस्सिसि	6 उट्ठिस्सह
7. लुक्किस्ससि	8. खेलिस्सं	9. जीविस्सए
10. पडिहिमि	11. जग्गिस्सध	12. जुज्झिहिन्ति
13. ठास्ससि	14. रूसिस्सामो	15. कंपिस्सिन्ते
16. तडफडिहिए	17. सयिस्सइत्था	18. उज्जमिस्सिमु
19. मुच्छिहिह	20. कुल्लिहामि	21. उच्छलिहित्था

22. णच्चिस्सन्ति	23. ण्हास्सह	24. होस्सामि
25. रुविहिमो	26. लुक्किहित्था	27. डरिहिम
28 कलहिहिसि	29. ण्हास्सामि	30. ठाहिइ

उदाहरण –

	पुरुष	**वचन**	**मूलरूप**	**प्रत्यय**
घुमिस्सामि	उत्तमपुरुष	एकवचन	घुम	स्सा+मि

————

अभ्यास-8

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनामों एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. मैं हँसूं। 2. मैं कूदता हूँ। 3. मैं प्रयास करूँगा। 4. तुम दोनों बैठो। 5. तुम सब कांपते हो। 6. तुम सब जीवोगे। 7. वह ठहरा। 8. वह नाचती है। 9. वह खुश होवेगा। 10. हम सब सोये। 11. हम सब शरमाते हैं। 12. हम सब छिपेंगे। 13. तुम उछलो। 14. तुम छटपटाते हो। 15. तुम कलह करते हो। 16. वे सब उठे। 17. वे सब रोती हैं।। 18. वे सब होवेंगे। 19. मैं खेला। 20. मैं घूमूंगी। 21. तुम सब जागो। 22. मैं नहाता हूँ। 23. तुम सब रूसते हो। 24. तुम सब मरोगे। 25. वह जागा। 26. वह डरती है। 27. वह थका। 28. हम सब बैठें। 29 हम सब गिरते हैं। 30 हम सब मूर्च्छित होते हैं। 31. मैं हँसूंगी। 32. मैं कूदूं। 33. तुम सब बैठोगे। 34. वे सब कांपते हैं। 35 वह जीवे। 36. तुम ठहरो। 37. वे सब नाचें। 38 तुम सब खुश होवो। 39. हम सब सोयेंगे। 40. वे सब शरमायेंगे। 41. मैं छिपूं। 42. वह तड़फड़ाता है। 43. वे दोनों कलह करते हैं। 44. तुम उठो। 45. वह रोती है। 46. हम सब होवेंगे। 47. तुम सब खेलो। 48. वे सब नहावें। 49. मैं घूमूं। 50. तुम जागते हो। 51. वह रूसी। 52. वे दोनों मरते हैं। 53. मैं बैठूंगा। 54. तुम सब थकते हो। 55. मैं डरूँगी। 56. वे सब गिरे। 57. वह मूर्च्छित होती है। 58. तुम प्रयास करो। 59 वह नाचेगा। 60 हम दोनों प्रयास करेंगे।

उदाहरण —

मैं हँसूं = अहं/हं/अम्मि हसमु/हसामु/हसिमु/हसेमु।

नोट —इस अभ्यास-8 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 1 से 27 का अध्ययन कीजिए।

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के वचन के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ····होस्सन्ति	2. ····कलहसे	3. ····लुक्किस्सिमो
4. ····उल्लसिस्सइ	5. ····जीविस्सिह	6. ····उज्जमिस्सामि
7. ····रुवन्ति	8. ····तडफडसि	9. ····लज्जमो
10. ··· णच्चं	11. ··· कंपह	12. ····कुल्लेदि
13. ····उट्ठन्तु	14. ····उच्छलेज्जाम	15. ····सयमो
16. ··· ठाउ	17. ··· अच्छइ	18. ··· हसमु
19. ····उल्लसेह	20. ··· णच्चेन्तु	21. ····ठाहीअ
22. ··· जीवेउ	23. ····कपन्ति	24. ····अच्छिस्सथ
25. ····कुल्लेज्जामि	26. ····हसिस्सामि	27. ··· मुच्छमो
28. ····थक्किस्सए	29. ····मरिस्सइत्था	30. ····घुमेज्जाहि
31. ····पडिस्सम	32. ··· डरेइ	33. ····रूसित्था
34. ····ण्हामि	35. ····अच्छेज्जा	36. ····जग्गेउ
37. ····जग्गीअ	38. ··· खेलमु	39. ····उज्जमिस्सामो
40. ····णच्चिहिइ	41. ····मुच्छए	42. ····उज्जमेज्जसु
43. ····पडन्ते	44. ···· अच्छिहिमि	45. ··· थक्कित्था
46. ····डरेज्जासि	47. ··· मरिरे	48. ····रूसए
49. ····घुमसु	50. ····ण्हाएज्जाह	51. ··· खेलह
52. ····होएज्जा	53. ····रुवेइ	54. ····उज्जमेथि
55. ····उट्ठेति	56. ····कलहन्ते	57. ··· तडफडए
58. ····लुक्केमु	59. ····लज्जिस्सन्ति	60. ··· सयिस्सिम
61. ····णच्चइ	62. ····उट्ठ	63. ··· अच्छामो
64. ····होहिम	65. ····डरिहिम	66. ····घुमिस्सं
67. ····ण्हन्तु	68. ····उच्छल	69. ····कुल्लेमु

उदाहरण—

ते/ता होस्सन्ति तुमं/तुं/तुमे कलहसे अम्हे/वयं लुक्किस्सिमो।

(ग) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी हुई क्रिया के वर्तमानकाल (व), भूतकाल (भू), विधि एवं आज्ञा (वि) तथा भविष्यत् (भ) काल में क्रिया के सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे [हस (व)]
2. तुमं [मुच्छ (भ)]
3. हं [जुज्झ (वि)]
4. तुब्भे [पड (वि)]
5. ते [अच्छ (वि)]
6 तुं [थक्क (भ)]
7. सा [डर (व)]
8. अम्हे [जग्ग (वि)]
9. सो [मर (भू)]
10. ताओ [रूस (व)]
11. ते [घुम (वि)]
12. तुह [ण्हा (भू)]
13. अम्हे [खेल (व)]
14. तुम्हे [हो (वि)]
15. अहं [लुक्क (भ)]
16. सो [रुव (व)]
17. सा [उड्ड (वि)]
18. ताउ [उच्छल (भ)]
19. तुम्हे [कलह (व)]
20. तुह [सय (वि)]
21. सो [तडफड (भ)]
22. ताउ [लज्ज (व)]
23. वयं [उल्लस (वि)]
24. ता [णच्च (भू)]
25. तुज्झे [ठा (व)]
26. तुम्हे [जीव (वि)]
27. अम्मि [कंप (भ)]
28. हं [ण्हा (भू)]
29. तुह [उज्जम (वि)]
30. सो [कुल्ल (भ)]

उदाहरण—

अम्हे हसमो/हसमु/हसम ।

(घ) निम्नलिखित क्रियाओं के पुरुष, वचन, मूलरूप, प्रत्यय एवं वर्तमानकाल (व) या विधि एवं आज्ञा (वि), भविष्यत्काल (भ) या भूतकाल (भू) लिखिए—

1. कुल्लमो
2. मुच्छेसि
3. उज्जमिस्ससि
4. सयेह
5. तडफडए
6. कंपिस्सिह
7. रूसेमि
8. ठासी
9. ण्हाएज्जाह
10. जग्गिस्सध
11. पडेज्जाहि
12. जीविस्सइ
13. लुक्केहि
14. लज्जमो
15. उल्लसिस्ससे

16. उट्ठेज्जासि	17. खलह	18. घुमिस्सामि'
19 होएज्जा	20. लज्जीग्र	21. हसिस्सन्ति
22. लज्जउ	23. णच्चन्ति	24. ण्हाहिह
25. होहि	26. रुवन्ते	27. लुक्किकहामो
28. तडफडेइ	29. णच्चिहिन्ति	30. लज्जसे
31. पडमि	32. उट्ठ	33. कुल्लेज्जामि
34. ग्रच्छसि	35. जुज्झिस्समो	36. हसेज्जाम

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलरूप	प्रत्यय	काल
कुल्लमो	उत्तमपुरुष	बहुवचन	कुल्ल	मो	वर्तमानकाल

अभ्यास-9

(क) निम्नलिखित वर्तमानकालिक वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए—

1. सर्वनाम के अनुरूप क्रिया का शुद्ध रूप लगाइए।

2. क्रिया के अनुरूप सर्वनाम का शुद्ध रूप लगाइए।

1. अहं लुक्कसि। 2. तुमं णच्चमि। 3. सो हसेसि। 4. अम्हे हसदि। 5. तुम्हे थक्कन्ति। 6. ते लज्जमो। 7. ता पडध। 8. तुब्भे घुमन्ति। 9. वयं ठाइ। 10. ते मरइ। 11. सो खेलन्ति। 12. तुह पडित्था। 13. तुज्झे उच्छलदे। 14. हं कंपित्था। 15. अम्मि कुल्लन्ति। 16. तुह मुच्छेइ। 17. तुम्हे ण्हामु। 18. अम्हे होसि। 19. ता उट्ठइ। 20. तुह मरन्ते।

उदाहरण—

अहं लुक्कसि = अहं लुक्कमि/लुक्कामि/लुक्केमि।

तुहं/तुं/तुह लुक्कसि/लुक्कसे/लुक्केसि।

(ख) निम्नलिखित विधि एवं आज्ञावाचक वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए—

1. सर्वनाम के अनुरूप क्रिया का शुद्ध रूप लगाइए।

2. क्रिया के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम का शुद्ध रूप लगाइए।

1. हं पडउ। 2. तुह रुवमो। 3. सो थक्कधि। 4 अम्हे डरन्तु। 5. तुम्हे कंपमु। 6. तुं मुच्छदु। 7. सा कुल्लह। 8. अहं जुज्झेन्तु। 9. तुब्भे डरामो। 10. हं तडफड। 11. ते अच्छउ। 12. सो उट्टह। 13. ता खेलध। 14. हं ण्हाधि। 15. तुमं कुल्लदु। 16. ते रुवउ। 17. अम्मि उल्लस। 18. सो कलहसु। 19. तुब्भे अच्छेज्जसु। 20. अम्मि लज्जसु।

नोट—इस अभ्यास-9 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 1 से 27 का अध्ययन कीजिए।

उदाहरण—

हं पडउ = हं पडमु/पडामु/पडिमु/पडेमु ।
सो/सा पडउ ।

(ग) निम्नलिखित भविष्यत्कालिक वाक्यों को दो प्रकार से शुद्ध कीजिए—

1. सर्वनाम के अनुरूप क्रिया का शुद्ध रूप लगाइए ।

2. क्रिया के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम का शुद्ध रूप लगाइए ।

1. तुह उट्ठिस्सं । 2. हं पडिहिसि । 3. सा कंपिहिमि । 4. अहं लज्जिस्सिमो । 5. तुं हसिहिह । 6. तुम्हे डरिहिमु । 7. अम्हे खेलिस्सध । 8. तुब्भे मुच्छिस्सदे । 9. ता ण्हाहिदि । 10. तुमं मरिहिम । 11. तुं कुल्लिस्सिमो । 12. अम्मि जुज्झिस्सइत्था । 13. हं खेलिहिह । 14. ताओ ण्हाहिध । 15. ताउ उज्जमिहिध । 16. वयं जग्गिस्सिह । 17. सो रूसिस्सिइरे । 18 ते ण्हाहिमि । 19. तुज्झे मुच्छिहिन्ति । 20. हं घुमिस्सिमु ।

उदाहरण—

तुह उट्ठिस्सं = तुह उट्ठिहिसि/उट्ठिहिसे/उट्ठिस्ससि/उट्ठिस्ससे/उट्ठिस्सिसि/उट्ठिस्सिसे।
अहं/हं/अम्मि उट्ठिस्सं ।

(घ) निम्नलिखित क्रियाओं के वचन के अनुरूप पुरुषवाचक सर्वनाम लिखिए—

1. ····थक्कमि	2. ··· डरमो	3. ····पडमु
4. ··· उट्ठ	5. ····कलहसे	6. ··· मुच्छहि
7. ··· अच्छध	8. ··· मुच्छिहिह	9. ··· होमु
10. ··· कुल्लउ	11. ····जुज्झदु	12. ····उज्जमन्तु
13. ··· कंपसि	14. ·· उल्लसेइ	15. ····उच्छलए
16. ····लज्जीअ	17. ··· मरिहिमि	18. ····जुज्झिस्सिदे
19. ····जग्गिस्सध	20. ··· ठाहिध	21. ··· उल्लस
22 ··· जग्गहि	23. ····ण्हादि	24. ····मुच्छिहिन्ति

25. ... ण्हाही	26. ... खेलिस्सिसि	27. ... उट्ठिहिमो
28. ... सयन्तु	29. ....लज्जिस्सइत्था	30. ....उज्जमेज्जसु

उदाहरण—

अहं/हं/अम्मि थक्कमि अम्हे/वयं डरमो अहं/हं/अम्मि पडमु ।

(च) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के अनुरूप कोष्ठक में दी हुई क्रिया के वर्तमान (व), भूतकाल (भू), विधि एवं आज्ञा (वि) तथा भविष्यत् (भ) काल में क्रिया के सभी विकल्प लिखिए—

1. हं [कुल्ल (व)]	2. अम्हे [खेल (भ)]
3. तुम्हे [उट्ठ (वि)]	4. अहं [अच्छ (भू)]
5. तुब्भे [मुच्छ (भू)]	6. तुज्झे [हस (भ)]
7. सा [लज्ज (भू)]	8. अम्मि [डर (भ)]
9. अहं [उल्लस (व)]	10. ते [जुज्झ (भ)]

उदाहरण—

हं कुल्लमि/कुल्लामि/कुल्लेमि ।

अभ्यास-10

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनाम, सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1 वह रोकर सोता है। 2. तुम उछलकर कूदो। 3. मैं खेलकर खुश होऊंगी। 4. वे कलह करके छिपते हैं। 5. वह नाचकर थकी। 6 हम डरकर रोते हैं। 7 वे सब कांपकर मरते हैं। 8 तुम गिरकर उठते हो। 9. मैं हँसकर जीती हूँ। 10. वह छटपटाकर मरी। 11. वे दोनों कूदकर मरती हैं। 12. तुम दोनों लड़कर रोते हो। 13. वह शरमाकर नाचती है। 14. तुम घूमकर सोवो। 15. हम सब थककर सोयें। 16. वे प्रयास करके उछलेंगे। 17 मैं सोकर उठूंगी। 18 वह लड़कर गिरता है। 19. तुम सब खुश होकर खेलो। 20. वह रोकर मूच्छित होती है। 21 वे दोनों बैठकर उठेंगे। 22. मैं खुश होकर घूमूंगी। 23. वह मूच्छित होकर मरती है। 24. तुम ठहरकर बैठो। 25 वे सब जीकर खुश होती हैं। 26, वह नहाकर सोवे। 27 तुम खुश होकर खेलो। 28. वह छिपकर रोती है। 29. तुम हँसकर जीवो। 30. वह प्रयासकर नाचता है।

उदाहरण—

वह रोकर सोता है = सो रुविऊण/रुविऊणं/रुविदूण/रुविदूणं/रुविअ/रुविउं/
रुवित्ता सयइ/सयए/सयदि/सयदे।

(ख) **प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 28 के पादटिप्पणियों में से दिए गए निम्न नियम के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—**

नियम 6

1. वह थककर सोया। 2. वह लड़कर गिरा। 3. मैं सोकर उठी। 4. तुम सब खेलकर थकोगे। 5. हम सब जीकर खुश होते हैं।

नोट—इस अभ्यास-10 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 28 का अध्ययन कीजिए।

उदाहरण—

सो थक्कित्ताण/थक्कित्ताणं/थक्काय/थक्काए/थक्कियाण/थक्कियाणं/थक्कित्तु सयीअ ।

(ग) निम्नलिखित सम्बन्धक भूतकृदन्तों का प्रयोग करते हुए प्राकृत में वाक्य बनाइए। इच्छानुसार पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते हुए उसके अनरूप कोष्ठकों में दी हुई क्रियाओं के निर्देशानुसार कालों के सभी विकल्प लिखिए—

1. हसिऊण (जीव) वर्तमानकाल
2. उट्ठिदूण (खेल) विधि एवं आज्ञा
3. जुज्झिऊणं (मर) भविष्यत्काल
4. उच्छलिअ (कुल्ल) विधि एवं आज्ञा
5. लुक्किउं (रुव) वर्तमानकाल
6. उज्जमित्ता (उच्छल) भविष्यत्काल
7. घुमिऊण (सय) विधि एवं आज्ञा
8. कलहिदूण (लुक्क) वर्तमानकाल
9. डरिअ (रुव) वर्तमानकाल
10. उल्लसित्ता (खेल) विधि एवं आज्ञा
11. सयिदूणं (उट्ठ) भविष्यत्काल
12. ण्हाउं (सय) विधि एवं आज्ञा
13. रुवित्ता (मुच्छ) वर्तमानकाल
14. ठादूण (अच्छ) विधि एवं आज्ञा
15. खेलिऊण (उल्लस) वर्तमानकाल
16. पडिअ (रुव) वर्तमानकाल
17. तडफडिऊण (मर) भविष्यत्काल
18. थक्किउं (सय) विधि एवं आज्ञा
19. जीवित्ता (उल्लस) वर्तमानकाल
20. लज्जिऊणं (णच्च) वर्तमानकाल
21. होदूण (रुव) भविष्यत्काल
22. जग्गेऊण (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
23. कुल्लेदूणं (मर) वर्तमानकाल
24. मुच्छित्ता (पड) वर्तमानकाल
25. णच्चिउं (उल्लस) भविष्यत्काल
26. रूसिअ (सय) वर्तमानकाल
28. उल्लसिऊणं (उल्लस) वि. एवं आ.
28. कंपिय (पड) वर्तमानकाल
29. लज्जिउं (हस) वर्तमानकाल
30. डरिअ (जग्ग) वर्तमानकाल

उदाहरण—

अहं/हं/अम्मि हसिऊण जीवमि/जीवामि/जीवेमि ।

(घ-1) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए—

1. सो (डर, रुव)	2. हं (हस, जीव)
3. ते (तडफड, मर)	4. सा (जुज्झ, पड)
5. अम्हे (जीव, उल्लस)	6. तुम्हे (उच्छल, रुव)
7. तुहं (पड, उट्ठ)	8. सा (मुच्छ, मर)
9. ता (लज्ज, णच्च)	10. सो (णच्च, थक्क)

उदाहरण—

सो डरिऊण/डरिऊणं/डरिदूण/डरिदूणं/डरिय/डरिउं/डरित्ता रुवइ/रुवए/रुवदि/रुवदे।

(घ-2) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए—

1. तुमं (उच्छल, कुल्ल)	2. तुज्झे (उल्लस, खेल)
3. अम्मि (ठा, अच्छ)	4. सा (ण्हा, सय)
5. तुं (घुम, सय)	6. ते (उज्जम, कुल्ल)
7. हं (खेल, सय)	8. ताओ (उल्लस, जीव)
9. तुब्भे (खेल, अच्छ)	10. सो (उज्जम, खेल)

उदाहरण—

तुमं उच्छलिऊण/उच्छलिऊणं/उच्छलिदूण/उच्छलिदूणं/उच्छलिय/उच्छलिउं/उच्छलित्ता कुल्लहि/कुल्लसु/कुल्लधि/कुल्ल/कुल्लेहि/कुल्लेसु/कुल्लेधि/कुल्लेज्जसु/कुल्लेज्जहि/कुल्लेज्जे।

(घ-3) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्मि (खेल, उल्लस)	2. ते (उज्जम, उच्छल)
3. ताउ (लज्ज, णच्च)	4. वयं (अच्छ, उट्ठ)
5. सो (मुच्छ, मर)	6. तुम्हे (घुम, उल्लस)
7. अहं (सय, उट्ठ)	8. सा (हस, णच्च)
9. ते (उज्जम, खेल)	10. तुह (उच्छल, कुल्ल)

उदाहरण—

अम्मि खेलिऊण/खेलिऊणं/खेलिदूण/खेलिदूणं/खेलिय/खेलिउं/खेलित्ता उल्लसिहिमि/ उल्लसिस्सामि/उल्लसिहामि/उल्लसिस्सिमि/उल्लसेहिमि/उल्लसेस्सामि/ उल्लसेहामि/उल्लसिस्सं/उल्लसेस्स।

(च) निम्नलिखित सम्बन्धक भूतकृदन्तों (पूर्वकालिक क्रियाओं) की मूलक्रिया एव उनके प्रत्यय लिखिए—

1. लज्जिउं	2. घुमित्ता	3. अच्छेदूण
4. डरेऊण	5. कलहिअ	6. थक्किदूण
7. उट्ठेऊण	8. खेलित्ता	9. हसित्ता
10. जग्गित्तु	11. कुल्लिउं	12. उच्छलिउं
13. सयेदूणं	14. जीवित्ता	15. कंपियाणं
16. ठादूण	17. तडफडित्ता	18. रुवित्ता
19. पडिऊण	20. उल्लसेऊणं	21. उज्जमेदूण
22. उल्लसिऊणं	23. णच्चिउं	24. रूसित्ताणं
25. लुक्कित्ताण	26. जीविउं	27. ण्हाइत्ता

28. होऊण	29. मरिउं	30. ठादूणं
31. लुक्किकत्ता	32. कंपिऊण	33. उल्लसियाणं
34. रूसाय	35. जग्गिय	36. उच्छलेत्ताण

उदाहरण—

	मूलक्रिया	प्रत्यय
लज्जिउं	लज्ज	उं

———

अभ्यास-11

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। पुरुषवाचक सर्वनाम, हेत्वर्थक कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. वे सब खुश होने के लिए जीते हैं। 2. तुम जागने के लिए प्रयास करो। 3. हम सब सोने के लिए थकेंगे 4. वह नाचने के लिए उठी। 5. वह मरने के लिए कूदता है। 6. तुम उछलने के लिए प्रयास करो। 7. वे दोनों थकने के लिए घूमते हैं। 8. वह मरने के लिए छटपटाता है। 9. तुम दोनों नाचने के लिए उठो। 10. वह लड़ने के लिए ठहरा। 11. वे सब सोने के लिए उठें। 12. वे सब जागने के लिए प्रयास करते हैं। 13. वह रोने के लिए छिपता है। 14. तुम खेलने के लिए प्रयास करो। 15. हम सब खुश होने के लिए घूमेंगे। 17. वह कलह करने के लिए ठहरी। 18. तुम थकने के लिए घूमो। 18. वे सब घूमने के लिए खुश होवेंगे। 19. तुम सब खुश होने के लिए जीओ। 20. तुम कूदने के लिए उठो। 21. वह खेलने के लिए रूसती है। 22. तुम हँसने के लिए नाचो। 23. वह स्नान करने के लिए ठहरेगा। 24 वे सब नाचने के लिए प्रयास करेंगी। 25. तुम सब बैठने के लिए ठहरो। 26 हम सब जीने के लिए खुश होवेंगे। 27. वे लड़ने के लिए छिपे। 28 वे दोनों खेलने के लिए खुश होवेंगी। 29 वह कूदने के लिए ठहरे। 30. वे सोने के लिए रोते हैं।

उदाहरण—

वे सब खुश होने के लिए जीते हैं=ते उल्लसिउं/उल्लसिदुं/उल्लसेउं/उल्लसेदुं जीवन्ति/जीवेन्ति/जीवन्ते/जीविरे।

नोट—इस अभ्यास-11 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 29 का अध्ययन कीजिए।

(ख) प्राकृत रचना सौरभ के पाठ 29 के पादटिप्पणों में से दिए गए निम्न नियम के अनुरूप निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

नियम 5—

1. वह नाचने के लिए उठता है। 2. वह बैठने के लिए गिरती है। 3. तुम सब खुश होने के लिए खेलोगे। 4. वह जागने के लिए प्रयास करे। 5. वह सोने के लिए रोया।

उदाहरण—

वह नाचने के लिए उठता है=सो णच्चित्तए/णच्चेत्तए उट्ठइ/उट्ठए/उट्ठदि/उट्ठदे।

(ग) निम्नलिखित हेत्वर्थक कृदन्तों का प्रयोग करते हुए प्राकृत में वाक्य बनाइए। इच्छानुसार पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते हुए उसके अनुरूप कोष्ठकों में दी हुई क्रियाओं के निर्देशानुसार कालों में सभी विकल्प लिखिए—

1. खेलिउं (**रूस**) वर्तमानकाल
2. कलहिदुं (**अच्छ**) वर्तमानकाल
3. थक्केउं (**घुम**) भविष्यत्काल
4. उल्लसेदुं (**जीव**) वर्तमानकाल
5. जग्गेउं (**उज्जम**) विधि एवं आज्ञा
6. मरेदुं (**कुल्ल**) वर्तमानकाल
7. उच्छलिउं (**उज्जम**) विधि एवं आ.
8. उल्लसित्तए (**घुम**) भविष्यत्काल
9. जुज्झेदुं (**मर**) वर्तमानकाल
10. सयेउं (**उट्ठ**) विधि एवं आज्ञा
11. घुमेउं (**उल्लस**) भविष्यत्काल
12. पडिदुं (**कुल्ल**) वर्तमानकाल
13. णच्चिउं (**उट्ठ**) विधि एवं आज्ञा
14. सयेउं (**रुव**) वर्तमानकाल
15. कुल्लिउं (**ठा**) विधि एवं आज्ञा
16. जीवेदुं (**उल्लस**) भविष्यत्काल
17. रुवेउं (**लुक्क**) वर्तमानकाल
18. सयिदुं (**ठा**) विधि एवं आज्ञा
19. णच्चेत्ताए (**लज्ज**) भविष्यत्काल
20. उट्ठिउं (**उज्जम**) वर्तमानकाल
21. ण्हाउं (**अच्छ**) विधि एवं आज्ञा
22. उल्लसिउं (**खेल**) वर्तमानकाल
23. लुक्केदुं (**उज्जम**) भविष्यत्काल
24. ठाउं (**अच्छ**) विधि एवं आज्ञा

25. जीविसए (**उज्जम**) वर्तमानकाल 26. जुज्झिउं (**उट्ठ**) वर्तमानकाल

27. थक्केदुं (**णच्च**) भविष्यत्काल 28. सयेदुं (**थक्क**) विधि एवं आज्ञा

29. थक्किउं (**णच्च**) वर्तमानकाल 30. कल्लेदुं (**उट्ठ**) भविष्यत्काल

उदाहरण—

अहं/हं/अम्मि खेलिउं रूसमि/रूसामि/रूसेमि ।

(घ-1) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए । सभी विकल्प लिखिए—

1. अम्हे (**उल्लस, जीव**) 2. ते (**कलह, घुम**)

3. ता (**थक्क, घुम**) 4. हं (**जग्ग, उज्जम**)

5. सा (**णच्च, उट्ठ**) 6. सो (**मर, कुल्ल**)

7. ताओ (**खेल, रूस**) 8. तुह (**सय, रुव**)

9. सा (**उट्ठ, उज्जम**) 10. तुम्हे (**पड, कुल्ल**)

उदाहरण—

अम्हे उल्लसिउं/उल्लसिदुं/उल्लसेउं/उल्लसेदुं/उल्लसित्तए जीवीअ ।

(घ-2) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । सभी विकल्प लिखिए—

1. ते (**घुम, उल्लस**) 2. तुमं (**ण्हा, ठा**)

3. अम्हे (**जीव, उल्लस**) 4. ताउ (**थक्क, घुम**)

5. सा (**थक्क, णच्च**) 6. तुम्हे (**लुक्क, उल्लस**)

7. सो (कुल्ल, उट्ठ) 8. ता (णच्च, लज्ज)

9. ताओ (उल्लस, घुम) 10. अहं (खेल, ठा)

उदाहरण—

ते घुमिउं/घुमिदुं/घुमेउं/घुमेदुं/घुमित्तए उल्लसन्तु/उल्लसेन्तु ।

(घ-3) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये सभी विकल्प लिखिए—

1. ते (जग्ग, उज्जम) 2. तुब्भे (सय, उट्ठ)

3. तुमं (कुल्ल, ठा) 4. सो (ण्हा, अच्छ)

5. सा (णच्च, उट्ठ) 6. ता (उल्लस, जीव)

7. तुम्हे (हस, णच्च) 8. वयं (अच्छ, ठा)

9. तुं (सय, थक्क) 10. अम्मि (उच्छल, उज्जम)

उदाहरण—

ते जग्गिउं/जग्गिदुं/जग्गेउं/जग्गेदुं/जग्गेत्ताए उज्जमिहिन्ति/उज्जमिहिन्ते/उज्जमिहिइरे/उज्जमिस्सन्ति/उज्जमिस्सन्ते/उज्जमिस्सइरे/उज्जमिस्सिन्ति/उज्जमिस्सिन्ते/उज्जमिस्सिइरे ।

(च) निम्नलिखित हेत्वर्थक कृदन्तों की मूलक्रिया एवं उनके प्रत्यय लिखिए—

1. हसिउं 2. लज्जिदुं 3. घुमेदुं

4. रुविउं 5. तडफडेउं 6. कलहिदुं

7. उट्ठिउं 8. अच्छेउं 9. पडेदुं

10. मुच्छिदुं 11. उल्लसिउं 12. जुज्झेउं

13. उच्छलिदुं 14. सयेदुं 15. कुल्लेउं

16. उज्जमित्तए	17. खेलेउं	18. णच्चिदुं
19 उल्लसिदुं	20. मरेदुं	21. जीवेउं
22. कंपिउं	23. लुक्केत्तए	24. ठादुं
25. रूसेदुं	26. जग्गिउं	27. ण्हाउं
28. जीवेउं	29. होउं	30. सयिदुं
31. उज्जमिउं	32. लुक्किदुं	33. होदुं

उदाहरण—

	मूलक्रिया	प्रत्यय
हसिउं	हस	उं

अभ्यास-12

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए । पुरुषवाचक सर्वनाम, सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया), हेत्वर्थक कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. तुम खुश होकर जीओ । 2. वह नाचने के लिए उठती है । 3. वे सब उछलने के लिए प्रयास करेंगे । 4. तुम घूमकर थकते हो । 5. वह मरने के लिए कूदता है । 6. तुम सब हँसकर खेलो । 7. हम सब जागकर उठते हैं । 8. मैं खेलकर प्रसन्न होती हूँ । 9. वह नाचने के लिए शरमाएगी । 10. तुम सब ठहरकर स्नान करो । 11. मैं घूमने के लिए उठूँगी । 12 वह काँपकर मूर्च्छित होता है । 13. वे दोनो लड़कर मरेंगे । 14. तुम दोनों बैठने के लिए ठहरो । 15. वे दोनों लड़कर तड़फड़ाते हैं । 16. मैं हँसकर जीवूँगी । 17. वह शरमाकर नाचेगी । 18. तुम रूसकर सोते हो । 19 वे जागने के लिए प्रयास करे । 20. वे सब घूमने के लिए प्रसन्न होवेंगी । 21 तुम उठने के लिए ठहरो । 22. वह रोकर सोवेगी । 23. हम सब प्रसन्न होने के लिए घूमेंगे । 24. वे सब लड़ने के लिए छिपते हैं । 25. तुम स्नान करके सोवो । 26. तुम नाचकर थकते हो । 27. वे सब बैठकर खेलें । 28. तुम उठने के लिए जागो । 29. मैं सोने के लिए उठती हूँ । 30. वह खुश होकर घूमेगी ।

उदाहरण

तुम खुश होकर जीओ = तुमं/तुं/तुह उल्लसिऊण/उल्लसिऊणं/उल्लसिदूण/उल्लसिदूणं/उल्लसिउं/उल्लसिय/उल्लसिता जीवहि/जीवसु/जीवधि/जीव/जीवेहि/जीवेसु/जीवेधि/जीवेज्जसु/जीवेज्जहि/जीवेज्जे ।

नोट—इस अभ्यास-12 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 28 व 29 का अध्ययन कीजिए ।

(ख) निम्नलिखित सम्बन्धक भूतकृदन्तों व हेत्वर्थक कृदन्तों का प्रयोग करते हुए प्राकृत में वाक्य बनाइये। इच्छानुसार पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते हुए उसके अनुरूप कोष्ठकों में दी हुई क्रियाओं के निर्देशानुसार कालों में सभी विकल्प लिखिए—

1. उल्लसित्ता (जीव) विधि एवं आज्ञा
2. णच्चिदुं (लज्ज) भविष्यत्काल
3. कंपिदूण (मुच्छ) वर्तमानकाल
4. हसित्ताणं (खेल) विधि एवं आज्ञा
5. घुमिउं (उल्लस) भविष्यत्काल
6. ण्हाइत्ताण (सय) विधि एवं आज्ञा
7. हसिउं (उट्ठ) वर्तमानकाल
8. खेलिऊण (उल्लस) वर्तमानकाल
9. उल्लसेत्तुं (घुम) भविष्यत्काल
10. अच्छाय (खेल) विधि एवं आज्ञा
11. सयित्तु (उट्ठ) वर्तमानकाल
12. रुवाए (सय) भविष्यत्काल
13. उट्ठित्ताए (जग्ग) विधि एवं आज्ञा
14. मरेत्ताण (कुल्ल) वर्तमानकाल
15. ठाइत्तुं (ण्हा) विधि एवं आज्ञा
16. उच्छलाय (उज्जम) भविष्यत्काल
17. जग्गिउं (उट्ठ) वर्तमानकाल
18. उट्ठिदुं (ठा) विधि एवं आज्ञा
19. लज्जियाणं (णच्च) वर्तमानकाल
20. जुज्झिदूणं (मर) भविष्यत्काल
21. उज्जमेत्तुं (उट्ठ) विधि एवं आ.
22. घुमित्ता (ठा) भविष्यत्काल
23. जीविउं (उज्जम) भविष्यत्काल
24. कलहित्ताण (रुव) वर्तमानकाल
25. लुक्काए (अच्छ) विधि एवं आ
26. खेलियाण (रूस) वर्तमानकाल
27. थक्किदूण (घुम) भविष्यत्काल
28. पडेऊण (रुव) वर्तमानकाल
29. तडफडित्ताए (मर) भविष्यत्काल
30. उल्लसेत्ताण (णच्च) विधि एवं आ.

उदाहरण –
अहं/हं/अम्मि उल्लसित्ता जीवमु/जीवामु/जीविमु/जीवेमु।

(ग-1) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) या हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। सभी विकल्प लिखिए—

1. सो (लज्ज, णच्च)
2. सा (जुज्झ, मर)

3. हं (खेल, उल्लस)
4. तुह (सय, उट्ठ)
5. ते (मर, कुल्ल)
6. अम्हे (खेल, अच्छ)
. तुम्हे (उल्लस, घुम)
8. ता (कंप, मर)
9. सो (कलह, रुव)
10. तुमं (पड, रुव)

उदाहरण—

सो लज्जिऊण/लज्जिऊणं/लज्जिदूण/लज्जिदूणं/लज्जिय/लज्जिउं/लज्जित्ता/लज्जित्ताण/लज्जित्ताणं/लज्जाय/लज्जाए/लज्जियाण/लज्जियाणं/लज्जित्तु णच्चइ/णच्चए/णच्चदि/णच्चदे ।

(ग-2) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) या हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । सभी विकल्प लिखिए—

1. सो (खेल, उज्जम)
2. तुह (ठा, अच्छ)
3. हं (खेल, सय)
4. ता (उल्लस, जीव)
5. ते (कुल्ल, उज्जम)
6. अम्हे (जग्ग, उज्जम)
7. तुम्भे (ण्हा, सय)
8. तुं (उट्ठ, जग्ग)
9. सा (अच्छ, खेल)
10. तुम्हे (हस, खेल)

उदाहरण—

सो खेलिउं/खेलिदुं/खेलेउं/खेलेदुं/खेलित्तए/खेलेत्तए उज्जमउ/उज्जमेउ/उज्जमदु/उज्जमेदु ।

(ग-3) निम्नलिखित क्रियाओं में से किसी एक में सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) या हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में सर्वनामों के अनुरूप भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । सभी विकल्प लिखिए—

1. ते (उच्छल, उज्जम)
2. अम्मि (खेल, उल्लस)

3. वयं (उल्लस, घुम) | 4 सा (लज्ज, णच्च)
5. तुह (उच्छल, कुल्ल) | 6. ता (सय, उट्ठ)
7 तुज्झे (ण्हा, सय) | 8 हं (हस, जीव)
9. सो (मुच्छ, मर) | 10 सा (उल्लस, णच्च)

उदाहरण —

ते उच्छलिउं/उच्छलिदुं/उच्छलेउं/उच्छलेदुं/उच्छलित्तए उज्जमिहिन्ति/उज्जमिहिन्ते/उज्जमिहिइरे/उज्जमिस्सन्ति/उज्जमिस्सन्ते/उज्जमिस्सइरे/उज्जमिस्सिन्ति/उज्जमिस्सिन्ते/उज्जमिस्सिइरे ।

(च) निम्नलिखित कृदन्तों की मूलक्रिया, प्रत्यय एवं उनके नाम लिखिए—

1. हसित्ता	2. घुमिदूण	3. मुच्छियाण
4. सयिऊण	5. ठाअाय	6. तडफडिउं
7. जुज्झाए	8. णच्चिदुं	9. उट्ठिदूणं
10. कुल्लिअ	11. रुवित्तए	12. पडित्ताण
13. खेलेदूण	14. लुक्केउं	15. मरिदुं
16. अच्छियाणं	17. कंपेत्तु	18. थक्किऊण
19. जग्गेत्तए	20. ण्हाइत्ताण	21. कलहियाण
22. उल्लसाए	23. डरिउं	24. जीवेऊण
25. उज्जमित्ता	26. होइत्ताण	27. रुवित्तु
28. उच्छलेउ	29. मरित्ता	30 लज्जित्ताण

उदाहरण —

	मूलक्रिया	प्रत्यय	कृदन्त
हसित्ता	हस	त्ता	सम्बन्धक भूतकृदन्त

अभ्यास–13

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए । संज्ञा, कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. कुत्ता भोंकता है । 2. ऊँट नाचता है । 3 पुत्र प्रसन्न होवे । 4. मनुष्य बूढ़ा होता है । 5. समुद्र सूखेगा । 6. मामा उठे । 7. अग्नि जली । 8. राक्षस मरे । 9. वस्त्र सूखता है । 10. संसार नष्ट होगा । 11. शास्त्र शोभे । 12. गर्व गलता है । 13. ससुर बैठे । 14. मित्र खुश होवेगा । 15. सूर्य उगा । 16. रत्न शोभता है । 17. दुःख गले । 18. सिंह बैठता है । 19. मकान गिरेगा । 20. व्रत टूटता है । 21 समुद्र फैले । 22. दादा थकेगा । 23. पोता घूमे । 24. गर्व नष्ट हो । 25. राम प्रसन्न होता है । 26 बालक रूसा । 27. अपयश फैलता है । 28. पुस्तक गिरती है । 29. पिता उठता है । 30. देवर घूमे । 31. परमेश्वर प्रसन्न हो । 32. कुआ सूखेगा । 33. नरेश जीवे । 34. राजा हँसता है । 35. हनुमान कूदता है । 36. मृत्यु होती है । 37. हवा (पवन) फैलती है । 38. पानी झरेगा । 39. बाप जीवे । 40 अपयश गलता है । 41. पानी झरकर लुढ़कता है । 42. मनुष्य पैदा होकर मरता है । 43. दादा जीने के लिए प्रसन्न होवे । 44. बालक सोने के लिए रोता है । 45. सूर्य उगकर शोभेगा । 46. मामा प्रसन्न होकर बैठे । 47. सर्प उड़कर गिरेगा । 48. गर्व गलकर नष्ट होगा । 49. पोता नाचने के लिए उठे । 50. पुत्र कलह करके शरमायेगा । 51. ऊँट थकने के लिए नाचेगा । 52. देवर घूमने के लिए उठे । 53. रत्न गिरकर टूटता है । 54 पिता जागकर डोलता है । 55. घर गिरकर नष्ट होगा । 56 पुस्तक जलकर नष्ट होती है । 57. कुत्ता भोंककर बैठता है । 58. व्रत टूटकर गला । 59. राक्षस मरने के लिए कूदा । 60. पानी फैलकर सूखेगा ।

उदाहरण—

कुत्ता भोंकता है = कुक्कुरो/कुक्कुरे बुक्कइ/बुक्कए/बुक्कदि/बुक्कदे/बुक्कति/बुक्कते ।

नोट—इस अभ्यास–13 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 30 व 31 का अध्ययन कीजिए । पाठ–31 के पादटिप्पण में दिए गए नियम–7 का भी प्रयोग कीजिए ।

(ख) नीचे अकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुये निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइये। सभी विकल्प लिखिए—

1. नरिंद (हस) वर्तमानकाल	2. पुत्त (हरिस) विधि एवं आज्ञा
3. सायर (सुक्ख) भविष्यत्काल	4. गव्व (गल) वर्तमानकाल
5. ससुर (चिट्ठ) विधि एवं आज्ञा	6. मित्त (उल्लस) भविष्यत्काल
7. दुज्जस (पसर) वर्तमानकाल	8. दिअर (घुम) विधि एवं आज्ञा
9 बालअ (कंद) भविष्यत्काल	10 णर (जर) वर्तमानकाल
11. माउल (उट्ठ) विधि एवं आ.	12. घर (पड) भविष्यत्काल
13. पड (सुक्ख) वर्तमानकाल	14. पिआमह (वल) भूतकाल
15. दिवायर (उग) भूतकाल	16. वय (तुट्ट) वर्तमानकाल
17. परमेसर (हरिस) वि. एवं आ.	18. करह (पला) भूतकाल
19 कुक्कुर (बुक्क) वर्तमानकाल	20. गंथ (सोह) भूतकाल
21 कियंत (सय) भविष्यत्काल	22. पोत्त (खेल) भूतकाल
23 रहुणन्दण (हरिस)वर्तमानकाल	24. आगम (सोह) विधि एवं आज्ञा
25 सप्प (उड्ड) वर्तमानकाल	26. भव (खय) वर्तमानकाल
27. कूव (सुक्ख) भविष्यत्काल	28. रयण (उपज्ज) वर्तमानकाल
29 राय (उज्जम) विधि एवं आ.	30. हणुवन्त (कुल्ल) वर्तमानकाल
31 हुअवह (जल) भविष्यत्काल	32. मारुअ (डुल) वर्तमानकाल
33 कियंत (हो) भूतकाल	34. सीह (चिट्ठ) वर्तमानकाल
35. दुह (नस्स) विधि एवं आज्ञा	36 बप्प (जीव) वर्तमानकाल
37. सलिल (णिज्झर)भविष्यत्काल	38. गव्व (गल) भूतकाल
39. रक्खस (मर) भविष्यत्काल	40. सलिल (लुढ) वर्तमानकाल

उदाहरण—

नरिंदो हसइ/हसए/हसदि/हसदे/हसति/हसते।

(ग-1) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुये निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये और दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1 कुक्कुर (बुक्क, चिट्ठ)	2. पिग्रामह (घुम, उट्ठ)
3 रयण (पड, तुट्ट)	4. जणेर (जग्ग, कुल्ल)
5. पोत्त (थक्क, घुम)	6. घर (जल, पड)
7. वग्घ (गल, नस्स)	8. रहुणन्दण (हरिस, चिट्ठ)
9. पड (जल, खय)	10. दिवायर (सोह, उग)

उदाहरण—
कुक्कुरो बुक्किऊण/बुक्किऊणं/बुक्किदूण/बुक्किदूणं/बुक्किय/बुक्किउं/बुक्कित्ता चिट्ठीअ।

(ग-2) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुये निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एव कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. णर (जीव, हरिस)	2. करह (थक्क, णच्च)
3. दिग्रर (घुम, उट्ठ)	4. जणेर (हरिस, अच्छ)
5. रयण (सोह, उपज्ज)	6. सलिल (सुक्ख, णिज्झर)
7. माउल (कुल्ल, उज्जम)	8. नरिंद (हरिस, चिट्ठ)
9. बालअ (णच्च, उट्ठ)	10. पोत्त (खेल, उज्जम)

उदाहरण—
णरो जीविउं/जीवेउं/जीविदुं/जीवेदुं हरिसउ/हरिसेउ/हरिसदु/हरिसेदु।

(ग-3) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए और दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. गव्व (गल, खय)
2. पुत्त (कलह, लज्ज)
3. रक्खस (कुल्ल, मर)
4. सप्प (उड्ड, पड)
5. सलिल (पसर, सुक्ख)
6. दिवायर (सोह, उग्ग)
7. पड (जल, नस्स)
8. मारुअ (पसर, पड)
9. दुक्ख (उपज्ज, खय)
10. बालअ (रुव, सय)

उदाहरण –

गव्वो गलिऊण/गलिऊणं/गलिदूण/गलिदूणं/गलिय/गलिउं/गलित्ता खयिहिइ/खयिहिए/खयिहिदि/खयिहिदे/खयिस्सइ/खयिस्सए/खयिस्सदि/खयिस्सदे/खयिस्सिदि/खयिस्सिदे।

(घ) नीचे अकारान्त संज्ञाएं विभक्ति-प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. नरिंदो
2. करहो
3. हणुवन्तो
4. पोत्तो
5. कुक्कुरो
6. गव्वो
7. मित्तो
8. बालओ
9. पिआमहो
10. णरो
11. सप्पो
12. भवो
13. सायरो
14. हुअवहो
15. पडो
16. सीहो
17. रयणो
18. दिअरो
19. आगमो
20. मारुओ
21. कियंतो
22. रक्खसो
23. दुक्खो
24. बप्पो

25. गामो	26. रायो	27. दुज्जणो
28. घरो	29. वयो	30. माउलो

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
नरिंदो	अन्य पुरुष	एकवचन	नरिंद	पुल्लिंग	ओ

अभ्यास-14

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए । संज्ञा, कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. कुत्ते भोंकते हैं । 2. ऊँट नाचते हैं । 3. पुत्र प्रसन्न होवें । 4 मनुष्य बूढ़े होते हैं । 5. समुद्र सूखेंगे । 6. मेघ गरजते हैं । 7 राक्षस मरें । 8. वस्त्र सूखते हैं । 9. शास्त्र शोभें । 10. मित्र खुश होवेंगे । 11. रत्न शोभते हैं । 12. सिंह बैठेंगे । 13. मकान गिरते हैं । 14. पोते घूमें । 15. बालक रूसेंगे । 16. दु:ख नष्ट होते हैं । 17 पुस्तकें गिरती हैं । 18. कूए सूखे । 19. राजा हँसते हैं । 20. मेघ फैले । 21. व्रत शोभते हैं । 22. राक्षस डरते हैं । 23. दु:ख गलें । 24. पुत्र जीवें । 25. सर्प उड़े । 26. मामा उठें । 27. राक्षस मूच्छित होंगे । 28 मनुष्य प्रयास करें । 29. बालक रोते हैं । 30. नरेश प्रसन्न हों । 31. मेघ फैलेंगे । 32 मकान जलेंगे । 33. पुस्तकें नष्ट होवेंगी । 34. पुत्र कांपते हैं । 35 व्रत टूटते हैं । 36. राक्षस भागेंगे । 37. कुत्ते लड़ते हैं । 38 राजा मूच्छित होते हैं । 39. बालक कूदते हैं । 40. पोते उछलें । 41. मनुष्य लड़ते हैं । 42. बालक सोने के लिए रोते हैं । 43. मामा प्रसन्न होकर बै ठें । 44. साँप उड़कर गिरेंगे । 45. गर्व नष्ट होने के लिए गलेंगे । 46. पुत्र [illegible] लह करके शरमाया । 47. पोते नाचने के लिए उठें । 48. ऊँट नाचकर थकें [illegible] । 49. रत्न गिरकर टूटते हैं । 50. वस्त्र लुढ़कते हैं । 51. कुत्ते भोंककर लड़ते [illegible] हैं । 52. राक्षस मरने के लिए कूदेंगे । 53. पुत्र प्रसन्न होकर जीवें । 54. मनुष्य [illegible] पैदा होकर मरते हैं । 55. बालक उछलकर कूदें । 56. पोता नाचने के लिए [illegible] रूठता है । 57. राजा प्रसन्न होकर बैठें । 58. राक्षस मूच्छित होकर मरेंगे । 59 बालक भागकर खेलें । 60. पुत्र नाचकर थकते हैं ।

उदाहरण —

कुत्ते भोंकते हैं=कुक्कुरा बुक्क[illegible]न्ति/बुक्केन्ति/बुक्किरे/बुक्कन्ते ।

नोट - इस अभ्यास-14 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 32 का अध्ययन कीजिए ।

(ख) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए—

1. नरिंद (हस) वर्तमानकाल
2. पुत्त (हरिस) विधि एवं आज्ञा
3. सायर (सुक्ख) भविष्यत्काल
4. गव्व (गल) विधि एवं आज्ञा
5. मित्त (उल्लस) भविष्यत्काल
6. दिअर (घुम) वर्तमानकाल
7. बालअ (कंद) भविष्यत्काल
8. णर (जर) वर्तमानकाल
9. माउल (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
10. घर (पड) भविष्यत्काल
11. पड (सुक्ख) वर्तमानकाल
12. वय (तुट्ट) भूतकाल
13. करह (पला) भूतकाल
14. कुक्कुर (बुक्क) वर्तमानकाल
15. गन्थ (सोह) वर्तमानकाल
16. माउल (सय) भविष्यत्काल
17. पोत्त (खेल) विधि एवं आज्ञा
18. आगम (सोह) विधि एवं आज्ञा
19. सप्प (उड्ड) वर्तमानकाल
20. कूव (सुक्ख) वर्तमानकाल
21. रयण (उपज्ज) वर्तमानकाल
22. राय (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
23. सीह (बइस) वर्तमानकाल
24. दुह (नस्स) भूतकाल
25. हुअवह (जल) वर्तमानकाल
26. रक्खस (मर) भविष्यत्काल
27. करह (णच्च) वर्तमानकाल
28. रयण (सोह) भविष्यत्काल
29. णर (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
30. दुक्ख (नस्स) भविष्यत्काल
31. पुत्त (कंप) वर्तमानकाल
32. राय (हरिस) विधि एवं आज्ञा
33. दुह (गल) भविष्यत्काल
34. घर (जल) वर्तमानकाल
35. सप्प (वल) भविष्यत्काल
36. पोत्त (कुल्ल) विधि एवं आज्ञा
37. पुत्त (उच्छल) विधि एवं आज्ञा
38. मित्त (उट्ठ) विधि एवं आज्ञा
39. माउल (डर) वर्तमानकाल
40. रक्खस (मुच्छ) भविष्यत्काल

उदाहरण—
नरिंदा हसन्ति/हसेन्ति/हसिरे/हसन्ते।

(ग-1) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. कुक्कुर (बुक्क, बइस)	2. रयण (पड, तुट्ट)
3. घर (जल, पड)	4. पोत्त (थक्क, घुम)
5. वय (गल, नस्स)	6. पड (जल, खय)
7. बालअ (सय, कंद)	8. णर (उपज्ज, मर)
9. पुत्त (णच्च, थक्क)	10. रक्खस (मर, कुल्ल)

उदाहरण—

कुक्कुरा बुक्किऊण/बुक्किऊणं/बुक्किदूण/बुक्किदूणं/बुक्किय/बुक्किउं/बुक्कित्ता/ बुक्काय/बुक्काए/बुक्कियाण/बुक्कियाण बइसन्ति/बइसन्ते/बइसिरे/ बइसेन्ति।

(ग-2) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. णर (जीव, हरिस)	2. करह (थक्क, णच्च)
3. दिअर (घुम, उट्ठ)	4. रयण (सोह, उपज्ज)
5. पोत्त (णच्च, उट्ठ)	6. माउल (कुल्ल, उज्जम)
7. नरिंद (हरिस, बइस)	8. बालअ (णच्च, उट्ठ)
9 पोत्त (खेल, उज्जम)	10. बालअ (पला, खेल)

उदाहरण

णरा जीविउं/जीवेउं/जीविदुं/जीवेदुं/जीवित्तए/जीवेत्तए हरिसन्तु/हरिसेन्तु।

(ग 3) नीचे अकारान्त पुल्लिग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एव कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. मेह (णिज्झर, सुक्ख)	2. पुत्त (कलह, लज्ज)
3. रक्खस (कुल्ल, मर)	4. सप्प (उड्ड, पड)
5. पड (जल, नस्स)	6. दुक्ख (उपज्ज, खय)
7. बालअ (रुव, सय)	8. करह (णच्च, थक्क)
9. रयण (पड तुट्ट)	10 बालअ (पला, खेल)

उदाहरण —

मेहा णिज्झरिऊण/णिज्झरिऊणं/णिज्झरिदूण/णिज्झरिदूणं/णिज्झरिउं/णिज्झरिय/ णिज्झरित्ता सुक्खिहिन्ति/सुक्खिहिन्ते/सुक्खिहिइरे/सुक्खिस्सन्ति/ सुक्खिस्सन्ते/सुक्खिस्सइरे/सुक्खिस्सिन्ति/सुक्खिस्सिन्ते/सुक्खिस्सिइरे ।

(घ) नीचे अकारान्त संज्ञाएँ विभक्ति-प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. नरिंदा	2. करहो	3. पोत्तो
4. कुक्कुरा	5. गव्वा	6. मित्ता
7. बालआ	8. पिआमहा	9. णरो
10. सप्पा	11. भवो	12. सायरा
13. हुअवहा	14. पडा	15. सीहा
16. हणुवन्ता	17. रयणा	18 दिअरो
19. आगमा	20. मारुओ	21. कियंता
22. रक्खसा	23. दुक्खो	24. बप्पा

25. गामा	26. राया	27. दुज्जसा
28. घरो	29. वया	30. माउलो

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
नरिंदा	अन्यपुरुष	बहुवचन	नरिंद	पुल्लिंग	0→आ

अभ्यास-15

(क) निम्नलिखित वाक्यों को प्राकृत में रचना कीजिए। अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञारूपों, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. धन बढ़ता है। 2. धान उगेगा। 3. मद्य छूटे। 4. शासन फैलेगा। 5. व्यसन नष्ट होवे। 6. गठरी लुढ़की। 7. सुख बढ़े। 8. दूध टपकेगा। 9. दुःख छूटे। 10. राज्य प्रयत्न करे। 11. यौवन खिलता है। 12 सदाचार शोभे। 13. आकाश गूँजता है। 14. वैराग्य बढ़ा। 15. नागरिक सोयेगा। 16. विमान उड़े। 17 कागज सूखता है। 18. छींक छूटती है। 19. राज्य भूल करता है। 20. सत्य खिले। 21. लकड़ी जलेगी। 22. पानी टपका। 23. गीत गूँजे। 24. जूआ छूटे। 25. घास उगती है। 26. गीत गूँजता है। 27. भोजन बढ़ता है। 28. भय नष्ट होता है। 29. रक्त टपकता है। 30 मरण सिद्ध होता है। 31. खेत जलता है। 32. वस्त्र सूखेगा। 33 काठ जलती है। 34. भोजन बढ़ेगा। 35. घी तपा। 36. सिर दुःखता है। 37. धान उगे। 38 जंगल नष्ट होता है। 39. सदाचार शोभता है। 40. वस्त्र जलेगा। 41. पानी टपकेगा। 42. रूप खिलकर प्रकट होता है। 43. धागा गलकर टूटता है। 44. नागरिक[1] जागने के लिए प्रयत्न करे। 45. विमान ठहरकर उड़ेगा। 46. राज्य फैलने के लिए झगड़ा करता है। 47. नागरिक ठहरकर उपस्थित होगा। 48 गीत गूंजकर प्रकट होगा। 49 नागरिक कूदने के लिए प्रयास करे। 50. मन हँसने के लिए क्रीड़ा करता है। 51. शासन प्रयत्न करने के लिए उत्साहित होता है। 52. ज्ञान बढ़कर प्रकट होवे। 53. नागरिक जागने के लिए प्रयत्न करेगा। 54. धान उगकर बढ़ता है। 55. मन खेलने के लिए रमा। 56. धन खेलने के लिए होता है। 57. धागा टूटकर नष्ट होवेगा। 58 दूध टपककर फैलता है। 59. कर्ज नष्ट होता है। 60. नागरिक प्रसन्न होने के लिए खेलता है।

---

1. णायरजण=नागरिक, प्रयोग में णायरजणाइँ शब्द मिलता है। इस कारण इसे नपुंसकलिंग शब्द माना गया है।

नोट — इस अभ्यास-15 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 34 व 35 का अध्ययन कीजिए।

उदाहरण—

धन बढ़ता है=धणं वड्ढइ/वड्ढेइ/वड्ढए/वड्ढदि/वड्ढदे/वड्ढति/वड्ढते।

(ख) **नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए—**

1. पत्त (**सुक्ख**) वर्तमानकाल
2. सील (**सोह**) विधि एवं आज्ञा
3. सासण (**पसर**) भविष्यत्काल
4. धण (**वड्ढ**) वर्तमानकाल
5. मज्ज (**छुट्ट**) विधि एवं आज्ञा
6. खीर (**चुअ**) भविष्यत्काल
7. जोव्वण (**विअस**) वर्तमानकाल
8. वेरग्ग (**वड्ढ**) विधि एवं आज्ञा
9. णायरजण (**सय**) भविष्यत्काल
10. छिक्क (**छुट्ट**) वर्तमानकाल
11. विमाण (**उड्ड**) विधि एवं आज्ञा
12. धन्न (**उग**) भविष्यत्काल
13. णह (**गुंज**) वर्तमानकाल
14. रज्ज (**उज्जम**) भूतकाल
15. सोक्ख (**वड्ढ**) विधि एवं आज्ञा
16. पोट्टल (**लुढ**) वर्तमानकाल
17. रज्ज (**चुक्क**) वर्तमानकाल
18. वत्थ (**सुक्ख**) भविष्यत्काल
19. वसण (**नस्स**) विधि एवं आज्ञा
20. लक्कुड (**जल**) भविष्यत्काल
21. तिण (**उग**) वर्तमानकाल
22. भय (**खय**) विधि एवं आज्ञा
23. सासण (**छुट्ट**) भविष्यत्काल
24. रत्त (**चुअ**) वर्तमानकाल
25. जूअ (**छुट्ट**) विधि एवं आज्ञा
26. वत्थ (**वड्ढ**) वर्तमानकाल
27. भोयण (**वड्ढ**) भविष्यत्काल
28. गाण (**गुंज**) विधि एवं आज्ञा
29. मरण (**सिज्झ**) वर्तमानकाल
30. कट्ठ (**जल**) वर्तमानकाल
31. घय (**तव**) विधि एवं आज्ञा
32. धन्न (**उग**) विधि एवं आज्ञा
33. वत्थ (**जल**) भविष्यत्काल
34. खेत्त (**नस्स**) वर्तमानकाल
35. वण (**जल**) वर्तमानकाल
36. उदग (**चुअ**) वर्तमानकाल

37. पोट्टल (लुढ) भविष्यत्काल
38 विमाण (उड्ड) वर्तमानकाल
39. सोक्ख (वड्ढ) भूतकाल
40. णयरजण (हरिस) वर्तमानकाल

उदाहरण—

पत्तं सुक्खइ/सुक्खेइ/सुक्खए/सुक्खदि/सुक्खदे/सुक्खति/सुक्खते ।

(ग-1) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं । संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. सुत्त (गल, तुट्ट)
2. रूव (विम्रस, फुर)
3. मण (कील, हरिस)
4. धन्न (उग, वड्ढ)
5. धण (तव, हव)
6. खीर (चुअ, पसर)
7. रिण (छुट्ट, नस्स)
8. सासण (चेट्ठ, उच्छह)
9. णयरजण (हरिस, खेल)
10. पुप्फ (वड्ढ, विम्रस)

उदाहरण—

सुत्तं गलिऊण/गलिऊणं/गलिदूण/गलिदूणं/गलिउं/गलिय/गलित्ता तुट्टइ/तुट्टेइ/ तुट्टए/तुट्टदे/तुट्टदि/तुट्टति/तुट्टते ।

(ग-2) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं । संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा, क्रिया एव कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. णयरजण (जागर, चेट्ठ)
2. णाण (वड्ढ, फुर)
3. मण (खेल, रम)
4. सासण (वड्ढ, पसर)

5. धन्न (उग, सोह)
6. मज्ज (छुट्ट, नस्स)
7. सच्च (फुर, सोह)
8. णयरजण (ठा, विज्ज)
9. कम्म (तप, सिज्झ)
10. खीर (चुअ, पसर)

उदाहरण—
णयरजणं जागरिउं/जागरेउं/जागरिदुं/जागरेदुं/जागरित्तए चेट्ठउ/चेट्ठेउ/चेट्ठदु/ चेट्ठेदु ।

(ग-3) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. विमाण (चिट्ठ, वड्ढ)
2. णयरजण (जागर, उज्जम)
3. सुत्त (तुट्ट, नस्स)
4. गाण (गुंज, फुर)
5. णयरजण (विज्ज, चिट्ठ)
6. वण (जल, खय)
7. तिण (उग, वड्ढ)
8. उदग (चुअ, पसर)
9. सील (फुर, सोह)
10. रज्ज (पसर, वड्ढ)

उदाहरण—
विमाणं चिट्ठिउं/चिट्ठेउं/चिट्ठिदुं/चिट्ठेदुं/चिट्ठित्तए वड्ढिहिइ/वड्ढिहिए/ वड्ढिहिदि/वड्ढिहिदे/वड्ढिस्सइ/वड्ढिस्सए/वड्ढिस्सदि/वड्ढिस्सदे/ वड्ढिस्सिदि/वड्ढिस्सिदे ।

(घ) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं विभक्ति-प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. घणं
2. मणं
3. खेत्तं
4. सासणं
5. पत्तं
6. सोक्खं
7. सीलं
8. णयरजणं
9. भयं

10. वेरग्गं	11. रत्तं	12. मज्जं
13. खीरं	14. विमाणं	15. रज्जं
16. छिक्कं	17. लक्कुडं	18. उदगं
19. तिणं	20. भोयणं	21. सुहं
22 जोव्वणं	23. कम्मं	24. णाणं
25 असणं	26. वत्थं	27. कट्ठं
28 बीअं	29. रिणं	30. सिरं

उदाहरण —

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
धणं	अन्यपुरुष	एकवचन	धण	नपुंसकलिंग	ं

———

अभ्यास-16

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए । संज्ञा, कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1 धन बढ़ें । 2. व्यसन नष्ट होते हैं । 3. गठरियाँ लुढ़कती हैं । 4. विमान उड़ते हैं । 5. राज्य प्रयत्न करते हैं । 6. नागरिक सोयेंगे । 7. विमान उड़ें । 8. कागज सूखते हैं । 9. छींकें छूटती हैं । 10 लकड़ियाँ जलेंगी । 11. नागरिक अफसोस करते हैं । 12. गीत गूँजेंगे । 13. राज्य भूल करते हैं । 14. कागज सूखें । 15. जंगल नष्ट होते हैं । 16. लकड़ियाँ जलती हैं । 17. भय नष्ट हुए । 18 धान उगते हैं । 19. खेत जलेंगे । 20. व्यसन नष्ट हों । 21. गीत गूंजते हैं । 22. गठरियाँ लुढ़कें । 23. धान उगेंगे । 24. नागरिक प्रयत्न करें । 25. लकड़ियाँ जलीं । 26. कागज सूखेंगे । 27. गठरियाँ लुढ़केंगी । 28 धान उगें । 29. भय नष्ट हों । 30. विमान पड़ते हैं । 31. जंगल नष्ट होंगे । 32. नागरिक भागें । 33. शासन फैलें । 34. विमान उड़ेंगे । 35. धागे टूटते हैं । 36. वस्त्र जलते हैं । 37. नागरिक कूदते हैं । 38. खेत नष्ट होते हैं । 39. राज्य सोहें । 40. बीज उगते हैं । 41. धागे गलकर टूटेंगे । 42. नागरिक भूल करके अफसोस करते हैं । 43 बीज बढ़ने के लिए उगेंगे । 44 धान उगकर बढ़ें । 45. नागरिक जागने के लिए उत्साहित होते हैं । 46. लकड़ियां नष्ट होने के लिए जलती हैं । 47. गीत गूँजकर प्रकट होते हैं । 48. कर्ज नष्ट होंगे । 49. गठरियां लुढ़ककर गिरती हैं । 50. राज्य उत्साहित होकर प्रसन्न होंगे । 51. नागरिक नाचने के लिए उठें । 52. राज्य फैलने के लिए झगड़ा करते हैं । 53. नागरिक उपस्थित होकर प्रसन्न होंगे । 54. विमान गिरकर नष्ट होते हैं । 55. नागरिक प्रयास करके खेलें । 56. विमान ठहरकर उड़ेंगे । 57. बीज उगकर बढ़ते हैं । 58. नागरिक कूदकर भागें । 59. लकड़ियां जलकर नष्ट होंगी । 60 वस्त्र गलकर नष्ट होते हैं ।

नोट— इस अभ्यास-16 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 36 का अध्ययन कीजिए ।

उदाहरण —

धन बढ़ें=धणाइं/धणाइँ/धणाणि वड्ढन्तु/वड्ढेन्तु ।

(ख) **नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुये निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइये। सभी विकल्प लिखिए—**

1. विमाण (उड्ड) विधि एवं आज्ञा	2. वसण (नस्स) वर्तमानकाल
3. धण (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा	4. पोट्टल (लुढ) वर्तमानकाल
5. रज्ज (चेट्ठ) विधि एवं आज्ञा	6. णयरजण (लोट्ट) विधि एवं आज्ञा
7. लक्कुड (जल) भविष्यत्काल	8. णयरजण (खिज्ज) वर्तमानकाल
9. पत्त (सुक्ख) विधि एवं आज्ञा	10 छिक्क (छुट्ट) वर्तमानकाल
11. गाण (गुंज) भविष्यत्काल	12. खीर (चुअ) विधि एवं आज्ञा
13. धन्न (उग) वर्तमानकाल	14. खेत्त (जल) भूतकाल
15. वसण (नस्स) विधि एवं आज्ञा	16. गाण (गुंज) वर्तमानकाल
17. पोट्टल (लुढ) विधि एवं आज्ञा	18. पत्त (सुक्ख) वर्तमानकाल
19 भय (खय) भविष्यत्काल	20. णयरजण (खिज्ज) भविष्यत्काल
21. रज्ज (चुक्क) वर्तमानकाल	22. सोक्ख (वड्ढ) विधि एवं आज्ञा
23. धन्न (उग) भविष्यत्काल	24. णयरजण (चेट्ठ) वर्तमानकाल
25. लक्कुड (जल) वर्तमानकाल	26. गाम (वस) भविष्यत्काल
27. पोट्टल (लुढ) भविष्यत्काल	28. धन्न (उग) विधि एवं आज्ञा
29. वण (खय) भूतकाल	30. भय (नस्स) विधि एवं आज्ञा
31. विमाण (उड्ड) वर्तमानकाल	32 सासण (पसर) विधि एवं आज्ञा
33. णयरजण (पला) वि. एवं आ.	34. विमाण (उड्ड) भविष्यत्काल
35. सुत्त (तुट्ट) वर्तमानकाल	36 वत्थ (जल) वर्तमानकाल
37. णयरजण (कुल्ल) वि. एवं आ.	38. खेत्त (नस्स) वर्तमानकाल

39. मज्ज (नस्स) विधि एव आज्ञा   40. बीअ (उग) भविष्यत्काल

उदाहरण—

विमाणाइं/विमाणाइँ/विमाणाणि उड्डन्तु/उड्डेन्तु ।

(ग–1) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं । संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. धन्न (उग, वड्ढ)
2. णयरजण (चुक्क, खिज्ज)
3. गाण (गुंज, फुर)
4. पोट्टल (लुढ, पड)
5. रज्ज (पसर, जुज्झ)
6. विमाण (पड, नस्स)
7. बीअ (उग, वड्ढ)
8. णयरजण (कुद्द, पला)
9. वत्थ (गल, खय)
10. णयरजण (हरिस, विज्ज)

उदाहरण—

धन्नाइं/धन्नाइँ/धन्नाणि उगिऊण/उगिऊणं/उगिदूण/उगिदूणं/उगिउं/उगिय/ उगित्ता वड्ढीअ ।

(ग-2) नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं । संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. णयरजण (णच्च, उट्ठ)
2. वसण (छुट्ट, नस्स)
3. भय (नस्स, पला)
4. गाण (गुंज, पसर)
5. विमाण (चिट्ठ, उड्ड)
6. णयरजण (जागर, चेट्ठ)

7. सासण (वड्ढ, पसर)　　8. धन्न (उग, सोह)
9. वेरग्ग (वस, पसर)　　10. खीर (चुअ, पसर)

उदाहरण—

णयरजणाइं/णयरजणाइँ/णयरजणाणि णच्चिउं/णच्चेउं/णच्चिदुं/णच्चेदुं/णच्चित्तए उट्ठन्तु/उट्ठेन्तु।

(ग-3) **नीचे अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. विमाण (चिट्ठ, उड्ड)　　2. णयरजण (ठा, विज्ज)
3. गाण (गुंज, फुर)　　4. रिण (छुट्ट, नस्स)
5. सुत्त (गल, तुट्ट)　　6. बीअ (वड्ढ, उग)
7. लक्कुड (जल, नस्स)　　8. गाम (वस, पसर)
9. णयरजण (जागर, चेट्ठ)　　10. वसण (छुट्ट, नस्स)

उदाहरण—

विमाणाइं/विमाणाइँ/विमाणाणि चिट्ठिऊण/चिट्ठिऊणं/चिट्ठिदूण/चिट्ठिदूणं/चिट्ठिउं/चिट्ठिय/चिट्ठित्ता उड्डिहिन्ति/उड्डिहिन्ते/उड्डिहिइरे/उड्डिस्सन्ति/उड्डिस्सन्ते/उड्डिस्सइरे/उड्डिस्सिन्ति/उड्डिस्सिन्ते/उड्डिस्सिइरे।

(घ) **नीचे अकारान्त संज्ञाएं विभक्ति-प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—**

1. धणाइँ　　2. खेत्ताणि　　3. सासणाइँ
4. पत्ताइं　　5. लक्कुडाणि　　6. सोक्खाइं
7. णयरजणाइँ　　8. रज्जाइँ　　9. भयाइँ

10. वसणाइं	11. रत्ताणि	12. तिणाइँ
13. भोयणाइँ	14. खीराणि	15. सुत्ताइँ
16. बीआइँ	17. सासणाइं	18. गाणाइँ
19. पोट्टलाइँ	20. छिक्काणि	21. घन्नाइँ
22. वत्थाइँ	23. कम्माणि	24. णयरजणाणि
25. घणाइं	26. सासणाइँ	27. रज्जाइँ
28. पोट्टलाणि	29. छिक्काइँ	30. वत्थाइं

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
घणाइँ	अन्यपुरुष	बहुवचन	घण	नपुंसकलिंग	इँ→आइँ

अभ्यास-17

(क) **निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। संज्ञा, कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—**

1. माता प्रसन्न होती है। 2. श्रद्धा बढ़े। 3. शिक्षा फैली। 4. बहिन शोभती है। 5. भूख शान्त होवे। 6. वाणी थकती है। 7. मदिरा छूटे। 8 प्यास शान्त होगी। 9. आज्ञा प्रकट होती है। 10. बेटी प्रसन्न हो। 11. नदी सूखेगी। 12. लक्ष्मी बढ़ती है। 13 प्रज्ञा सिद्ध हो। 14. अभिलाषा शान्त होगी। 15. गुफा नष्ट होगी। 16. पत्नी डरती है। 17. वाणी प्रकट होवे। 18. दया छूटती है। 19. गंगा फैलती है। 20. प्रतिष्ठा बढ़े। 21. परीक्षा हुई। 22. प्यास शान्त होती है। 23. स्त्री उत्साहित हो। 24. कन्या देर करेगी। 25. नींद नष्ट होवे। 26. महिला तप करे। 27 पुत्री खाँसती है। 28. प्रशंसा फैलेगी। 29. खड्डा बढ़ता है। 30. यमुना सूखेगी। 31 बुद्धि खिले। 32. पुत्री खेलती है। 33. सीता हँसेगी। 34. बेटी प्रसन्न होती है। 35. तृष्णा घटे। 36. रात्रि सोने के लिए होती है। 37. नर्मदा फैलेगी। 38. शोभा बढ़े। 39. पुत्री सांस लेवे। 40. सीता शोभती है। 41. शोभा नष्ट होती है। 42. पुत्री डरकर सोती है। 43. बहिन शान्त होकर बैठे। 44. ननद घूमने के लिए रुकेगी। 45. ननद गिड़गिड़ाकर रोती है। 46. शिक्षा बढ़कर फैले। 47. कन्या देरी करके बैठती है। 48. बेटी रोई। 49. पत्नी ठहरकर सोये। 50. माता वमन करके शान्त होती है। 51. स्त्री उत्साहित होकर प्रयत्न करे। 52. ननद छींजकर कूदती है। 53. पुत्री बैठने के लिए रुके। 54 लक्ष्मी बढ़कर शोभे। 55. कन्या रोकर देर करती है। 56. पुत्री खेलने के लिए खुश होगी। 57. बहिन उत्साहित होकर घूमेगी। 58. कन्या सोने के लिए उठी। 59. बहिन खांसकर वमन करती है।

उदाहरण —

माता प्रसन्न होती है=माया हरिसइ/हरिसेइ/हरिसए/हरिसदि/हरिसेदि।

नोट—इस अभ्यास-17 को हल करने के लिए '**प्राकृत रचना सौरभ**' के पाठ 38-39 का अध्ययन कीजिए।

(ख) **नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइये। सभी विकल्प लिखिए—**

1. गंगा (**पसर**) वर्तमानकाल	2. जाआ (**बिह**) वर्तमानकाल
3. सद्धा (**वड्ढ**) विधि एवं आज्ञा	4. सिक्खा (**पसर**) भविष्यत्काल
5. वाया (**थक्क**) वर्तमानकाल	6. पण्णा (**सिज्झ**) विधि एवं आज्ञा
7. करुणा (**फुर**) भविष्यत्काल	8 कमला (**हो**) वर्तमानकाल
9. धूआ (**हरिस**) विधि एवं आज्ञा	10. ससा (**छज्ज**) वर्तमानकाल
11 अहिलासा (**उवसम**)भविष्यत्काल	12. माया (**उल्लस**) भूतकाल
13. वाया (**फुर**) विधि एवं आज्ञा	14. परिक्खा (**हव**) भविष्यत्काल
15. धूआ (**छुब्भ**) वर्तमानकाल	16. महिला (**उच्छह**) विधि एवं आज्ञा
17. कन्ना (**चिराव**) भविष्यत्काल	18 णिद्दा (**वड्ढ**) विधि एवं आज्ञा
19. सुया (**खास**) वर्तमानकाल	20. महिला (**चेट्ठ**) विधि एवं आज्ञा
21. सरिआ (**सुक्ख**) भूतकाल	22 गड्डा (**वड्ढ**) वर्तमानकाल
23. मेहा (**विअस**) विधि एवं आ	24. तणया (**बिह**) वर्तमानकाल
25 नणन्दा (**गडयड**) भविष्यत्काल	26. तण्हा (**हु**) विधि एवं आज्ञा
27. धूआ (**उवरम**) वर्तमानकाल	28. सुया (**उस्सस**) विधि एवं आज्ञा
29. गुहा (**नस्स**) भविष्यत्काल	30. सोहा (**खय**) वर्तमानकाल
31. मइरा (**छुट्ट**) विधि एवं आज्ञा	3 . पइट्ठा (**वड्ढ**) विधि एवं आज्ञा
33. सीया (**सिज्झ**) वर्तमानकाल	34 आणा (**फुर**) वर्तमानकाल
35. जरा (**वड्ढ**) वर्तमानकाल	36. जउणा (**सुक्ख**) भविष्यत्काल
37. कहा (**हव**) भविष्यत्काल	38 कलसिया (**चुअ**) वर्तमानकाल
39 संझा (**हो**) भविष्यत्काल	40. निसा (**हव**) वर्तमानकाल

उदाहरण—

गंगा पसरइ/पसरेइ/पसरए/पसरदि/पसरदे।

(ग-1) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. सुया (बिह, लोट्ट)	2. नणन्दा (गड्यड, रुव)
3. कन्ना (चिराव, खिस)	4. धूआ (रुव, लज्ज)
5. माया (गड्यड, उवसम)	6. कन्ना (उवसम, उवविस)
7. ससा (खास, उवरम)	8. महिला (छज्ज, कुद्द)
9. जाआ (उस्सस, थंभ)	10. झुंपडा (वस, हो)

उदाहरण—

सुया बिहिऊरण/बिहिऊणं/बिहिउं/बिहिय/बिहिदूण/बिहिदूण/बिहित्ता लोट्टीअ।

(ग-2) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुये निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एव कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. ससा (उवसम, उवविस)	2. सिक्खा (वड्ढ, पसर)
3. जाआ (चिट्ठ, लोट्ट)	4 महिला (उच्छह, चेट्ठ)
5. तण्हा (जग्ग, उवसम)	6. तणया (उवविस, थंभ)
7. कन्ना (लोट्ट, उट्ठ)	8 कमला (वड्ढ, सोह)
9 ससा (हरिस, ऊतर)	10. धूआ (थंभ, कील)

उदाहरण—

ससा उवसमिउं उवसमेउं/उवसमिदुं/उवसमेदुं उवविसउ/उवविसदु/उवविसेउ/उवविसेदु।

(ग-3) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. धूआ (थंभ, चिट्ठ)
2. सुया (कील, हरिस)
3. जाआ (बिह, पला)
4. महिला (चुक्क, खिज्ज)
5. ससा (हरिस, घुम)
6. णणन्दा (खंज, कुद्द)
7. कन्ना (चिराव, चिट्ठ)
8. झुंपडा (वस, हो)
9. करुणा (सोह, फुर)
10. माया (लोट्ट, चेट्ठ)

उदाहरण—

धूआ थंभिऊण/थंभिऊणं/थंभिउं/थंभिय/थंभित्ता/थंभिदूण/थंभि णं चिट्ठिहिइ/चिट्ठिहिए/चिट्ठिहिदि/चिट्ठिहिदे/चिट्ठिस्सइ/चिट्ठिस्सए/चिट्ठिस्सदि/चिट्ठिस्सदे/चिट्ठिस्सिदि/चिट्ठिस्सिदे।

(घ) नीचे आकारान्त संज्ञाएं विभक्ति-प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. परिक्खा
2. ससा
3. माया
4. करुणा
5. वाया
6. आणा
7. णम्मया
8. भुक्खा
9. कलसिया
10. गुहा
11. मइरा
12. धूआ
13. महिला
14. तिसा
15. निसा
16. कहा
17. गंगा
18. अहिलासा
19. तण्हा
20. सोहा
21. झुंपडा
22. सरिआ
23. णणन्दा
24. सीया

25. जरा 24. णिद्दा 27. पसंसा

28. जाग्रा 29. सद्धा 30. मेहा

उदाहरण —

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
परिक्खा	अन्यपुरुष	एकवचन	परिक्खा	स्त्रीलिंग	'०' (शून्य)

अभ्यास-18

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए । संज्ञा, कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. माताएँ प्रसन्न होती हैं । 2. शिक्षाएँ फैलेंगी । 3. बहिनें शोभती हैं । 4. अभिलाषाएँ शान्त होंगी । 5. बेटियाँ प्रसन्न होवें । 6. गुफाएँ नष्ट होंगी । 7. पत्नियां डरती हैं । 8. परीक्षाएं होंगी । 9. स्त्रियां उत्साहित होवें । 10. कन्याएं देर करेंगी । 11. पुत्रियां खांसती हैं । 12. स्त्रियां तप करें । 13. खड्डे बढ़ते हैं । 14. पुत्रियां क्षुब्ध होती हैं । 15. बेटियां शान्त होती हैं । 16. ननदें नीचे आती हैं । 17. पुत्रियां सांस लेवें । 18. माताएँ बैठती हैं । 19. वाणियां सिद्ध होती हैं । 20. झोंपड़ियां शोभती हैं । 21 परीक्षाएं होती हैं । 22. पुत्रियां बैठती हैं । 23. नदियां सूखती हैं । 24. महिलाएँ प्रयत्न करती हैं । 25. वाणियां प्रकट होवें । 26. बहिनें ठहरेंगी । 27. पुत्रियां क्रीड़ाकर प्रसन्न होंगी । 28. बहिनें खेलने के लिए लड़ीं । 29. कन्याएं भागकर थकती हैं । 30. माताएं प्रसन्न होकर जीवें । 31. स्त्रियाँ थककर सोवें । 32. पुत्रियां नाचकर थकेंगी । 33. बहिनें शान्त होकर बैठें । 34 बेटियां प्रसन्न होकर ठहरेंगी । 35. शिक्षाएँ बढ़कर फैलें । 36. कन्याएँ डरकर रुकती हैं । 37. बेटियां लड़कर रोती हैं । 38. माताएँ डरकर शान्त होती हैं । 39. पत्नियां सोने के लिए ठहरें । 40 स्त्रियां उत्साहित होकर प्रयत्न करें । 41. तृष्णाएं छूटकर शान्त होवें । 42. पुत्रियां डरकर सोती हैं । 43. ननदें घूमने के लिए उठेंगी । 44. पुत्रियां रुककर बैठें । 45. कन्याएं रोकर देर करती हैं । 46. बहिनें खिसककर बैठती हैं । 47. पुत्रियां सोने के लिए रोती हैं । 48. माताएं जीने के लिए प्रयत्न करें । 49. पुत्रियां खेलने के लिए खुश होवेंगी। 50 कन्याएं नाचकर थकती हैं । 51. माताएं शान्त होकर बैठें । 52. बहिनें सोकर उठें । 53. ननदें थकने के लिए घूमें । 54. बहिनें जागने के लिए प्रयास करें । 55. कन्याएं सोने के लिए उठेंगी । 56. पुत्रियां नाचने के लिए प्रयास

नोट—इस अभ्यास-13 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 40 का अध्ययन कीजिए ।

करती हैं। 57. बहिनें उत्साहित होकर घूमेंगी। 58. पुत्रियां खेलने के लिए कूदेंगी। 59. कन्याएं मूर्च्छित होकर मरती हैं। 60. बहिनें घूमने के लिए रुकें।

उदाहरण —

माताएं प्रसन्न होती हैं—माया/मायाओ, मायाउ हरिसन्ति/हरिसेन्ति, हरिसन्ते/हरिसिरे।

(ख) **नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए —**

1. धूआ (**जंभा**) वर्तमानकाल	2 महिला (**हरिस**) विधि एवं आज्ञा
3 सिक्खा (**पसर**) भविष्यत्काल	4. माया (**हरिस**) वर्तमानकाल
5. सुया (**जोह**) विधि एवं आज्ञा	6. झुंपडा (**सोह**) वर्तमानकाल
7. परिक्खा (**हव**) भविष्यत्काल	8 तणया (**खास**) वर्तमानकाल
9. ससा (**थभ**) भविष्यत्काल	10. नणन्दा (**उस्सस**) भविष्यत्काल
11. कन्ना (**पला**) भूतकाल	12. वाया (**फुर**) विधि एवं आज्ञा
13. माया (**उवसम**) वर्तमानकाल	14. गुहा (**खय**) भविष्यत्काल
15. जाआ (**उवविस**) विधि एवं आ.	16. वाया (**सिज्झ**) वर्तमानकाल
17. सरिआ (**सुक्ख**) भविष्यत्काल	18 अहिलासा (**उवसम**) विधि एवं आज्ञा
19. सुया (**गडयड**) वर्तमानकाल	20. कलसिया (**लुढ**) वर्तमानकाल
21. माया (**चेट्ठ**) विधि एवं आज्ञा	22 ससा (**जुज्झ**) भविष्यत्काल
23. जाआ (**जागर**) वि. एवं आ.	24. कन्ना (**छज्ज**) भूतकाल
25. नणन्दा (**चिराव**) भविष्यत्काल	26 परिक्खा (**हव**) वर्तमानकाल
27. कन्ना (**उवविस**) वर्तमानकाल	28. सुया (**बिह**) भविष्यत्काल
29. माया (**खिज्ज**) वर्तमानकाल	30. धूआ (**कंद**) वर्तमानकाल
31. तणया (**खंज**) विधि एवं आज्ञा	32. सरिआ (**सुक्ख**) वर्तमानकाल
33. अहिलासा (**वड्ढ**) वर्तमानकाल	34. कलसिया (**तुट्ट**) भविष्यत्काल
35 ससा (**हरिस**) विधि एवं आज्ञा	36. सुया (**थंभ**) विधि एवं आज्ञा

37. महिला (विज्ज) भविष्यत्काल 38. कन्ना (खिस) वर्तमानकाल
39. नणन्दा (चुक्क) वर्तमानकाल 40 धूआ (उच्छह) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण—
धूआ/धूआउ/धूआओ जंभन्ति/जंभन्ते/जंभाइरे ।

(ग–1) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं । संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. ससा (कील, ठा) 2. कन्ना (बिह, चिट्ठ)
3. धूआ (जुज्झ, कंद) 4. माया (रुव, उवसम)
5. सुया (बिह, लोट्ट) 6. नणन्दा (छज्ज, कंद)
7. तण्हा (कंद, चिराव) 8 महिला (थंभ, उवविस)
9. झुंपडा (वस, हो) 10. कन्ना (णच्च थक्क)

उदाहरण—
ससा/ससाओ/ससाउ कीलिउं/कीलेउं/कीलिदुं/कीलेदुं ठाही/ठाहीअ/ठासी ।

(ग-2) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं । संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1 माया (हरिस, जीव) 2. जाआ (लोट्ट, चिट्ठ)
3. ससा (जागर, चड्ढ) 4. नणन्दा (थक्क, घुम)
5. सुया (थंभ, उवविस) 6. तण्हा (छुट्ट, उवसम)

7. सिक्खा (वड्ढ, पसर)　　8. माया (उच्छह, चेट्ठ)
9. ससा (उवसम, उवविस)　　10. धूआ (रम, कील)

उदाहरण—

माया/मायाओ/मायाउ हरिसिऊण/हरिसिऊणं/हरिसिदूण/हरिसिदूणं/हरिसिउं/हरिसिय/हरिसित्ता जीवन्तु/जीवेन्तु ।

(ग-3) नीचे आकारान्त स्त्रीलिंग सञ्ज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। सञ्ज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. कन्ना (लोट्ट, उट्ठ)　　2. ससा (हरिस, घुम)
3. धूआ (कील, रम)　　4. सिक्खा (वड्ढ,पसर)
5. गुहा (जल, नस्स)　　6. सुया (कंद, चिट्ठ)
7. जाआ (बिह, पला)　　8. महिला (जागर, उट्ठ)
9. झुंपडा (वस, हो)　　10. नणन्दा (जोह, कन्द)

उदाहरण—

कन्ना/कन्नाओ/कन्नाउ लोट्टिऊण/लोट्टिऊणं/लोट्टिदूण/लोट्टिदूणं/लोट्टिउं/लोट्टिय/लोट्टित्ता उट्ठिस्सन्ति/उट्ठिस्सन्ते/उट्ठिस्सइरे/उट्ठिहिन्ति/उट्ठिहिन्ते/उट्ठिहिइरे/उट्ठिस्सिन्ति/उट्ठिस्सिन्ते/उट्ठिस्सिइरे ।

(घ) नीचे आकारान्त संज्ञाएं विभक्ति-प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. सीया　　2. परिक्खा　　3. मायाओ
4. कहाउ　　5. तणयाओ　　6. अहिलासा
7. गंगाओ　　8. नणन्दाउ　　9. महिलाओ
10. निसाउ　　11. सरिआ　　12. सिक्खा

13. झुंपडाओ	14. कलसिया	15. गड्डाउ
16. जाआउ	17. गुहाओ	18. कन्नाउ
19. पसंसाओ	20. धूआओ	21. महिलाउ
22. सीयाओ	23. झुंपडा	24. ससा
25. सुयाओ	26. वायाओ	27. सरिआउ
28. माया	29. सिक्खाओ	30. निसाओ

उदाहरण –

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
सीया	अन्यपुरुष	एकवचन व बहुवचन	सीया	स्त्रीलिंग	शून्य

अभ्यास-19

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए । संज्ञा, कृदन्त एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. ऊँट बैठता है । 2. विमान उड़ें । 3. परीक्षा होवेगी । 4. कुत्ता भोंकता है । 5. कन्याएँ नाचीं । 6. शासन फैले । 7. पुस्तकें जलती हैं । 8 सुख बढ़े । 9. बहिनें खेलती हैं । 10. राजा प्रसन्न होवे । 11. गठरी लुढ़कती है । 12 छोटे घड़े टूटते हैं । 13. पोता प्रसन्न होवे । 14. नागरिक जागेंगे । 15. लक्ष्मी बढ़ती है । 16. मेघ गरजते हैं । 17. वैराग्य बढ़े । 18. अभिलाषाएं शान्त होंगी । 19. वस्त्र सूखता है । 20. रूप खिलेगा । 21. शिक्षा फैलेगी । 22. मामा उठे । 23 पानी टपकता है । 24. नदियाँ सूखेंगी । 25. अपयश फैलता है 26. दुःख छूटे । 27. गुफाएँ नष्ट हुईं । 28. व्रत शोभते हैं । 29. ज्ञान सिद्ध हो । 30. बहिनें ठहरेंगी । 31. पुत्र कांपता है । 32. सदाचार शोभे । 33. प्यास शान्त होवे । 34. राक्षस मरे । 35. बीज उगेंगे । 36. महिलाएँ उत्साहित हों । 37. सिंह भागते हैं । 38. सत्य खिले । 39. वाणी थकती है । 40. राक्षस कूदकर मरते हैं । 41. नागरिक जागने के लिए प्रयत्न करेगा । 42. पुत्री लड़कर रोती है । 43. बालक रोकर सोयेंगे । 44. विमान ठहरकर उड़ेगा । 45. तृष्णा छूटकर शान्त होवे । 46. सूर्य उगकर शोभा । 47. मनुष्य जीने के लिए प्रयास करे । 48. पुत्रियां खेलने के लिए खुश होंगी । 49. मामा थककर बैठते हैं । 50. धागा गलकर टूटता है । 51. कन्या देरी करके उठती है । 52. रत्न गिरकर टूटेगा । 53. राज्य फैलने के लिए लड़ते हैं । 54. बेटी ठहरकर उठेगी । 55. पुस्तकें जलकर नष्ट होता हैं । 56. नागरिक प्रयास करके खेलें । 57. बहिन खुश होकर घूमेगी । 58. सर्प डरकर भागे । 59. माताएँ जीने के लिए प्रयत्न करे ।

उदाहरण

करहो बइसइ/बइसेइ/बइसए/बइसदि/बइसदे ।

नोट—इस अभ्यास-19 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 30 से 40 का अध्ययन कीजिए ।

(ख) **नीचे संज्ञाएं तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। निर्दिष्ट कालों में किसी भी वचन में वाक्य बनाइए। सभी विकल्प लिखिए—**

1. कुक्कुर (**बुक्क**) वर्तमानकाल
2. पत्त (**सुक्ख**) विधि एवं आज्ञा
3. सिक्खा (**पसर**) भविष्यत्काल
4. पोत्त (**णच्च**) वर्तमानकाल
5. लक्कुड (**जल**) विधि एवं आज्ञा
6. अहिलासा (**उवसम**) भविष्यत्काल
7. परिक्खा (**हव**) भविष्यत्काल
8. वत्थ (**सुक्ख**) विधि एवं आज्ञा
9. पुत्त (**कुद्द**) भूतकाल
10. माया (**थंभ**) भविष्यत्काल
11. खीर (**चुअ**) विधि एवं आज्ञा
12. वय (**गल**) वर्तमानकाल
13. घर (**पड**) वर्तमानकाल
14. सासण (**पसर**) विधि एवं आज्ञा
15. मेहा (**विअस**) भविष्यत्काल
16. मेह (**गज्ज**) वर्तमानकाल
17. रज्ज (**चेट्ठ**) विधि एवं आज्ञा
18. कन्ना (**चिराव**) भविष्यत्काल
19. माउल (**पला**) वर्तमानकाल
20. जोव्वण (**विअस**) वर्तमानकाल
21. कमला (**सोह**) वर्तमानकाल
22. दुक्ख (**गल**) विधि एवं आज्ञा
23. वेरग्ग (**वड्ढ**) विधि एवं आज्ञा
24. पण्णा (**सिज्झ**) विधि एवं आज्ञा
25. हुअवह (**जल**) भविष्यत्काल
26. रज्ज (**उच्छह**) भविष्यत्काल
27. तिसा (**उवसम**) भविष्यत्काल
28. मेहा (**विअस**) वर्तमानकाल
29. विमाण (**उड्ड**) भूतकाल
30. आगम (**सोह**) विधि एवं आज्ञा
31. वाया (**सिज्झ**) वर्तमानकाल
32. णयरजण (**चेट्ठ**) विधि एवं आज्ञा
33. महिला (**उच्छह**) विधि एवं आ.
34. णर (**उज्जम**) भविष्यत्काल
35. बीअ (**उग**) भविष्यत्काल
36. गुहा (**नस्स**) भविष्यत्काल
37. दुज्जस (**पसर**) वर्तमानकाल
38. सील (**सोह**) विधि एवं आज्ञा
39. ससा (**चिट्ठ**) भविष्यत्काल
40. करह (**णच्च**) वर्तमानकाल

उदाहरण—

कुक्कुरो बुक्कइ/बुक्केइ/बुक्कए/बुक्कदि/बुक्कदे।

(ग-1) नीचे संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में कहीं एकवचन व कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया) के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये तथा दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल या भूतकाल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. कुक्कुर (बुक्क, उवविस)	2. सलिल (चुअ, पसर)
3. ससा (खास, उट्ठ)	4. णर (उपज्ज, मर)
5. गाण (गुंज फुर)	6. सुया (लोट्ट, कंद)
7. दिअर (वल, उवविस)	8. णर (उट्ठ, उवविस)
9. झुंपडा (वस, हो)	10. वसण (छुट्ट, नस्स)

उदाहरण—

कुक्कुरा बुक्किऊण/बुक्किऊणं/बुक्किदूण/बुक्किदूणं/बुक्किय/बुक्किउं/बुक्कित्ता उवविसीअ।

(ग-2) नीचे संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं में कहीं एकवचन व कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा, क्रिया एव कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. रहुणन्दण (हरिस, अच्छ)	2. रज्ज (पसर, सोह)
3. गाण (गुंज, फुर)	4. महिला (उच्छह, चेट्ठ)
5. गाम (वस, पसर)	6. वसण (छुट्ट, नस्स)
7. जणेर (हस, जीव)	8. दिवायर (सोह, उग)
9. ससा (उवसम, उवविस)	10. सिक्खा (वड्ढ, पसर)

उदाहरण—

रहुणन्दण हरिसिऊण/हरिसिऊणं/हरिसिदूण/हरिसिदूणं/हरिसिय/हरिसिउं/
हरिसित्ता अच्छउ/अच्छेउ/अच्छदु/अच्छेदु ।

(ग-3) नीचे संज्ञाएं तथा कोष्ठक में दो क्रियाएं दी गई हैं । संज्ञाओं में कहीं एकवचन व कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट क्रियाओं में से किसी एक में कहीं सम्बन्धक भूतकृदन्त के, कहीं हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिए तथा दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल के प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये । संज्ञा, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. सुत्त (गल, तुट्ट)	2. रयण (पड, तुट्ट)
3. विमाण (ठा, उड्ड)	4. धूआ (थंभ, चिट्ठ)
5. सुया (खेल, रम)	6. ससा (हरिस, कील)
7. घर (पड, नस्स)	8 उदग (सुक्ख, णिज्झर)
9. गंथ (जल, नस्स)	10 महिला (उच्छह, चेट्ठ)

उदाहरण—

सुत्तं गलिऊण/गलिऊणं/गलिदूण/गलिदूणं/गलिय/गलिउं/गलित्ता तुट्टिहिइ/
तुट्टिहिए/तुट्टिहिदि/तुट्टिहिदे/तुट्टिस्सइ/तुट्टिस्सए/तुट्टिस्सदि/तुट्टिस्सदे/
तुट्टिस्सिदि/तुट्टिस्सिदे ।

(घ) नीचे संज्ञाएं विभक्ति-प्रत्ययसहित दी गई हैं। उनके पुरुष, वचन, मूलसंज्ञा, लिंग एवं प्रत्यय लिखिए—

1. सोक्खाइं	2 ससाओ	3. पुत्तो
4. विमाणाणि	5. तणयाउ	6 वया
7. रज्जाइं	8. माया	9. सप्पो
10. लक्कुडं	11. मेहाओ	12. आगमो
13. सासणाइं	14. परिक्खा	15. परमेसरो

16. छिक्कं	17. सुयाओ	18. रयणाइं
19. वत्थाइं	20. आणा	21. अवयसो
22 भोयणं	23. राया	24. सरिआ
25. खेत्तं	26. करुणाओ	27. भवो
28 उदगं	29. सायरा	30. धणाइं

उदाहरण –

	पुरुष	वचन	मूलसंज्ञा	लिंग	प्रत्यय
सोक्खाइं	अन्यपुरुष	बहुवचन	सोक्ख	नपुंसकलिंग	इं→आइं

अभ्यास-20

(क-1) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. हस	2. सय	3. णच्च
4. रूस	5. लुक्क	6. जग्ग
7. जीव	8. कंद	9 हरिस

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
हस	हसिअ/हसिय/हसित/हसिद	हसिओ/हसियो/हसितो/हसिदो ।

(क-2) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए-

1. वड्ढ	2. विग्रस	3 गुंज
4. कुद्द	5. जागर	6. विज्ज
7. छुट्ट	8. बस	9. चुक्क

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
वड्ढ	वड्ढिअ/वड्ढिय/वड्ढित/वड्ढिद	वड्ढिअं/वड्ढियं/वड्ढितं/वड्ढिदं

नोट—इस अभ्यास-20 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 42 का अध्ययन कीजिए।

(क-3) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. णच्च	2. खय	3. जल
4. सोह	5. सुक्ख	6. पला
7. ठा	8. बुक्क	9. उग

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
णच्च	णच्चिअ/णच्चिय/णच्चित/णच्चिद	णच्चिआ/णच्चिया/णच्चिता/णच्चिदा

(क-4) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. विअस	2 हो	3. उवविस
4. खास	5. उवसम	6. थंभ
7. ऊतर	8. तुट्ट	9. उड्ड

उदाहरण —

	भूतकालिक कृदन्त	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
विअस	विअसिअ	विअसिआइं/विअसिआइँ/विअसिआणि

(क-5) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उन्हें आकारान्त बनाकर स्त्रीलिंग बनाइए। फिर उनमें आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए —

1. उट्ठ	2. ठा	3. हस

4. लज्ज	5. अच्छ	6. णिज्झर
7. मर	8. खेल	9. कुल्ल

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	आकारान्त में परिवर्तन	आका. स्त्री. संज्ञाओं के समान प्रथमा एकव.
उट्ठ	उट्ठिअ/उट्ठिय/ उट्ठित/उट्ठिद	उट्ठिआ/उट्ठिया/ उट्ठिता/उट्ठिदा	उट्ठिआ/उट्ठिया/ उट्ठिता/उट्ठिदा

(क–6) निम्नलिखित क्रियाओं से भूतकालिक कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उन्हें आकारान्त बनाकर स्त्रीलिंग बनाइए। फिर उनमें आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए —

1. जग्ग	2. छुज्ज	3. बिह
4 पसर	5. थंभ	6. उस्सस
7. हव	8. उच्छह	9. चेट्ठ

उदाहरण—

	भूतकालिक कृदन्त	आकारान्त में परिवर्तन	आकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
जग्ग	जग्गिअ/जग्गिय/ जग्गित/जग्गिद	जग्गिआ/जग्गिया/ जग्गिता/जग्गिदा	जग्गिआ/जग्गिआउ/ जग्गिआओ/जग्गिया/ जग्गियाउ/जग्गियाओ/ जग्गिता/जग्गिताउ/ जग्गिताओ/जग्गिदा/ जग्गिदाउ/जग्गिदाओ

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। संज्ञाओं व सर्वनामों के लिंग व वचन के अनुरूप भूतकालिक कृदन्त बनाकर उसके सभी विकल्प लिखिए—

1 राजा हँसा। 2. पुत्र उठा। 3. व्रत गला। 4. रत्न गिरा। 5. अग्नि जली। 6. अपयश फैला। 7. पुस्तक नष्ट हुई। 8. बालक रोया। 9. हनुमान कूदा। 10 राक्षस मरा। 11. मेघ गरजे। 12. राजा हँसे। 13. पुत्र उठे। 14. व्रत गले। 15. रत्न गिरे। 16. वस्त्र सूखे। 17. गांव बसे। 18. पोते बैठे। 19. विमान उड़े। 20. शासन फैले। 21. राज्य बढ़ा। 22 गठरी लुढ़की। 23. सदाचार प्रकट हुआ। 24. रूप खिला। 25. लकड़ी जली। 26. जंगल नष्ट हुआ। 27. सिर दुःखा। 28 सत्य खिला। 29. विमान उड़े। 30. कागज सूखे। 31. सुख बढ़े। 32. राज्य फैले। 33. लकड़ियाँ जलीं। 34. व्यसन छूटे। 35. वस्त्र सूखे। 36. धागे टूटे। 37. गीत गूंजे। 38. खेत शोभे। 39. परीक्षा हुई। 40. बहिन रुकी। 41. झोंपड़ी शोभी। 42. शिक्षा फैली। 43 नदी सूखी। 44 बेटी सोयी। 45. यमुना फैली। 46 पत्नी डरी। 47. पुत्री ठहरी। 48. प्रशंसा फैली। 49. पुत्रियां बैठीं। 50. परीक्षाएँ हुईं। 51. बहिनें रुकीं। 52. शिक्षाएं फैलीं। 53. बेटियां सोयीं। 54. पुत्रियां जागीं। 55. नदियां सूखीं। 56. अभिलाषाएं बढ़ीं। 57. झोंपड़ियां बसीं। 58. गुफाएं नष्ट हुईं। 59. मैं जागा। 60. वह ठहरा। 61. तुम प्रसन्न हुए। 62. मैं बैठी। 63. तुम सोये। 64. वह हंसी। 65. मैं भागा। 66. वह मुड़ा। 67. तुम उठे। 68. वह खेला। 69. हम सब जागे। 70. वे सब ठहरे। 71. तुम सब प्रसन्न हुए। 72. हम दोनों बैठे। 73 तुम सब सोये। 74. वे सब कूदे। 75. हम दोनों भागे। 76. वे दोनों मुड़े। 77. तुम दोनों उठे। 78. वे सब खेले।

उदाहरण—

राजा हँसा=नरिंदो हसिओ/हसियो/हसितो/हसिदो।

(ग-1) नीचे दी गई पुल्लिंग संज्ञाओं का (कर्त्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या प्रथमा बहुवचन में प्रयोग कीजिए, कोष्ठक में दी गई क्रियाओं का भूतकालिक कृदन्त के रूप में प्रयोग कीजिए। मध्य में दी गई क्रियाओं में सम्बन्धक भूतकृदन्त अथवा हेत्वर्थक कृदन्त का कोई एक प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। संज्ञा एवं भूतकालिक कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. कुक्कुर, बुक्क (अच्छ)
2. पुत्त, बिहृ (कंद)
3. गंथ, जल (नस्स)
4. मित्त, हरिस (जीव)
5. पोत्त, णच्च (उट्ठ)
6. रयण, पड (तुट्ट)
7. माउल, जागर (डुल)
8. करह, थक्क (णच्च)
9 दुह, गल (नस्स)
10. वय, तुट्ट (गल)

उदाहरण—
कुक्कुरो बुक्किऊण अच्छिओ/अच्छियो/अच्छितो/अच्छिदो ।

(ग-2) नीचे दी गई नपुंसकलिंग संज्ञाओं का (कर्त्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए, कोष्ठक में दी गई क्रियाओं का भूतकालिक कृदन्त के रूप में प्रयोग कीजिए और मध्य में दी गई क्रियाओं में सम्बन्धक भूतकृदन्त अथवा हेत्वर्थक कृदन्त का कोई एक प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा एव भूतकालिक कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1 विमाण, उड्ड (थंभ)
2. सासण, पसर (वड्ढ)
3 लक्कुड, नस्स (जल)
4. णयरजण, कुद् (पला)
5. सुत्त, गल (तुट्ट)
6. पोट्टल, लुढ (पड)
7. घय, चुअ (पसर)
8. भय, खय (पला)
9. बीअ, उग (वड्ढ)
10. रिण, छुट्ट (नस्स)

उदाहरण—
विमाणं उड्डिउं थंभिअं ।

(ग-3) नीचे दी गई स्त्रीलिंग संज्ञाओं का (कर्त्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए, कोष्ठक में दी गई क्रियाओं का भूतकालिक कृदन्त के रूप में प्रयोग कीजिए तथा मध्य में दी गई क्रियाओं में सम्बन्धक भूतकृदन्त अथवा हेत्वर्थक कृदन्त का कोई एक प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइये। संज्ञा एवं भूतकालिक कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. सीया, थक्क (लोट्ट)	2. धूआ, बिह (कंद)
3. ससा, णच्च (थक्क)	4. महिला, डर (पला)
5. तणया, जुज्झ (रुव)	6. जाआ, उवसम (उवविस)
7. तण्हा, छुट्ट (नस्स)	8. झुंपडा, वस (हुव)
9. पसंसा, वड्ढ (पसर)	10. कन्ना, कुद्द (चिट्ठ)

उदाहरण—

सीया थक्किदूण लोट्टिआ ।

(ग-4) नीचे दिए गए पुरुषवाचक सर्वनामों का (कर्त्तारूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए कोष्ठक में दी गई क्रियाओं का भूतकालिक कृदन्त के रूप में प्रयोग कीजिए तथा मध्य में दी गई क्रियाओं में सम्बन्धक भूतकृदन्त या हेत्वर्थक कृदन्त का कोई एक प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाइए। पुरुषवाचक सर्वनाम तथा भूतकालिक कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. त, णच्च (थक्क)	2. अम्ह, डर (पला)
3. तुम्ह, उच्छह (उज्जम)	4. ता, खेल (सय)
5. त, मर (कुल्ल)	6 अम्ह, चिराव (ऊतर)
7. तुम्ह, थक्क (घुम)	8. ता, कंद (मुच्छ)
9. अम्ह, हरिस (कील)	10. त, कलह (लज्ज)

उदाहरण—

सो णच्चिऊणं थक्किओ/थक्कियो/थक्कितो/थक्किदो ।

(घ) निम्नलिखित भूतकालिक कृदन्तों की मूलक्रिया, लिंग, वचन एवं प्रत्यय लिखिए —

1. हसिअ	2. विअसिआइं	3. उट्ठिआउ
4. ठाओ	5. बिहिआओ	6. थभिआओ
7. दुक्खियं	8. चुक्किआ	9. कुद्दिआओ
10. सुक्खिआउ	11. खेलिआइँ	12. उवसमिआओ
13. गलिआणि	14. नस्सिअं	15. हरिसिआ
16. णच्चिअं	17. जीविओ	18. अच्छिआइँ
19. लुक्किआओ	20. जग्गिआउ	21. जागरिआ
22. होआइं	23. सयिओ	24. ऊतरिआओ
25. जुज्झिआइं	26. घुमिअं	27. डरिआइं
28. उज्जमिआ	29. लज्जिआओ	30. दुक्खिआणि

उदाहरण —

	मूलक्रिया	लिंग	वचन	प्रत्यय
हसिआ	हस	पु., नपु./ स्त्रीलिंग	बहुवचन/ एकवचन, बहुवचन	अ

अभ्यास-21

(क-1) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. हस	2. डर
3. सय	4. णच्च
5. रूस	6. लज्ज

उदाहरण—

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
हस	हसन्त/हसमाण	हसन्तो/हसमाणो

(क-2) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. हस	2. णच्च
3. खय	4. जल
5. सोह	6. उवसम

उदाहरण—

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
हस	हसन्त/हसमाण	हसन्ता/हसमाणा

नोट—इस अभ्यास-21 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 43 का अध्ययन कीजिए।

(क–3) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. वड्ढ	2. विअस
3 गुंज	4 कुद्द
5. जागर	6. ऊतर

उदाहरण —

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
वड्ढ	वड्ढन्त/वड्ढमाण	वड्ढन्तं/वड्ढमाणं

(क-4) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उनमें अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए —

1. विअस	2. हो
3. थंभ	4. तुट्ट
5. उड्ड	6. डर

उदाहरण —

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
विअस	विअसन्त/विअसमाण	विअसन्ताइं/विअसन्ताइँ/विअसन्ताणि/ विअसमाणाइं/विअसमाणाइँ/विअसमाणाणि

(क-5) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उन्हें आकारान्त बनाकर स्त्रीलिंग बनाइए। फिर उनमें आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन के प्रत्यय लगाइए —

1. गच्च	2. उट्ठ

3. लज्ज	4 हस
5. डुल	6. रूस

उदाहरण —

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	आकारान्त में परिवर्तन	आका. स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा एकवचन
णच्च	णच्चन्त/ णच्चमाण	णच्चन्ता/ णच्चमाणा	णच्चन्ता/णच्चमाणा

(क-6) निम्नलिखित क्रियाओं से वर्तमान कृदन्त बनाइए। तत्पश्चात् उन्हें आकारान्त बनाकर स्त्रीलिंग बनाइए। फिर उनमें आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. सय	2. जग्ग
3. बिह	4. थभ
5. चेट्ठ	6. हरिस

उदाहरण —

क्रिया	वर्तमान कृदन्त	आकारान्त में परिवर्तन	आका. स्त्रीलिंग संज्ञाओं के समान प्रथमा बहुवचन
सय	सयन्त/सयमाण	सयन्ता/सयमाणा	सयन्ता/सयन्ताउ/ सयन्ताओ/सयमाणा/ सयमाणाउ/सयमाणाओ

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। कर्त्ता के लिंग व वचन के अनुरूप (पुल्लिग व नपुंसकलिंग में अकारान्त तथा स्त्रीलिंग में आकारान्त संज्ञाओं के प्रत्ययों से) वर्तमान कृदन्त बनाकर उनके सभी विकल्प लिखिए—

1. पुत्र शरमाता हुआ बैठता है। 2. कुत्ता भोंकता हुआ भागता है। 3. राक्षस कांपते हुए बैठते हैं। 4 बालक डरता हुआ रोता है। 5. अग्नि जलती हुई

नष्ट होती है। 6. ऊँट नाचते हुए थकते हैं। 7. सदाचार बढ़ता हुआ खिलता है। 8 लकड़ियाँ जलती हुई नष्ट होती हैं। 9. वैराग्य बढ़ता हुआ शोभता है। 10. माता उत्साहित होती हुई बैठती है। 11. प्रतिष्ठा बढ़ती हुई शोभती है। 12. महिलाएं अफसोस करती हुई घूमती हैं। 13. श्रद्धा बढ़ती हुई शोभती है। 14 कर्म गलते हुए छूटते हैं। 15. वह शरमाता हुआ छिपता है। 16. मैं खेलता हुआ खुश होता हूँ। 17. तुम नाचते हुए थकते हो। 18. वे सब रोते हुए लड़ते हैं। 19. हम सब खेलते हुए खुश होते हैं। 20. तुम सब कलह करती हुई लड़ती हो। 21. मनुष्य हंसता हुआ जीवे। 22. पिता खुश होता हुआ प्रयास करे। 23. बालिका उत्साहित होती हुई प्रयत्न करे। 24. महिलाएं उत्साहित होती हुई प्रयत्न करें। 25. कन्या शान्त होती हुई बैठे। 26. तुम प्रसन्न होते हुए खेलो। 27 मैं खुश होते हुए नाचूं। 28. तुम सब हँसते हुए बैठो। 29. हम सब भागते हुए खेलें। 30. सत्य सिद्ध होता हुआ शोभेगा। 31. शिक्षा बढ़ती हुई फैलेगी। 32. कन्याएं नाचती हुई थकेंगी। 33. रत्न गिरते हुए टूटेंगे। 34. मनुष्य प्रयास करते हुए कूदेंगे। 35. पोता बैठता हुआ मुड़ेगा। 36. राक्षस कूदते हुए मरेंगे। 37. मैं हँसती हुई जीवूंगी। 38. तुम कूदते हुए थकोगे। 39. वह प्रसन्न होती हुई नाचेगी। 40. हम सब प्रयास करते हुए जागेंगे। 41. वे सब शान्त होती हुई बैठेंगी। 42. तुम सब डरते हुए छिपोगे। 43. घी टपकता हुआ गिरा। 44. दादा प्रयास करता हुआ बैठा। 45. मित्र प्रयत्न करता हुआ प्रसन्न हुआ। 46. पोते लड़ते हुए कांपे। 47 पुत्र गिड़गिड़ाता हुआ मरा। 48. राक्षस छटपटाता हुआ मरा। 49. पानी टपकता हुआ सूखा। 50. नागरिक हँसता हुआ जीया। 51. पुत्री प्रसन्न होती हुई उठी। 52. झोंपड़ियाँ बसती हुई नष्ट हुईं। 53. घास जलता हुआ नष्ट हुआ। 54 मैं खेलता हुआ प्रसन्न हुआ। 55. वह डरती हुई रोयी। 56. तुम अफसोस करते हुए बैठे। 57. वे सब रुकते हुए नीचे उतरे। 58. वे सब शान्त होती हुई बैठी। 59. हम सब कूदते हुए थके।

उदाहरण—

पुत्र शरमाता हुआ बैठता है=पुत्तो लज्जन्तो बइसइ/बइसेइ/बइसए/बइसदि/ बइसदे।

(ग-1) नीचे दिए गए संज्ञा-सर्वनामों का (कर्त्तारूप में) प्रथमा एकवचन या प्रथमा बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा कोष्ठक में दी गई दो क्रियाओं में से एक में वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया में वर्तमानकाल का प्रयोग कर वाक्य बनाइये—

1 करह (णच्च, थक्क) 2. वेरग्ग (वड्ढ, सोह)
3. झुंपडा (पड, नस्स) 4. ता (डर, पला)
5. अम्ह (कील, हरिस) 6 तुम्ह (उच्छह, चेट्ठ)

उदाहरण—

करहो णच्चन्तो थक्कइ/थक्केइ/थक्कए/थक्कदि/थक्कदे ।

(ग-2) नीचे दिए गए संज्ञा-सर्वनामों का (कर्त्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या प्रथमा बहुवचन में प्रयोग कीजिये तथा कोष्ठक में दी गई दो क्रियाओं में से एक में वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया में विधि एवं आज्ञा का प्रयोग कर वाक्य बनाइये—

1 रज्ज (वड्ढ, पसर) 2. महिला (उच्छह, चेट्ठ)
3. बालअ (उच्छह, खेल) 4. तुम्ह (हस, अच्छ)
5. अम्ह (पला, खेल) 6. त (उवसम बइस)

उदाहरण—

रज्जाइं/रज्जाइँ/रज्जाणि वड्ढन्ताइं/वड्ढन्ताइँ/वड्ढन्ताणि पसरन्तु/पसरेन्तु ।

(ग-3) नीचे दिए गए संज्ञा-सर्वनामों का (कर्त्तारूप में) प्रथमा एकवचन या प्रथमा बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा कोष्ठक में दी गई दो क्रियाओं में से एक में वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया में भविष्यत्काल का प्रयोग कर वाक्य बनाइए—

1. सच्च (सिज्झ, सोह) 2. रक्खस (कुल्ल, मर)

3. कन्ना (गच्च, थक्क) 4 (उवसम, अच्छ)

5. तुम्ह (डर, लुक्क) 6. अम्ह (चेट्ठ, जागर)

उदाहरण —

सच्चं सिज्झन्त सोहिहिइ/सोहिहिए/सोहिहिदि/सोहिहिदे/सोहिस्सइ/सोहिस्सए/सोहिस्सदि/सोहिस्सदे/सोहिस्सिदि/सोहिस्सिदे।

(ग-4) नीचे दिए गए संज्ञा-सर्वनामों का (कर्त्तारूप में) प्रथमा एकवचन या प्रथमा बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा कोष्ठक में दी गई दो क्रियाओं में से एक में वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दूसरी क्रिया मे भूतकाल के भाव को प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त या भूतकाल का प्रयोग कर वाक्य बनाइये—

1. पोत्त (जुज्झ, कंप) 2. पुत्त (गडयड, चिट्ठ)

3. सुया (हरिस, उट्ठ) 4. ता (डर, कंद)

5 तुम्ह (खिज्ज, उवविस) 6. अम्ह (कुद्द, थक्क)

उदाहरण—

पोत्तो जुज्झन्तो कंपीअ या पोत्तो जुज्झन्तो कंपिओ।

(घ) निम्नलिखित वर्तमान कृदन्तों की मूलक्रिया, लिंग, वचन एवं प्रत्यय लिखिए—

1. हसन्तो 2. विस्रसमाणाणि 3. वड्ढन्ताइ

4. कुद्दन्ताउ 5. रमन्ताओ 6. गुंजमाणाणि

7. चिट्ठन्ता 8. चिरावमाणा 9. फुरन्ता

10. छुट्टन्तो 11. जागरन्ताइँ 12. छुट्टमाणो

13. थंभमाणाइं 14. खासन्ता 15. फुल्लन्ताउ

16. गडयडमाणाइँ   17. लज्जमाणो   18 डरन्तो

19. उट्ठन्ता   20. थक्कन्ताइं

उदाहरण—

	मूलक्रिया	लिंग	वचन	प्रत्यय
हसन्तो	हस	पुल्लिंग	एकवचन	न्त

अभ्यास-22

(क-1) निम्नलिखित अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के तृतीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. नरिंद	2. करह	3. दिवायर
4. मित्त	5. परमेसर	6. गंथ
7. रक्खस	8. मारुअ	9. पड

उदाहरण—

अकारान्त पु. सं.	तृतीया एकवचन	तृतीया बहुवचन
नरिंद	नरिंदेण/नरिंदेणं	नरिंदेहि/नरिंदेहिं/नरिंदेहिँ

(क-2) निम्नलिखित अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के तृतीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए –

1. कमल	2. रज्ज	3. पोट्टल
4. खेत्त	5. वत्थ	6. कम्म
7. लक्कुड	8. जीवण	9. धण

उदाहरण—

अकारान्त नपुं. सं.	तृतीया एकवचन	तृतीया बहुवचन
कमल	कमलेण/कमलेणं	कमलेहि/कमलेहिं/कमलेहिँ

(क-3) निम्नलिखित आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के तृतीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. ससा	2. माया	3. जरा

नोट—इस अभ्यास-22 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 45 का अध्ययन कीजिए।

4. कहा	5. कण्णा	6. झुंपडा
7. महिला	8. गंगा	9. सिक्खा

उदाहरण --

आकारान्त स्त्री. सं.	तृतीया एकवचन	तृतीया बहुवचन
ससा	ससाए/ससाइ/ससाअ	ससाहि/ससाहिं/ससाहिँ

(क-4) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के तृतीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए —

1. अम्ह	2. तुम्ह
3. त	4. ता

उदाहरण —

पुरुषवाचक सर्वनाम	तृतीया एकवचन	तृतीया बहुवचन
अम्ह	मइ/मए/मे/ममए	अम्हेहि/अम्हाहि

(ख) निम्नलिखित क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्त बनाइए। उनके नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन के रूप लिखिए —

1. हस	2. लज्ज	3. थक्क
4. पड	5. घुम	6. उच्छल
7. खेल	8. कुल्ल	9. जुज्झ
10. सय	11. बिह	12. पसर

उदाहरण—

क्रिया	भूतकालिक कृदन्त	नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन
हस	हसिअ/हसिय/हसित/हसिद	हसिअं/हसियं/हसितं/हसिदं

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। वाक्यों को बनाने के लिए संज्ञा-सर्वनाम में तृतीया एकवचन या बहुवचन का प्रयोग कीजिए। भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन में प्रयोग कीजिए—

1. राजा द्वारा हँसा गया। 2. कुत्ते द्वारा कूदा गया। 3. नागरिक द्वारा जागा गया। 4. पोते द्वारा कूदा गया। 5. कन्या द्वारा नाचा गया। 6. मित्र द्वारा प्रसन्न हुआ गया। 7. राक्षस द्वारा मरा गया। 8. परीक्षा द्वारा हुआ गया। 9. बेटी द्वारा खांसा गया। 10. समुद्र द्वारा सूखा गया। 11. विमान द्वारा उड़ा गया। 12. गठरी द्वारा लुढ़का गया। 13 सिंह द्वारा गरजा गया। 14. माता द्वारा खुश हुआ गया। 15 पत्नी द्वारा डरा गया। 16. ऊँट द्वारा बैठा गया। 17. पुत्र द्वारा सोया गया। 18. वस्त्र द्वारा सूखा गया। 19. उसके द्वारा थका गया। .0. तुम्हारे द्वारा देर की गई। 21. मेरे द्वारा बैठा गया। 22. राजाओं द्वारा हँसा गया। 23. मित्रों द्वारा प्रसन्न हुआ गया। 24. राक्षसों द्वारा मरा गया। 25. ·टियों द्वारा खांसा गया। 26. सिंहों द्वारा गरजा गया। 27. माताओं द्वारा खुश हुआ गया। 28. ऊँटों द्वारा बैठा गया। 29. पुत्रों द्वारा सोया गया। 30. कुत्तों द्वारा भौंका गया। 31 नागरिकों द्वारा जागा गया। 32. कन्याओं द्वारा नाचा गया। 33. समुद्रों द्वारा सूखा गया। 34. कूओं द्वारा सूखा गया। 35. रत्नों द्वारा शोभा गया। 36. राज्यों द्वारा लड़ा गया। 37. महिलाओं द्वारा शान्त हुआ गया। 38. विमानों द्वारा उड़ा गया। 39. कन्याओं द्वारा छिपा गया। 40 नागरिकों द्वारा अफसोस किया गया। 41. मामाओं द्वारा प्रसन्न हुआ गया। 42. राजाओं द्वारा उपस्थित हुआ गया। 43. बालकों द्वारा खेला गया। 44. तुम सब के द्वारा डरा गया। 45. उनके द्वारा थका गया। 46. हमारे द्वारा बैठा गया। 47. तुम सबके द्वारा देर की गई। 48. उन (स्त्रियों) के द्वारा सोया गया। 49. हमारे द्वारा घूमा गया।

उदाहरण—

राजा द्वारा हँसा गया=नरिंदेण/नरिंदेणं हसिअं।

(घ) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का कर्तृवाच्य तथा भाववाच्य में प्रयोग कीजिए। सभी विकल्प लिखिए—

1. मित्र प्रसन्न हुआ।	2. मित्र द्वारा प्रसन्न हुआ गया।
3. राजा हँसा।	4. राजा द्वारा हँसा गया।
5. राक्षस कूदे।	6. राक्षसों द्वारा कूदा गया।
7. बेटी खांसी।	8. बेटी द्वारा खांसा गया।
9. पोते कूदे।	10. पोतों द्वारा कूदा गया।
11. माताएँ खुश हुईं।	12. माताओं द्वारा खुश हुआ गया।
13. कुत्ता भौंका।	14. कुत्ते द्वारा भौंका गया।
15. पत्नी डरी।	16. पत्नियों द्वारा डरा गया।
17. पुत्र सोया।	18. पुत्रों द्वारा सोया गया।
19. नागरिक जागे।	20. नागरिकों द्वारा जागा गया।
21. ऊँट बैठा।	22. ऊँट द्वारा बैठा गया।
23. पानी झरा।	24. पानी द्वारा झरा गया।
25. अपयश फैला।	26. अपयश द्वारा फैला गया।
27. अग्नि जली।	28. अग्नि द्वारा जला गया।
29. प्रतिष्ठा कम हुई।	30. प्रतिष्ठा द्वारा कम हुआ गया।
31. सुख गला।	32. सुख द्वारा गला गया।
33. विमान उड़ा।	34. विमान द्वारा उड़ा गया।
35. गठरी लुढ़की।	36. गठरी द्वारा लुढ़का गया।
37. वस्त्र सूखा।	38. वस्त्र द्वारा सूखा गया।
39. पुस्तक जली।	40. पुस्तक द्वारा जला गया।
41. कन्याएं नाचीं।	42. कन्याओं द्वारा नाचा गया।
43. बादल गरजे।	44. बादलों द्वारा गरजा गया।

45. समुद्र सूखे ।

46. समुद्रों द्वारा सूखा गया ।

47. रत्न शोभे ।

48. रत्नों द्वारा शोभा गया ।

49. महिला शान्त हुई ।

50. महिला द्वारा शान्त हुआ गया ।

उदाहरण—

कर्तृवाच्य – मित्र प्रसन्न हुआ = मित्तो हरिसिओ ।

भाववाच्य—मित्र द्वारा प्रसन्न हुआ गया = मित्तेण/मित्तेणं हरिसिअं ।

अभ्यास-23

(क) निम्नलिखित वाक्यों को प्राकृत में रचना कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. राजा हँसता है। 2. राजा हँसे। 3. राजा हँसेगा। 4. राजा हँसा। 5. राजा द्वारा हँसा गया। 6. बालक बैठते हैं। 7. बालक बैठें। 8. बालक बैठेंगे। 9. बालक बैठे। 10. बालकों द्वारा बैठा गया। 11. विमान उड़ता है। 12. विमान उड़े। 13. विमान उड़ेगा। 14. विमान उड़ा। 15. विमान द्वारा उड़ा गया। 16. विमान द्वारा उड़ा जायेगा। 17. नागरिक उपस्थित होते हैं। 18 नागरिक उपस्थित होवें। 19. नागरिक उपस्थित होंगे। 20. नागरिक उपस्थित हुए। 21. नागरिकों द्वारा उपस्थित हुआ गया। 22. माता प्रसन्न होती है। 23. माता प्रसन्न होवे। 24. माता प्रसन्न होवेगी। 25. माता प्रसन्न हुई। 26. माता के द्वारा प्रसन्न हुआ गया। 27. कन्याएँ छिपती हैं। 28. कन्याएं छिपें। 29. कन्याएं छिपेंगी। 30. कन्याओं द्वारा छिपा गया। 31. वह जागता है। 32. वह जागे। 33. वह जागेगा। 34. वह जागा। 35. उसके द्वारा जागा गया। 36. तुम सब रुकते हो। 37. तुम सब रुको। 38. तुम सब रुकोगे। 39 तुम सब रुके। 40. तुम सब के द्वारा रुका गया। 41. मैं ठहरती हूँ। 42. मैं ठहरूँ। 43. मैं ठहरूँगी। 44. मैं ठहरी। 45. मेरे द्वारा ठहरा गया। 46. वे सब जागती हैं। 47. वे सब जागें। 48. वे सब जागेंगी। 49. वे सब जागीं। 50. उन सब के द्वारा जागा गया। 51. सीता सोने के लिए उठती है। 52. सीता सोने के लिए उठे। 53. सीता सोने के लिए उठी। 54. सीता सोने के लिए उठेगी। 55. सीता के द्वारा सोने के लिए उठा गया। 56. तुम नाचने के लिए उठते हो। 57. तुम नाचने के लिए उठो। 58 तुम नाचने के लिए उठोगे। 59. तुम नाचने के लिए उठे। 60. तुम्हारे द्वारा नाचने के लिए उठा गया।

उदाहरण—

राजा हँसता है=नरिंदो हसइ/हसेइ/हसए/हसदि/हसदे।

नोट—इस अभ्यास-23 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 1 से 45 तक दोहराएं।

(ख) निम्नलिखित संज्ञाओं एवं सर्वनामों के पुरुष, वचन, विभक्ति, लिंग, प्रत्यय एवं मूलशब्द लिखिए—

1. नरिंदो	2. पोत्तेहिं	3. णरेहिं
4. विमाणं	5. रज्जाइं	6. वेरग्गं
7. कमलाउ	8. तणयाए	9. ससाहिं
10. गंगाओ	11. करहो	12. गंथेणं
13. रहुणन्दणेहिं	14. दिवायरा	15. कूवा
16. णयरजणाणि	17. छिक्काणि	18. भोयणेहिं
19. कम्माइं	20. णाणेण	21. सो
22. तेण	23. ताउ	24. अम्हे
25. हं	26. तुम्हेहिं	27. ता
28. तेण	29. ताहिं	30. वयं

उदाहरण—

	पुरुष	वचन	विभक्ति	लिंग	प्रत्यय	मूलशब्द
नरिंदो	अन्यपुरुष	एकवचन	प्रथमा	पुल्लिग	ओ	नरिंद

(ग) निम्नलिखित कृदन्तों की मूलक्रिया, प्रत्यय एवं नाम बताइए तथा जहां सम्भव हो वहां विभक्ति, वचन एवं लिंग भी बताइए—

1. हसिओ	2. णच्चन्ता	3. जीविओ
4. रूसिआ	5. लुक्कन्तो	6. जग्गमाणो
7. सयिआ	8. लज्जिआइं	9. डरमाणाइं
10. अच्छन्ता	11. पडन्ताउ	12. उट्ठन्ताओ
13. घुमन्ताउ	14. उल्लसिआउ	15. णिज्झरिआ
16. जलन्तो	17. सुक्कन्ताइं	18. पसरमाणा
19. बुक्कमाणाइं	20. कंदन्ता	21. जलिउं

22. सोहिऊण	23. पसरेदुं	24. कंदित्ता
25. तुट्टाय	26. विग्रसेउं	27. हसिदुं
28. फुरेदूण	29. णच्चेउं	30. जग्गिदुं

उदाहरण—

	मूलक्रिया	प्रत्यय	कृदन्त	विभक्ति	वचन	लिंग
हसिग्रो	हस	ग्र	भूतका. कृ.	प्रथमा	एकवचन	पुल्लिग

———

अभ्यास-24

(क) निम्नलिखित क्रियाओं के भाववाच्य बनाइए। उनमें चारों कालों के अन्य पुरुष एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. हस	2. णच्च
3. लुक्क	4. गल
5. हरिस	6. उल्लस

उदाहरण—

	भाववाच्य	वर्तमानकाल	विधि एवं आ.	भूतकाल	भविष्यत्काल
हस	हसिज्ज/ हसीअ	हसिज्जइ/ हसीअइ/ हसिज्जए/ हसीअए/ हसिज्जदि/हसीअदि/ हसिज्जदे/हसीअदे	हसिज्जउ/ हसीअउ/ हसिज्जदु/ हसीअदु	हसिज्जईअ/ हसीअईअ	हसिहिइ/ हसिहिए/ हसिहिदि/ हसिहिदे

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। वाक्यों को बनाने के लिए संज्ञा व सर्वनाम में तृतीया एकवचन/बहुवचन का प्रयोग कीजिए। विभिन्न कालों को प्रकट करने के लिए क्रियाओं में भाववाच्य के प्रत्यय लगाने के पश्चात् अन्य-पुरुष एकवचन के प्रत्यय लगाइए—

1. राजा के द्वारा हँसा जाता है। 2. कमल के द्वारा खिला जाता है। 3. बहिन द्वारा जागा जाता है। 4. मेरे द्वारा नाचा जाता है। 5. तुम्हारे द्वारा कूदा जाता है। 6. उसके द्वारा उठा जाता है। 7 उस (स्त्री) के द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है। 8. राजाओं के द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है। 9. कमलों द्वारा खिला जाता है। 10. बहिनों द्वारा जागा जाता है। 11 हमारे द्वारा नाचा जाता है। 12. तुम सब के द्वारा कूदा जाता है। 13. उसके द्वारा उठा जाता है।

नोट—इस अभ्यास-24 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 47 का अध्ययन कीजिए।

14. उन (स्त्रियों) के द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है। 15. पुत्र के द्वारा खेला जाए। 16. नागरिक द्वारा उपस्थित हुआ जावे। 17. माता द्वारा बैठा जाए। 18. तुम्हारे द्वारा प्रयास किया गया। 19. मेरे द्वारा सोया जाए। 20. उसके द्वारा कूदा जाए। 21. उस (स्त्री) के द्वारा छिपा जाए। 22 पुत्रों के द्वारा खेला गया। 23. नागरिकों द्वारा उपस्थित हुआ जाए। 24. माताओं द्वारा बैठा जाए। 25. हमारे द्वारा सोया जाए। 26. तुम दोनों द्वारा प्रयास किया जाए। 27. उनके द्वारा कूदा गया। 28. उन (स्त्रियों) के द्वारा कूदा जाए। 29. कुत्ते द्वारा भोंका जाए। 30. विमान द्वारा उड़ा जायेगा। 31. कन्या के द्वारा खेला जायेगा। 32. उसके द्वारा उछला जायेगा। 33. उस (स्त्री) के द्वारा अफसोस किया जायेगा। 34. तुम्हारे द्वारा देर की जायेगी। 35 मेरे द्वारा प्रसन्न हुआ जायेगा। 36. कुत्तों के द्वारा भोंका जायेगा। 37. विमानों द्वारा उड़ा जायेगा। 38. कन्याओं द्वारा छिपा जायेगा। 39. उनके द्वारा उछला जायेगा। 40 हम सब के द्वारा खिला जायेगा। 41. उन (स्त्रियों) के द्वारा अफसोस किया जायेगा। 42. तुम सब के द्वारा देर की जायेगी।

उदाहरण —

राजा के द्वारा हँसा जाता है=नरिंदेण/नरिंदेणं हसिज्जइ/हसीअइ/हसिज्जए/हसिज्जदि।

(ग) नीचे संज्ञाएं व पुरुषवाचक सर्वनाम तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं व सर्वनामों में कहीं एकवचन, कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कालों में भाववाच्य के वाक्य बनाइए—

1. नरिंद (**हस**) वर्तमानकाल	2. कुक्कुर (**बुक्क**) वर्तमानकाल
3 मित्त (**हरिस**) विधि एवं आज्ञा	4. सीह (**गज्ज**) विधि एवं आज्ञा
5. महिला (**अच्छ**) विधि एवं आज्ञा	6. दिवायर (**उग**) भूतकाल
7. कमल (**विअस**) वर्तमानकाल	8. सील (**फुर**) विधि एवं आज्ञा
9. रज्ज (**उज्जम**) विधि एवं आज्ञा	10. विमाण (**उड्ड**) भूतकाल
11. सीया (**हस**) वर्तमानकाल	12. ससा (**जग्ग**) वर्तमानकाल
13. माया (**हरिस**) विधि एवं आ.	14. महिला (**उवसम**) विधि एवं आज्ञा
15. अम्ह (**कुल्ल**) भूतकाल	16. अम्ह (**खेल**) वर्तमानकाल

17. तुम्ह (हरिस) विधि एवं आ. 18. तुम्हे (उज्जम) विधि एवं आज्ञा
19. त (उवविस) भविष्यत्काल 20. ता (णच्च) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण —
नरिंदेण/नरिंदेणं हसिज्जइ/हसिज्जए/हसीअइ/हसिज्जदि/हसिज्जदे ।

(घ) निम्नलिखित भाववाच्यों की मूलक्रिया, पुरुष, वचन, प्रत्यय व काल लिखिए—

1. हसिज्जइ 2. गलिज्जइ 3. खयिहिइ
4. कीलिज्जइ 5 हसिज्जउ 6. वसिहिए
7. कुल्लिज्जए 8. अच्चिज्जउ 9. रुविज्जए
10. लोट्टिहिइ

उदाहरण—

भाववाच्य	मूलक्रिया	पुरुष	वचन	प्रत्यय	काल
हसिज्जइ	हस	अन्यपुरुष	एकवचन	इज्ज	वर्तमान

अभ्यास-25

(क) निम्नलिखित क्रियाओं में विधि कृदन्त के प्रत्यय लगाइए। उनके नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन के रूप लिखिए—

1. हस	2. लज्ज
3. कलह	4. अच्छ
5. घुम	6. उड्ड
7. उवसम	8. थंभ
9 कुद्द	10. जागर

उदाहरण—

क्रिया	विधि कृदन्त	विधि कृदन्त नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन
हस	हसितव्व/हसिअव्व/हसिदव्व/ हसेअव्व/हसेतव्व/हसेदव्व/ हसणीय	हसिअव्वं/हसितव्वं/हसिदव्वं/हसेअव्वं/ हसेतव्वं/हसेदव्वं/हसणीयं

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। इन वाक्यों को बनाने के लिए संज्ञा–सर्वनाम में तृतीया एकवचन/बहुवचन का, विधि के भावों को प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त के नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन का प्रयोग कीजिए—

1. राजा के द्वारा हँसा जाना चाहिए। 2. मित्र के द्वारा प्रसन्न हुआ जाना चाहिए। 3. पुत्र द्वारा सोया जाना चाहिए। 4. राजाओं के द्वारा हँसा जाना चाहिए। 5. मित्रों के द्वारा प्रसन्न हुआ जाना चाहिए। 6. पुत्रों के द्वारा सोया जाना चाहिए। 7. राज्य द्वारा लड़ा जाना चाहिए। 8. विमान द्वारा उड़ा जाना चाहिए। 9. राज्यों द्वारा लड़ा जाना चाहिए। 10 माता द्वारा खुश

नोट—इस अभ्यास-25 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 49 का अध्ययन कीजिए।

हुआ जाना चाहिए। 11. विमानों द्वारा उड़ा जाना चाहिए। 12. कन्या द्वारा छिपा जाना चाहिए। 13. माताओं द्वारा खुश हुआ जाना चाहिए। 14. कन्याओं द्वारा छिपा जाना चाहिए। 15. उसके द्वारा खेला जाना चाहिए। 16. तुम्हारे द्वारा हँसा जाना चाहिए। 17. मेरे द्वारा प्रयत्न किया जाना चाहिए। 18 उसके (स्त्री) द्वारा नाचा जाना चाहिए। 19. हमारे द्वारा प्रयत्न किया जाना चाहिए। 20. उन सब के द्वारा प्रसन्न हुआ जाना चाहिए।

उदाहरण -

राजा के द्वारा हँसा जाना चाहिए = नरिंदेण/नरिंदेणं हसिअव्वं/हसितव्वं/हसिदव्वं/हसणीयं ।

(ग) नीचे संज्ञा–सर्वनाम तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। क्रियाओं में विधि कृदन्त का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइये—

1. नरिंद (**हस**)
2. कमल (**विअस**)
3. ससा (**खेल**)
4. अम्ह (**जग्ग**)
5. पोत्त (**कुल्ल**)
6. विमाण (**उड्ड**)
7. माया (**हरिस**)
8. तुम्ह (**उज्जम**)
9. ता (**णच्च**)
10. रज्ज (**जुज्झ**)

उदाहरण—

नरिंदेण/नरिंदेणं हसिअव्वं/हसितव्वं/हसिदव्वं/हसणीयं ।

(घ) निम्नलिखित विधि कृदन्तों की मूलक्रिया, वचन, विभक्ति एवं प्रत्यय लिखिए—

1. हसिअव्वं
2. लज्जितव्वं
3. रुविदव्वं
4. डरणीयं
5. थक्केअव्वं
6. अच्छेअव्वं
7. पडेदव्वं
8. उड्डणीयं
9. घुमिअव्वं

10 उच्छलिअव्वं
11. उज्जमितव्वं
12. कंपिदव्वं
13. मरिअव्वं
14. खेलेअव्वं
15. कुल्लतव्वं
16. जुज्झेदव्वं
17. सयणीय
18. णच्चितव्वं
19. रूसिअव्वं
20. लुक्किदव्वं

उदाहरण —

	मूलक्रिया	वचन	विभक्ति	प्रत्यय
हसिअव्वं	हस	एकवचन	प्रथमा	अव्वं

अभ्यास-26

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। संज्ञाओं, क्रियाओं एवं कृदन्त-रूपों के प्रत्ययों के सभी विकल्प लिखिए। विधि के भाववाच्य में क्रिया-रूपों एवं विधि कृदन्त का प्रयोग कीजिए—

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. बालक खेलते हैं।	2. बालकों द्वारा खेला जाता है।
3. बालक खेला।	4. बालक द्वारा खेला गया।
5. बालक खेलें।	6. बालकों द्वारा खेला जाए।
7. बालक खेलेंगे।	8. बालकों द्वारा खेला जायेगा।
9. माता प्रसन्न होती है।	10. माता द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है।
11. माता प्रसन्न हुई।	12. माता द्वारा प्रसन्न हुआ गया।
13. माता प्रसन्न होवे।	14. माता द्वारा प्रसन्न हुआ जावे।
15. माता प्रसन्न होवेगी।	16. माता द्वारा प्रसन्न हुआ जावेगा।
17, मैं सोता हूँ	18. मेरे द्वारा सोया जाता है।
19. मैं सोया।	20. मेरे द्वारा सोया गया।
21. मैं सोवूं।	22. मेरे द्वारा सोया जावे।
23. मैं सोऊँगी।	24. मेरे द्रारा सोया जायेगा।

उदाहरण —

1. बालक खेलते हैं=बालआ खेलन्ति/खेलन्ते/खेलिरे ।

2. बालकों द्वारा खेला जाता है=बालएहि/बालएहिं/बालएहिँ खेलिज्जइ/खेलिज्जदि/खेलिज्जए/खेलिज्जदे ।

नोट—इस अभ्यास-26 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 42 से 49 तक दोहराएं।

(ख) नीचे संज्ञाएं, पुरुषवाचक सर्वनाम तथा कोष्ठक में क्रियाएं दी गई हैं। संज्ञाओं एवं सर्वनामों में कहीं एकवचन, कहीं बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट काल में कर्तृवाच्य एवं भाववाच्य के वाक्य बनाइए।

1. विमाण (**उड्ड**) वर्तमानकाल
2. कन्ना (**लुक्क**) भूतकाल
3. रज्ज (**जुज्झ**) भविष्यत्काल
4. कुक्कुर (**बुक्क**) वर्तमानकाल
5. ता (**णच्च**) भूतकाल
6. सद्धा (**वड्ढ**) विधि एवं आज्ञा
7. माया (**हरिस**) विधि एवं आज्ञा
8. तुम्ह (**थक्क**) वर्तमानकाल
9. त (**ण्हा**) भूतकाल
10. सुया (**खेल**) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण —

कर्तृवाच्य—विमाणं उड्डइ/उड्डए/उड्डदि/उड्डदे ।

भाववाच्य —विमाणेण/विमाणेणं उड्डिज्जइ/उड्डिज्जदि/उड्डीअइ/उड्डीअदि ।

(ग) निम्नलिखित वाक्य कर्तृवाच्य में दिए गए हैं। इनका भाववाच्य में परिवर्तन कीजिए —

1. माउलो उट्ठउ/उट्ठदु/उट्ठेदु ।
2. मित्ता हरिसन्तु/हरिसेन्तु ।
3. णरा उज्जमिहिन्ति/उज्जमिस्सन्ति/आदि ।
4. लक्कुडाणि/लक्कुडाइँ जलन्ति/जलन्ते/जलिरे ।
5. वत्थाणि/वत्थाइँ/वत्थाइं/सुक्खिआइँ/सुक्खिआइं/सुक्खिआणि ।
6. अहं ठामि ।
7. तुं लुक्कसि/लुक्कसे/लुक्केसि ।
8. सो ण्हाइ/ण्हादि ।
9. हं णच्चमु/णच्चेमु ।
10. ता णच्चिआ/णच्चिआउ/णच्चिआओ ।

उदाहरण—

1. भाववाच्य=माउलेण/माउलेणं उट्ठिज्जउ/उट्ठिज्जदु/उट्ठीअउ/उट्ठीअदु ।

(घ) **निम्नलिखित वाक्य भाववाच्य में दिए गए हैं। इनका कर्तृवाच्य में परिवर्तन कीजिए**

1 कुक्कुरेण/कुक्कुरेणं बुक्किज्जइ/बुक्किज्जए/बुक्कीयइ/बुक्कीयए ।
2. पोत्तेहि/पोत्तेहिं/पोत्तेहिँ सयिज्जइ/सयिज्जए/सयीयइ/सयीयए ।
3. णरेहि/णरेहिं/णरेहिँ उज्जमिहिइ/उज्जमिहिदि ।
4. मित्तेहि/मित्तेहिं/मित्तेहिँ हरिसिअं ।
5. लक्कुडेहि/लक्कुडेहिं/लक्कुडेहिँ जलिअं ।
6. मइ कुल्लिज्जइ/कुल्लिज्जए/कुल्लीयइ/कुल्लीयए ।
7. तइ/तए उड्डिज्जइ/उड्डिज्जए/उड्डीयइ/उड्डीयए ।
8. तए/तइ णच्चिज्जउ/णच्चीयउ ।
9. तेण/तेणं उवसमिज्जउ/उवसमीयउ ।
10. मइ लुक्किअं ।

उदाहरण—
कर्तृवाच्य—कुक्कुरो बुक्कइ/बुक्केइ/बुक्कए/बुक्कदि/बुक्कदे ।

अभ्यास-27

(क-1) निम्नलिखित अकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के द्वितीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. नरिंद	2. कुक्कुर	3. माउल
4. णर	5. वय	6. मेह
7. रक्खस	8. सलिल	9. दिवायर
10. सीह	11. करह	12. जणेर

उदाहरण—

	द्वितीया एकवचन	द्वितीया बहुवचन
नरिंद	नरिंदं	नरिंदा/नरिंदे

(क-2) निम्नलिखित अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के द्वितीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. भोयण	2. विमाण	3. कम्म
4. णाण	5. सुत्त	6. वत्थ
7. खेत्त	8. सुह	9. णयरजण
10. रज्ज	11. धण	12. मण

उदाहरण—

	द्वितीया एकवचन	द्वितीया बहुवचन
भोयण	भोयणं	भोयणाइं/भोयणाइँ/भोयणाणि

नोट—इस अभ्यास-27 को हल करने के लिए '**प्राकृत रचना सौरभ**' के पाठ 51-52 का अध्ययन कीजिए।

(क-3) निम्नलिखित आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के द्वितीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. माया	2. कमला	3. णम्मया
4. कहा	5. सरिआ	6. गुहा
7. कण्णा	8. पसंसा	9. निसा
10. नणन्दा	11. महिला	12. भिक्खा

उदाहरण—

	द्वितीया एकवचन	द्वितीया बहुवचन
माया	मायं	माया/मायाउ/मायाओ

(क-4) निम्नलिखित पुरुषवाचक सर्वनामों के द्वितीया एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. अम्ह	2. तुम्ह
3. त (पु.)	4. त (नपु.)
5. ता (स्त्री.)	

उदाहरण—

	द्वितीया एकवचन	द्वितीया बहुवचन
अम्ह	ममं/मे/मं	अम्हे/अम्ह

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिये। संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. राजा परमेश्वर को प्रणाम करता है। 2. ऊँट घास चरता है। 3. पुत्र माता को प्रणाम करता है। 4. तुम मुझको पालते हो। 5. पिता पुत्र की रक्षा

करे। 6. राजा राज्यों को जाने। 7. पुत्री शिक्षा को समझे। 8. तुम मेरी रक्षा करते हो। 9. दादा पोते को पालेगा। 10. नागरिक गीत सुनेगा। 11. माता पुत्री की रक्षा करेगी। 12. वह उसको पालेगी। 13 राम परमेश्वरों को प्रणाम करता है। 14. शासन राज्यो को पालता है। 15. बहिनें कथाएँ सुनती हैं। 16. वह हम सबकी रक्षा करती है। 17. राजा व्रतों को पाले। 18 पुत्र सुखों को समझे। 19. पुत्री शिक्षाओं को समझे। 20 तुम उन सब की रक्षा करो। 21. वह तुमको जानती है। 22. सीता व्रतों को पालेगी। 23. वे मनुष्यों की रक्षा करेंगे। 24. ऊँट (विभिन्न प्रकार के) धानों को चरेंगे। 25. बेटी उन सब को प्रणाम करेगी। 26. पोता उन सबको प्रणाम करेगा। 27. वे हम सबको पालते हैं। 28. हनुमान राम को प्रणाम करता है। 29. हनुमान सीता की रक्षा करता है। 30. माता बेटियों की रक्षा करे। 31 राम हनुमान को समझता है। 32. ससुर (विभिन्न प्रकार के) भोजन खाता है। 33. दादा शास्त्रों को समझते हैं। 34. नागरिक रत्नों की रक्षा करें। 35 मित्र कथा सुनेगा। 36 दादा पोतों को पालेंगे। 37. नरेश नागरिकों को जानता है। 38. राज्य राजा की रक्षा करता है। 39. सीता कथा सुनेगी। 40. मैं तुमको प्रणाम करता हूँ। 41. राजा माता को प्रणाम करेगा। 42. परमेश्वर हम सब की रक्षा करें। 43 पुत्री विभिन्न प्रकार के भोजन खायेगी। 44 सीता हनुमान को जानती है। 45 मेघ मनुष्यों को पालते हैं। 46. तुम दुःखों को जानो। 47 मैं उन सबको प्रणाम करूँ। 48. वे हम सब को जानते हैं। 49. राक्षस बच्चों को खाता है। 50 तुम उन सबकी रक्षा करो।

उदाहरण—

राजा परमेश्वर को प्रणाम करता है=नरिंदो परमेसरं पणमइ/पणमेइ/पणमए/पणमदि/पणमदे।

(ग) नीचे संज्ञाएं, पुरुषवाचक सर्वनाम तथा कोष्ठक में सकर्मक क्रियाएं दी गई हैं। मध्य में दिए गए संज्ञाओं या सर्वनामों में द्वितीया एकवचन या बहुवचन का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कालों में वाक्य बनाइए। संज्ञा, सर्वनाम व क्रियारूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. करह, तिण (चर) वर्तमानकाल

2. सीया, हणुवन्त (जाण) वर्तमानकाल
3. अम्ह, त (पणम) विधि एवं आज्ञा
4. णयरजण, रयण (रक्ख) विधि एवं आज्ञा
5. पोत्त, त (पणम) भविष्यत्काल
6. मित्त, कहा (सुण) भविष्यत्काल
7. ससुर, भोयण (खा) वर्तमानकाल
8. त, अम्ह (जाण) वर्तमानकाल
9. तुम्ह, दुक्ख (जाण) विधि एवं आज्ञा
10. सुया, सिक्खा (सुण) विधि एवं आज्ञा
11. माया, वय (पाल) भविष्यत्काल
12. तणया, भोयण (खा) भविष्यत्काल
13. त, णर (रक्ख) भविष्यत्काल
14. ता, त (पाल) विधि एवं आज्ञा
15. अम्ह, तुम्ह (पणम) विधि एवं आज्ञा
16. नरिंद, परमेसर (पणम) विधि एवं आज्ञा
17. तुम्ह, अम्ह (जाण) भविष्यत्काल
18. बालअ, गाण (सुण) भविष्यत्काल
19. पुत्त, माया (पणम) वर्तमानकाल
20. माउल, पुत्त (रक्ख) विधि एवं आज्ञा

उदाहरण—

करहो तिणं चरइ/चरए/चरदि/चरदे ।

(घ) **नीचे संज्ञाएं व पुरुषवाचक सर्वनाम विभक्ति-सहित दिए गए हैं। उनके मूलशब्द, लिंग, वचन एवं विभक्ति लिखिये। संज्ञाओं के प्रत्यय भी लिखिए—**

1. माया	2. नरिंदो	3. भोयणाइँ
4. अम्हे	5. तए	6. विमाणइं
7. ससाउ	8. करहा	9. ममं
10. सोक्खं	11. माउलो	12. अहिलासाओ

13. ताओ 14. ताइं 15. पोत्ते
16. रज्जं 17. कमला 18. तं
19. ता 20 हं

उदाहरण—

	मूलशब्द	लिंग	वचन	विभक्ति	प्रत्यय
माया	माया	स्त्रीलिंग	एकवचन	प्रथमा	शून्य

अभ्यास-28

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. मैं परमेश्वर की पूजा करती हूँ। 2. सदाचार अपयश को रोकता है। 3. तुम दूध चखो। 4. पत्नी वस्त्रों को धोयेगी। 5. कन्याएं छोटे घड़े को उघाड़ती हैं। 6. हनुमान राम का उपकार करता है। 7. तुम भोजन करो। 8. कुत्ते धान को उपाड़ते हैं। 9. मनुष्य व्यसन छोड़ें। 10. बहिनें धान पीसेंगी। 11. तृष्णा निद्रा को रोकती है। 12 जुआ मनुष्य को कलंकित करता है। 13. वह बीजों को चुने। 14. देवर सिंहों को देखेगा। 15. हम धान कूटते हैं। 16. दादा पोतों को बुलाता है। 17. तुम उन सब को पुकारो। 18. वे दोनों खेत खोदते हैं। 19. वे सब गठरी को काटेंगे। 20. महिलाएं व्रतों को छोड़ेंगी। 21. बहिनें पुत्रियों को देखें। 22. हम गंगा की पूजा करेंगे। 23. तुम दोनों लकड़ी छीलते हो। 24. वे सब मदिरा छोड़ें। 25. पुत्रियाँ वस्त्र धोयेंगी। 26. ननदें भोजन जीमती हैं। 27. राक्षस बच्चों को ठगेगा। 28. राक्षस बच्चों को ठगते हैं। 29. बालक कमल को तोड़ता है। 30. घी भोजन को स्निग्ध करता है। 31. मैं घी खाता हूँ। 32 बहिनें नींद छोड़ें। 33. ससुर पत्नी की निन्दा करता है। 34. राजा रत्नों की खोज करता है। 35 तुम सब बादलों को देखो। 36. बेटी धागा तोड़ेगी। 37 नागरिक बालक को ठगता है। 38. मामा शास्त्रों को स्पर्श करता है। 39. प्रशंसा चित्त को छूती है। 40. वह सुख की खोज करे। 41. बालक विमान को देखते हैं। 42 तुम घी खाओ। 43. दुःख सुख को रोकता है। 44. तुम जल को स्पर्श करो। 45. मैं जंगल को काटूंगा। 46. तुम सब भोजन जीमो। 47. भूख प्यास को रोकती है। 48. हम दोनों गड्ढे को खोदें। 49. माता पुत्र का स्पर्श करती है। 50. प्रज्ञा ज्ञान को प्रकट करती है। 51. वह वस्त्रों को फाड़ेगा। 52. राजा गर्व को छोड़े। 53. राक्षस कुत्ते को

नोट—इस अभ्यास-28 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 53 का अध्ययन कीजिए।

रोकेगा। 54 पुत्र घास काटे। 55. सत्य सदाचार को प्रकट करेगा। 56. पुत्र व्यसन छोड़े। 57. तुम सब मद्य को छोड़ो। 58. वह बीजों को पीसता है। 59. मैं कन्या को पुकारता हूँ। 60 महिला गड्ढे को ढकती है।

उदाहरण—

मैं परमेश्वर की पूजा करती हूँ=अहं/हं/अम्मि परमेसरं अच्चमि/अच्चामि/अच्चेमि।

अभ्यास-29

(क-1) निम्नलिखित इकारान्त व ईकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया व तृतीया के एकवचन तथा बहुवचन के रूप लिखिए—

1. सामि	2. मुणि
3. केसरि	4. गिरि
5. रिसि	6. गामणी

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
सामि	प्रथमा	सामी	सामी/सामउ/सामओ/सामिणो
	द्वितीया	सामिं	सामी/सामिणो
	तृतीया	सामिणा	सामीहि/सामीहिँ/सामीहिं

(क-2) निम्नलिखित इकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया व तृतीया के एकवचन तथा बहुवचन के रूप लिखिए—

1. दहि	2. अच्छि
3. अट्ठि	4. वारि
5. सालि	6. सप्पि

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
दहि	प्रथमा	दहिं	दहीइं/दहीइँ/दहीणि
	द्वितीया	दहिं	दहीइं/दहीइँ/दहीणि
	तृतीया	दहिणा	दहीहि/दहीहिं/दहीहिँ

नोट—इस अभ्यास-29 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 55 से 61 का अध्ययन कीजिए।

(क–3) निम्नलिखित इकारान्त व ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया व तृतीया के एकवचन तथा बहुवचन के रूप लिखिए—

1. भत्ति　　2. मणि
3. रत्ति　　4. परमेसरी
5. सामिणी　　6. णारी

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
भत्ति	प्रथमा	भत्ती	भत्ती/भत्तीउ/भत्तीओ
	द्वितीया	भत्तिं	भत्ती/भत्तीउ/भत्तीओ
	तृतीया	भत्तीअ/भत्तीआ/ भत्तीइ/भत्तीए	भत्तीहि/भत्तीहिं/भत्तीहिँ

(क–4) निम्नलिखित उकारान्त व ऊकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया व तृतीया के एकवचन तथा बहुवचन के रूप लिखिए—

1. जंतु　　2. बिन्दु
3. मच्चु　　4. सत्तु
5. सयंभू　　6. खलपू

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
जंतु	प्रथमा	जंतू	जंतू/जंतुणो/जंतवो/जंतओ/जंतउ
	द्वितीया	जंतुं	जंतू/जंतुणो
	तृतीया	जंतुणा	जंतूहि/जंतूहिं/जंतूहिँ

(क–5) निम्नलिखित उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया व तृतीया के एकवचन व बहुवचन के रूप लिखिए—

1. महु
2. अंसु
3. वत्थु
4. जाणु
5. आउ

उदाहरण—

		एकवचन	बहुवचन
महु	प्रथमा	महुं	महूइं/महूइँ/महूणि
	द्वितीया	महुं	महूइं/महूइँ/महूणि
	तृतीया	महुणा	महूहिं/महूहिँ/महूहि

(क-6) निम्नलिखित उकारान्त व ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के प्रथमा, द्वितीया व तृतीया के एकवचन तथा बहुवचन के रूप लिखिए—

1. धेणु
2. सस्सु
3. हणु
4. बहू
5. सासू
6. चमू

उदाहरण —

		एकवचन	बहुवचन
धेणु	प्रथमा	धेणू	धेणू/धेणूउ/धेणूओ
	द्वितीया	धेणुं	धेणू/धेणूउ/धेणूओ
	तृतीया	धेणूअ/धेणूआ/धेणूइ/धेणूए	धेणूहि/धेणूहिं/धेणूहिँ

अभ्यास-30

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिये। संज्ञा व क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिए —

1. मालिक प्रसन्न होता है। 2. मुनि बैठेंगे। 3. मन्त्री प्रयास करें। 4. शत्रु लड़ा। 5. गांव का मुखिया बैठता है। 6. दही टपकता है। 7. आंखें दुःखीं। 8. हड्डी सूखेगी। 9. जल झरे। 10 भक्ति बढ़े। 11. तृप्ति होवेगी। 12. रत्न गिरते हैं। 13. वैभव बढ़ा। 14. पुत्रियां खेलती हैं। 15. लक्ष्मी बढ़े। 16. स्त्रियां प्रयास करेंगी। 17. मौसी थकी। 18. साड़ी सूखती है। 19. बहिन नाची। 20. माता थकेगी। 21. दादी बैठे। 22. बूंदें गिरेंगी। 23 गुरु प्रसन्न होवे। 24. तेज खिले। 25. दुश्मन लड़ता है। 26. पिता हँसा। 27. मधु टपकता है। 28. आंसू झरेंगे। 29. घुटना थका। 30. आयु बढ़े। 31. पदार्थ सोहते हैं। 32. गायें भागती हैं। 33. चमची टूटी। 34. सासू बैठे। 35. बहू प्रयत्न करती है।

उदाहरण —

मुनि बैठेंगे = मुणी/मुणउ/मुणओ/मुणिणो उवविसिहिन्ति/उवविसिहिन्ते/ उवविसिहिइरे/उवविसिस्सन्ति/उवविसिस्सन्ते/उवविसिस्सइरे/ उवविसिस्सिन्ति/उवविसिस्सिन्ते/उवविसिस्सिइरे।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत मे रचना कीजिये। संज्ञा एवं क्रिया-रूपो के सभी विकल्प लिखिए—

1. स्वामी भोजन जीमता है। 2. कवि व्रत पालेंगे। 3. मुनि जल पीवें। 4. गाँव का मुखिया उन सबका अभिनन्दन करता है। 5. आंखें मनुष्य को देखती हैं। 6 मैं दही खाऊँ। 7. कुत्ता हड्डियां खाएगा। 8. मुनि जल पीते हैं। 9 मनुष्य भक्ति करें। 10. धरती रत्न पैदा करेगी। 11. माताएं साड़ियां

नोट — इस अभ्यास-30 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 54 से 59 का अध्ययन कीजिए।

धोवेंगी । 12. बहिनें परमेश्वर को पूजें । 13. मनुष्य वैभव त्यागे । 14. पिता पुत्र की निन्दा करता है । 15. साधु गर्व छोड़े । 16. मौसी पुत्री को बधाई देती है । 17. प्रभु तुम सब की रक्षा करेंगे । 18. रघु हम सब का उपकार करते हैं । 19. खलियान साफ करनेवाला गड्ढा खोदता है । 20. स्वयंभू राम को प्रणाम करता है । 21. पुत्र मधु खाता है । 22. पुत्र घुटने को स्पर्श करे । 23. तुम आंसुओं को रोको । 24 वह पदार्थों की खोज करेगी । 25. गाय जामुन के पेड़ को तोड़ती है । 26. बहू सासू की सेवा करेगी । 27. सेना प्राणियों की रक्षा करेगी । 28. बहिन रस्सी चुराती है । 29. पुत्र वस्त्र मैला करता है । 30. हाथी जल पीवेगा ।

उदाहरण --

स्वामी भोजन जीमता है=सामी भोयणं जेमइ/जेमए/जेमदि/जेमदे ।

अभ्यास-31

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए —

1. स्वामी मुझको बुलाता है । 2. स्वामी के द्वारा मैं बुलाया जाता हूँ । 3. मुनि हम सबको देखते हैं । 4. मुनि के द्वारा हम सब देखे जाते हैं । 5. दुश्मन तुमको मारेगा । 6. दुश्मन के द्वारा तुम मारे जाओगे । 7. राजा साधु को नमस्कार करे । 8. राजा के द्वारा साधु नमस्कार किया जावे । 9. तपस्वी कथा का व्याख्यान करेंगे । 10. तपस्वियों द्वारा कथा का व्याख्यान किया जावेगा । 11. भाई मुझको भूलता है । 12. भाई के द्वारा मैं भूला जाता हूँ । 13. सेनापति स्वामी को नमस्कार करे । 14. सेनापति के द्वारा स्वामी नमस्कार किया जावे । 15. माता धान कूटेगी । 16. तुम मुझको पुकारते हो । 17. तुम्हारे द्वारा मैं पुकारी जाती हूँ । 18. हम सब तुमको स्मरण करेंगे । 19. हम सब के द्वारा तुम स्मरण किये जाओगे । 20. वह वैभव को त्यागे । 21. उसके द्वारा वैभव त्यागा जावे । 22. माता के द्वारा धान कूटा जायेगा । 23. माताएँ पुत्रों को पालती हैं । 24. माताओं द्वारा पुत्र पाले जाते हैं । 25. साँप बालक को डसता है । 26. साँप द्वारा बालक डसा जाता है । 27. बहिन श्रमणी की सेवा करती है । 27. बहिन द्वारा श्रमणी सेवा की जाती है । 29. वह उनकी स्तुति करता है । 30 उसके द्वारा उनकी स्तुति की जाती है ।

उदाहरण—

स्वामी मुझको बुलाता है = सामी ममं कोक्कइ/कोक्केइ/कोक्कए/कोक्कदि/ कोक्कदे ।

नोट — इस अभ्यास-31 को हल करने के लिए '**प्राकृत रचना सौरभ**' के पाठ 53-54 का अध्ययन कीजिए ।

(ख) नीचे प्रारम्भ में दिए गए संज्ञा-सर्वनामों का (कर्त्ता-रूप में) प्रथमा एकवचन या बहुवचन में प्रयोग कीजिए तथा मध्य में दिए गए संज्ञा-सर्वनामों में द्वितीया एकवचन अथवा बहुवचन का प्रयोग करते हुए कोष्ठक में दी गई सकर्मक क्रियाओं से निर्दिष्ट कालों में कर्तृवाच्य व कर्मवाच्य में वाक्य बनाइए। संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. भाइ....अम्ह (**कोक्क**) वर्तमानकाल
2. अम्ह....साहु (**णम**) भविष्यत्काल
3. कइ....गाण (**गा**) विधि एवं आज्ञा
4. मंति.... नरवइ (**नम**) भविष्यत्काल
5. तुम्ह....त (**थुण**) विधि एवं आज्ञा
6. अरि....अम्ह (**हण**) वर्तमानकाल
7. अम्ह....तवस्सि (**सुमर**) वर्तमानकाल
8. जामाउ....भोयण (**खाद**) भविष्यत्काल
9. पहु....अम्ह (**पेच्छ**) वर्तमानकाल

उदाहरण—

कर्तृवाच्य—भाई मइ कोक्कइ/कोक्केइ/कोक्कए/कोक्कदि/कोक्कदे।

कर्मवाच्य—भाइणा अहं/हं/अम्मि कोक्किज्जमि/कोक्कीअमि/कोक्किज्जामि/कोक्कीआमि।

(ग) नीचे विभक्तिसहित संज्ञाएं दी गई हैं। इनके मूलशब्द, लिंग, वचन, विभक्ति एवं प्रत्यय लिखिए—

1. सामिणा	2. कईहि	3. वारीइं
4. अट्ठिणा	5. भत्तीउ	6. तत्ती
7. लच्छीआ	8. सत्तूहि	9. भत्तीओ
10. पहू	11. साहुणा	12. महूहि

13. वत्थूइँ	14. अंसूहि	15. पुत्तीइ
16. सस्सूउ	17. तणूए	18. चमूहिं
19. वाउणा	20. बहिणीए	

उदाहरण—

	मूलशब्द	लिंग	वचन	विभक्ति	प्रत्यय
सामिणा	सामि	पुल्लिंग	एकवचन	तृतीया	णा

अभ्यास-32

(क-1) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। भूतकाल के भाव को प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग कीजिए। संज्ञा सर्वनाम व कृदन्तरूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. शत्रु द्वारा सेनापति मारा गया। 2. बालक के द्वारा वस्त्र फाड़े गए। 3. भाइयों द्वारा दूध पिया गया। 4. प्राणियों द्वारा कर्म बांधे गए। 5. कवि द्वारा गाने गाए गए। 6. स्वामी द्वारा धागा काटा गया। 7. यति के द्वारा शिक्षा धारी गई। 8. ऋषियों के द्वारा प्रज्ञा जानी गई। 9. नागरिक द्वारा भोजन खाया गया। 10. राम के द्वारा राक्षस मारे गए। 11. पुत्री के द्वारा लक्ष्मी चाही गई। 12. यति के द्वारा शिक्षा फैलायी गई। 13. मेरे द्वारा विमान देखे गए। 14. उसके द्वारा वैराग्य चाहा गया। 15. तुम्हारे द्वारा व्यसनों का वर्णन किया गया। 16. हमारे द्वारा पानी पिया गया। 17. उनके द्वारा दया उत्पन्न की गई। 18 उसके द्वारा आज्ञा पाली गई। 19. गुरु के द्वारा मुनि की स्तुति की गई। 20. दामाद द्वारा झोंपड़ी देखी गई।

उदाहरण—

शत्रु द्वारा सेनापति मारा गया=सत्तुणा सेणावई मारिओ।

(क-2) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। विधि एवं आज्ञा का भाव प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त का प्रयोग कीजिए। संज्ञा, सर्वनाम व कृदन्त-रूपों के सभी विकल्प लिखिए—

1. भाई के द्वारा पेड़ सींचा जाना चाहिए। 2. रघुपति के द्वारा साधु बुलाए जाने चाहिए। 3. कवियों के द्वारा गीत गाए जाने चाहिए। 4. हाथी द्वारा

नोट - इस अभ्यास-32 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 57 से 62 का अध्ययन कीजिए।

सिंह मारा जाना चाहिए। 5. ऋषि के द्वारा सूर्य की वन्दना की जानी चाहिए। 6. मेरे द्वारा दही खाया जाना चाहिए। 7. हमारे द्वारा जल पिया जाना चाहिए। 8. उनके द्वारा हड्डियाँ फैंकी जानी चाहिए। 9. तुम्हारे द्वारा पदार्थ सींचे जाने चाहिए। 10. उसके द्वारा आयु देखी जानी चाहिए। 11. तुम्हारे द्वारा वैभव प्राप्त किया जाना चाहिए। 12. उसके द्वारा तृप्ति मांगी जानी चाहिए। 13. पृथ्वी द्वारा रत्न धारण किए जाने चाहिए। 14. मौसी द्वारा साड़ियां खरीदी जानी चाहिए। 15. युवती द्वारा भक्ति की जानी चाहिए। 16. तुम्हारे द्वारा रस्सी गूँथी जानी चाहिए। 17. उसके द्वारा गाएं पाली जानी चाहिए। 18. हमारे द्वारा जामुन का पेड़ सींचा जाना चाहिए। 19. सासुओं द्वारा बहुएँ लाड प्यार की जानी चाहिए। 20. तुम्हारे द्वारा घास जलाई जानी चाहिए।

उदाहरण

भाई के द्वारा पेड़ सींचा जाना चाहिए = भाइणा तरु सिंचिअव्वो/सिंचितव्वो/सिंचिदव्वो/सिंचणीयो।

(ख-1) नीचे संज्ञा—सर्वनाम तथा कोष्ठक में सकर्मक क्रियाएं दी गई हैं। मध्य में दी गई संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन अथवा बहुवचन का प्रयोग करते हुए कर्मवाच्य में भूतकाल के वाक्य बनाइये। सभी विकल्प लिखिए—

1. रहुणन्दण रक्खस (हण)
2. सामि भोयण (खाद)
3. कइ वय (पाल)
4. ससा तुम्ह (लड्ड)
5. मित्त अम्ह (बढ़ाव)
6. भाइ अम्ह (पुक्कर)
7. त धण (मग्ग)
8. अम्ह त (णिरक्ख)
9. तुम्ह अम्ह (बंध)
10. मुणि तुम्ह (पेस)

उदाहरण

रहुणन्दणेण/रहुणन्दणेणं रक्खसो हणिओ।

(ख-2) नीचे संज्ञा-सर्वनाम तथा कोष्ठक में सकर्मक क्रियाएं दी गई हैं। मध्य में दी गई संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन अथवा बहुवचन का प्रयोग करते हुए कर्मवाच्य में विधि के वाक्य बनाइये। सभी विकल्प लिखिए—

1. रहुवइ साहु (**कोक्क**)
2. त लवकुड (**रंग**)
3. अम्ह दुक्ख (**भुल**)
4. महेली परमेसर (**थुण**)
5. जोगि आगम (**पढ**)
6. तवस्सि अम्ह (**सुमर**)
7. तुम्ह रज्जु (**गुंथ**)
8. त अम्ह (**लड्ड**)
9. अम्ह वारि (**पिअ**)
10. रिसि विवायर (**वंद**)

उदाहरण—

रहुवइणा साहू कोक्किज्जउ/कोक्किज्जदु/कोक्कीअउ/कोक्कीअदु।

(ग) नीचे संज्ञाएं व कृदन्त विभक्तिसहित दिए गए हैं। इनके मूलशब्द, लिंग, वचन, विभक्ति, प्रत्यय एवं कृदन्त का नाम लिखिए—

1. कोक्किओ
2. देक्खिआ
3. सुणिआउ
4. कीणिअव्वं
5. रक्खितव्वो
6. लभिदव्वो
7. झाएअव्वा
8. पिबिअव्वा
9. गणेअव्वाइ
10. पेच्छेअव्वा
11. धारिआइँ
12. पालिआउ
13. पेसिआओ
14. धारेअव्वा
15. चक्खिअव्वाओ
16 माणेतव्वो
17. बहूउ
18. धेणूओ
19. सामिणा
20. मुणीहिं
21. गामणीहिँ
22. साहूणा
23. विमाणाइं
24. सीलेण

25. अच्छीहिं	26. गुरुहिं	27. पुत्तो
28. बुज्झिअव्वा	29. गणिदव्वो	30. पाविअव्वाओ

उदाहरण –

	मूलशब्द	लिंग	वचन	विभक्ति	प्रत्यय	कृदन्त-नाम
कोक्किअो	कोक्क	पुल्लिंग	एकवचन	प्रथमा	अ	भूतका. कृदन्त

अभ्यास-33

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। संज्ञा, कृदन्त एवं क्रियारूपों का कोई एक विकल्प लिखिए—

1. स्वामी रघुपति को नमन करते हुए उठता है। 2. वह गांव के मुखिया की सेवा करते हुए थकेगा। 3. वे दोनों मधु को चखते हुए लालच करते हैं। 4. सिंह बालक को खाते हुए मारता है। 5. माता पुत्री को लाड-प्यार करते हुए खुश होवेगी। 6. पुत्री गीत गाती हुई नाचे। 7. पिता खेत को सींचता हुआ थकेगा। 8. तुम ईश्वर की स्तुति करते हुए वन्दना करो। 9. बहिन पुत्र को मारती हुई समझाती है। 10. वह पुत्र को भेजती हुई रोती है। 11. हम सब परमेश्वर की भक्ति करने के लिए उठे। 12. तुम तृप्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करोगे। 13. पिता पुत्री को पालने के लिए उत्साहित होता है। 14. वे सब रस्सी बांधने के लिए प्रयत्न करें। 15. महिला गाय को देखने के लिए उठती है। 16. वह वस्तु खरीदने के लिए जावेगी। 17. सेनापति शत्रु को मारने के लिए भागता है। 18. दादा पोते को बधाई देने के लिए जाता है। 19. तुम कथा सुनने के लिए उठो। 20. मैं भोजन को चबाने के लिए प्रयत्न करती हूँ। 21. स्वामी रघुपति को नमन करके प्रसन्न होता है। 22. कवि गुरु को प्रणाम करके बैठता है। 23. तुम भक्ति करके जीओ। 24. तुम तृप्ति प्राप्त करके खुश होवोगे। 25. वे गायों को देखकर उठते हैं। 26. ऋषि परमेश्वर की वन्दना करके ध्यान करते हैं। 27. भाई रत्न चोरकर भागता है। 28. राजा परमेश्वर को स्मरण करके सोवे। 29. राक्षस बालक को पीड़ा देकर उछलता है। 30. पुत्र रस्सी को टुकड़े करके फैंकता है।

उदाहरण—

स्वामी रघुपति को नमन करते हुए उठता है=सामी रहुवइं णमन्तो उट्ठइ।

नोट— इस अभ्यास-33 को हल करने के लिए 'प्राकृत रचना सौरभ' के पाठ 64 का अध्ययन कीजिए।

अभ्यास-34

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। वाक्यों में प्रयुक्त चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति के सभी विकल्प लिखिए—

1. मेरा पुत्र सुख चाहता है। 2. राजा का पुत्र राम को प्रणाम करेगा। 3. पुत्र का सुख पिता का सुख होता है। 4. तुम्हारी माता कथा सुने। 5. मेरी पुत्री सुख चाहेगी। 6. स्वामी का भाई परमेश्वर की वन्दना करेगा। 7. तुम नर्मदा का पानी पीओ। 8. मेरे गुरु परमेश्वर का ध्यान करते हैं। 9. राजाओं के दुश्मन युद्ध का विचार करते हैं। 10. मेरी मौसियां साड़ी खरीदती हैं। 11. उनकी पुत्रियां प्रसन्न होती हैं। 12. मेरी ननद उसका वर्णन करती है। 13. वह कवि के गीत को स्मरण करता है। 14 मामा की बहिन कथा सुने। 15. मेरा मित्र उसके लिए गठरी मांगे। 16. भाई का शत्रु पुत्र को मारेगा। 17. उसकी आंखे दु:खती हैं। 18. मौसी का पुत्र बहिन के लिए पुस्तक खरीदे। 19. राजा का पुत्र तपस्वी की सेवा करता है। 20. भाई की पुत्री ईश्वर की स्तुति करे। 21. सेनापति की बहिन मामा के लिए मधु भेजेगी। 22. मामा की बेटी वैभव के लिए परमेश्वर की पूजा करती है। 23. तुम्हारा पुत्र आत्म-लाभ प्राप्त करे। 24. तुम साधु के लिए भोजन खरीदो। 25. दादी पोते के लिए भोजन बनाती है। 26. उसकी बहिन छिपे। 27. ननद की बेटी सोयेगी। 28. मौसी का बेटा उसका उपकार करेगा। 29. तुम्हारा पुत्र मेरे पुत्र को क्षमा करे। 30. तुम्हारे भाई मुनियों की गिनती करेंगे। 31 प्रभु तुम्हारे पुत्र की रक्षा करे। 32. जामुन का पेड़ बढ़ता है। 33. वह हाथी के लिए खड्डा खोदता है। 34. सासू उसकी बहू की रक्षा करती है। 35. वह तृप्ति के लिए भोजन खाता है। 36. तुम प्राणियों के लिए वस्त्र प्राप्त करोगे। 37. मन्त्री का पुत्र राजा को नमस्कार करे। 38. राम का सुख मेरा सुख है। 39. सीता की माता कथा सुनेगी। 40. राज्य का शासन उसकी रक्षा करेगा। 41. स्वा-

---

नोट—इस अभ्यास–34 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 66 से 69 का अध्ययन कीजिए।

मियों के भाई उसको नमस्कार करते हैं । 42. कवियों के गुरु हमको देखते हैं । 43. उसके गुरु भोजन जीमते हैं । 44 वह उसकी पुस्तक परीक्षा के लिए पढ़ता है । 45 मेरा पुत्र सुख के लिए हँसेगा । 46. राजा का पुत्र राम के लिए गठरी मांगे 47. वह शरीर के लिए नर्मदा का पानी पीता है । 48. उसकी माता तुमको पालेगी । 49. मैं गंगा की कथा सुनूंगा । 50. उसका पुत्र घर जावे ।

उदाहरण—

मेरा पुत्र सुख चाहता है=मम/महं/मज्झ पुत्तो सोक्खं इच्छदि ।

अभ्यास 35

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। वाक्यों में प्रयुक्त पंचमी विभक्ति के सभी विकल्प लिखिए—

1. बालक सर्प से डरता है। 2. खेत से अन्न उत्पन्न होता है। 3. वह गाय से डरेगा। 4. जामुन के पेड़ से पत्ते गिरते हैं। 5. पुत्र सिंह से डरकर भागेगा। 6. पहाड़ से बालक गिरता है। 7. पर्वत से गंगा निकलती है। 8. वह मुझसे डरे। 9. वह तुझसे पुस्तक पढ़ेगा। 10. बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है। 11. हम सब पिताओं से डरते हैं। 12. वे सब युवतियों से छिपते हैं। 13. हम सब पिताओं से डरते हैं। 14. वे सब स्वामी से डरते हैं। 15. तुम साधु से पढ़ो। 16. जल से पत्ता उत्पन्न होता है। 17. तुम सब राजा से डरो। 18. बच्चे हाथी से डरते हैं। 19. मन्त्री राजा से डरता है। 20. छोटे कलश से पानी निकलता है। 21. मामा सर्प से डरेगा।

उदाहरण—

बालक सर्प से डरता है=बालओ सप्पत्तो/सप्पाओ/सप्पाउ/सप्पाहि/सप्पाहिन्तो/सप्पा डरदे ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। वाक्यों में प्रयुक्त सप्तमी विभक्ति के सभी विकल्प लिखिए—

1. आकाश में बादल गरजते हैं। 2. नर्मदा में पानी सूखेगा। 3. सीता घर में कथा सुनती है। 4. वह पोटली पर बैठती है। 5 बुढापे में वाणी थकेगी। 6. राम के राज्य में लक्ष्मी बढ़ती है। 7. उसकी माता घर में पुत्र को पालती है। 8. तुम हँसकर घर में नाचो। 9. वह परीक्षा में मूच्छित होती है। 10. तुम गाय को खेत में बांधो। 11. पुत्रियां आकाश में चन्द्रमा को देखेंगी।

नोट—इस अभ्यास-35 को हल करने के लिए '**प्राकृत रचना सौरभ**' के पाठ 71 से 77 का अध्ययन कीजिए।

12. वे सब खेत में पदार्थ फैंकती हैं। 13. तुम नहाने के लिए समुद्र में कूदो। 14. कुत्ता जंगल में खड्डा खोदता है। 15. सर्प पेड़ पर डोलता है। 16. पिता घर में परमेश्वर की स्तुति करता है। 17. मामा सायकाल में लक्ष्मी की वन्दना करता है। 18. पदार्थ झोंपडी में जलकर नष्ट होंगे। 19. वह यमुना में नहाता है। 20 उसका घर में चित्त लगता है।

उदाहरण—

आकाश में बादल गरजते हैं=णहे/णहम्मि मेहा गज्जन्ति ।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। वाक्यों में प्रयुक्त सम्बोधन के सभी विकल्प लिखिए—

1. हे स्वामी ! आप हमारी रक्षा करें। 2. हे राजा ! आपके राज्य में सुख होवे। 3. हे मित्र ! तुम मेरे घर पर आओ। 4. हे माता ! तुम बालकों को पालो। 5. हे सीता ! जंगल में दुख होगा। 6. हे पुत्र ! सत्य बोलो। 7. हे युवती ! तुम हँसो। 8. बालको ! तुम सब पुस्तक पढ़ो। 9. मित्रो ! आप सब राज्य से डरो। 10. साधुओ ! संयम पालो।

उदाहरण—

हे स्वामी आप हमारी रक्षा करें=सामी/सामि तुम्हे अम्हे/अम्ह रक्खह ।

अभ्यास-36

(क) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप बनाकर वाक्य बनाइए—

1. वह आकाश में विमान उड़ाता है। 2. राजा राज्यों में शासन फैलावे। 3. हनुमान जंगल जलाता है। 4. सेनापति सेना को छिपावेगा। 5. तुम बुढ़ापे में वैराग्य बढ़ाओ। 6. साधु मनुष्य को शान्त करता है। 7. माता पुत्री को नचाने के लिए रुकाती है। 8. वह मुझको हँसाती है। 9 मैं उसको जगाता हूँ। 10. तुम उसको छिपाते हो। 11. वे उन सबको नचाते हैं। 12. नागरिक खेत में धान उगाते हैं। 13 राक्षस बच्चे को मरवाता है। 14. मौसी पुत्री को समुद्र में कुदाती है। 15. दादी पोते को नहलाती है। 16. मामा बेटी को ठहराता है। 17. पिता पुत्री को सुलावे। 18. राक्षस बालकों को डराते हैं। 19. दादी बालकों को खिलाती है। 20. राजा साधु को बैठाता है।

उदाहरण —

वह आकाश में विमान उड़ाता है=सो णहे/णहम्मि विमाणं ओड्डइ/ओड्डेइ/ओड्डावइ/ओड्डावेइ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए। कर्मवाच्य के प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़कर वाक्य बनाइए—

1. उसके द्वारा आकाश में विमान उड़ाया जाता है। 2. राजाओं द्वारा राज्य में शासन फैलाया जाता है। 3. हनुमान द्वारा जंगल जलाया जाता है। 4. सेनापति द्वारा सेना को छिपाया जाता है। 5 तुम्हारे द्वारा बुढ़ापे में

नोट—इस अभ्यास-36 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 78 का अध्ययन कीजिए।

वैराग्य बढ़ाया जाता है । 6. साधु द्वारा मनुष्य को जिवाया जाता है । 7. माता द्वारा पुत्री नाचने के लिए रुकवाई जाती है । 8. उसके द्वारा मैं हँसाया जाता हूँ । 9. मेरे द्वारा वह जगाया जाता है । 10. तुम्हारे द्वारा वह छिपाया जाता है । 11 उनके द्वारा वे सब नचाये जाते हैं । 12. नागरिक द्वारा खेत में धान उगाया जाता है । 13. राक्षस द्वारा बच्चे को मरवाया जाता है । 14 दादा द्वारा पोते को नहलाया जाता है । 15. मामा द्वारा बेटी को ठहराया जाता है । 16. पिता द्वारा पुत्र को खिलाया जाता है । 17. राक्षसों द्वारा बच्चों को डराया जाता है । 18. दादा द्वारा बालक को खिलाया जाता है । 19 साधु द्वारा राजा को बैठाया जाता है । 20. मौसी के द्वारा बच्चे को समुद्र में कुदाया जाता है ।

उदाहरण—

उसके द्वारा आकाश में विमान उड़ाया जाता है=तेण णहे विमाणं उड्डाविज्जइ/ उड्डावीअइ ।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए । संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्तरूपों का कोई एक विकल्प लिखिए—

1. मेरे द्वारा वह हँसाया गया । 2. तुम्हारे द्वारा मैं छिपाया गया । 3. पिता द्वारा पुत्र दिखाया गया । 4. मौसी के द्वारा पुत्री को नचाया गया । 5. हमारे द्वारा पदार्थ खरीदवाये गये । 6. वह हँसाता हुआ खेलता है । 7. तुम भागते हुए थकते हो । 8. पुत्र डराता हुआ छिपता है । 9. बालक रुलाता हुआ भागता है । 10. मामा ठहराता हुआ प्रसन्न होता है । 11 तुम्हारे द्वारा वह हँसाया जाना चाहिए । 12. गुरु द्वारा शिक्षा फैलाई जानी चाहिए । 13. मुनि द्वारा तप करवाया जाना चाहिए । 14. योगी द्वारा ध्यान कराया जाना चाहिए । 15. उसके द्वारा पदार्थ रखवाया जाना चाहिए । 16. तुम हँसाकर जीते हो । 17. माता पुत्री को नचाकर प्रसन्न होती है । 18. मुनि मनुष्यों को ध्यान कराकर बैठता है । 19. वह जगाकर भागती है । 20. वे सब खिलाकर प्रसन्न होते हैं । 21. वह हँसाने के लिए जागता है । 22. योगी ध्यान कराने के लिए

बैठता है। 23. वह उसको भगाने के लिए कहता है । 24. माता पुत्री को नचाने के लिए उठती है। 25. दादी पोते को सुलाने के लिए प्रयत्न करती है।

उदाहरण—

मेरे द्वारा वह हँसाया गया=ममं सो हासिअ/हसाविअ।

————

अभ्यास-37

(क) संज्ञाओं में स्वार्थिक प्रत्यय जोड़कर निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

1. कमल खिलता है। 2. जीव प्रसन्न होता है। 3 योगी मुझको अच्छा लगता है। 4. पुत्र पिता का सम्मान करेगा। 5. सेनापति शत्रु को जीते। 6. बालक मधु चखता है। 7. आत्मा मन को प्रकाशित करती है। 8. राजा मन्त्री को धिक्कारता है। 9. माता पुत्र को बधाई देती है। 10. पिता पुत्र को स्मरण करता है। 11. हाथी घास खावेगा। 12 मनुष्य गुरु की स्तुति करते हैं। 13. गुरु परमेश्वर की वन्दना करते हैं। 14. दामाद भोजन जीमे। 15. वृक्ष गिरता है। 16. धनुष सोहता है। 17. रत्न टूटता है। 18. घर अच्छा लगता है। 19. मौसी बैठे। 20. बहिन उठे।

उदाहरण—

कमल खिलता है=कमलअं/कमलिल्लं/कमलुल्लं विअसइ ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

1. वह मनुष्य हँसता है। 2. ये मनुष्य हँसते हैं। 3. वह यह ग्रन्थ पढ़ता है। 4. वे ये ग्रन्थ पढ़ते हैं। 5. मैं इसके लिए जीता हूँ। 6. वह इनके लिए जीती है। 7. मैं यह व्रत पालता हूँ। 8. तुम क्या करते हो? 9. जो मनुष्य थकता है वह सोता है। 10. जिसका शरीर थका हुआ है, उसका बुढ़ापा बढ़ा हुआ है। 11. जिसके द्वारा सोया जाता है उसके द्वारा हँसा जाता है। 12. मैं जिसको बुलाता हूँ वह तुम हो। 13. जिस लकड़ी पर तुम बैठे हो वह मेरी है। 14. वह किसका पुत्र है? 15. तुम किन कार्यों को करते हो? 16. कौन

नोट—इस अभ्यास-37 को हल करने के लिए **'प्राकृत रचना सौरभ'** के पाठ 79 से 81 का अध्ययन कीजिए।

नाचता है ? 17. वह किससे पानी पीता है ? 18. तुम किसके लिए जीते हो ? 19 किस राज्य की तुम रक्षा करते हो ? 20. किस घर में वह रहता है ?

उदाहरण—

वह मनुष्य हँसता है=सो मणुयो हसइ ।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए--

1. जब तक तुम पढ़ोगे तब तक मैं तुमको पालूंगा । 2. जब तक तुम जागते हो तब तक मैं आकाश देखता हूँ । 3. जहाँ तुम्हारा गांव है वहां मेरा घर है । 4. जहां भी तुम जाओगे वहां प्रसन्न होओगे । 5 जिस प्रकार वह सुख चाहता है उसी प्रकार मैं सुख चाहता हूं । 6. जिस प्रकार तुम खेलते हो उसी प्रकार मैं खेलूंगा । 7. मन्त्री कहां रहता है ? 8. वे सब कहां सोते हैं ? 9. मैं यहां सोता हूँ । 10. आज यहां मुनि आयेंगे । 11. तुम मत कूदो । 12 बालक नहीं उठता है । 13. माता नहीं थकती है । 14. यदि तुम कहते हो तो मैं गांव जाता हूँ । 15. यदि तुम कहोगे तो मैं खाना खाऊँगा । 16. जिस प्रकार तुम मन लगाकर खेलते हो, उसी प्रकार पढ़ो भी । 17. जिस प्रकार मां पुत्र को पालती है उसी प्रकार राजा राज्य को पालता है । 18. जैसे तुम गाओ वैसे नाचो भी । 19. तुम मद्य मत पीओ । 20. तुम इस प्रकार मत बैठो । 21. शत्रु लड़ा इसीलिए मरा । 22 जब तक वह सत्य बोलता है तब तक वह प्रसन्न होता है । 23. तुम पुत्र के बिना घर मत जाओ । 24. तुम भी नाचो वह भी नाचेगा ।

उदाहरण—

जब तक तुम पढ़ोगे तब तक मैं तुमको पालूंगा=जाव तुमं पढिहिसि ताव अहं तुमं पालिहिमि ।

अभ्यास-38

अनियमित कर्मवाच्य के क्रिया-रूप

(प्राकृत में) सकर्मक क्रिया मे **'इज्ज'**, **'ईअ/ईय'** प्रत्यय लगाकर जो रूप बनाया जाता है वह कर्मवाच्य का **नियमित** क्रिया-रूप कहा जाता है। जैसे—**'कर'** क्रिया में **'इज्ज'** या **'ईअ/ईय'** प्रत्यय लगाकर बनाया गया—**'कर+इज्ज=करिज्ज'**, **'कर+ईय/ईअ=करीय/करीअ'** रूप कर्मवाच्य का **नियमित** रूप है।[1] काल, पुरुष और वचन का प्रत्यय जोड़ने पर उस काल, पुरुष और वचन में कर्मवाच्य का **नियमित** क्रिया-रूप बन जायेगा। जैसे—करिज्जइ या करीयइ/करीअइ=वर्तमानकाल, अन्य पुरुष, एकवचन।

इसके विपरीत सकर्मक क्रिया में बिना 'इज्ज' या 'ईअ/ईय' प्रत्यय लगाए जो रूप तैयार मिलता है, उसमें काल, पुरुष और वचन का प्रत्यय लगा रहता है, वह कर्मवाच्य का अनियमित क्रिया-रूप कहा जाता है। जैसे—

1. **कीरइ, दीसइ** आदि—अनियमित कर्मवाच्य का क्रिया-रूप (वर्तमानकाल, अन्य पुरुष, एकवचन)।

इनमें क्रिया को अलग नहीं किया जा सकता है। इनका ज्ञान साहित्य में उपलब्ध प्रयोगों के आधार से किया जाना चाहिए। अनियमित कर्मवाच्य के कुछ क्रियारूप संग्रहीत हैं—

वर्तमानकाल अन्य पुरुष एकवचन

1. **आढप्पइ**=आरम्भ किया जाता है।	2. **कीरइ**=किया जाता है।
3. **खम्मइ**=खोदा जाता है।	4. **गम्मइ**=जाया जाता है।
5. **घेप्पइ**=ग्रहण किया जाता है।	6. **छिप्पइ**=छुआ जाता है।
7. **जिव्वइ**=जीता जाता है।	8. **डज्झइ**=जलाया जाता है।
9. **णज्जइ**=जाना जाता है।	10. **णव्वइ**=जाना जाता है।

1. देखें **'प्राकृत रचना सौरभ'** पाठ 54।

11. थुव्वइ=स्तुति की जाती है।

12. दुब्भइ =दूहा जाता है।

13 दीसइ =देखा जाता है।

14. बज्झइ =बांधा जाता है।

15. भण्णइ=कहा जाता है।

16. भुज्जइ =भोगा जाता है।

17. रुब्भइ =रोका जाता है।

18. रुव्वइ =रोया जाता है।

19. लब्भइ =प्राप्त किया जाता है।

20. लुव्वइ =काटा जाता है।

21. लिब्भइ =चाटा जाता है।

22. वुच्चइ = कहा जाता है।

23. विलिप्पइ =लीपा जाता है।

24. विढप्पइ =उपार्जन किया जाता है।

25. सीसइ =कहा जाता है।

26. संपज्जइ =प्राप्त किया जाता है।

27. सुव्वइ =सुना जाता है।

28. सिप्पइ =सींचा जाता है।

29. हम्मइ =मारा जाता है।

30. हीरइ =हरण किया जाता है।

(क) निम्नलिखित कर्मवाच्य के वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए। अनुवाद में कर्मवाच्य के अनियमित क्रियारूपों का प्रयोग कीजिए—

1. मेरे द्वारा स्तुति आरम्भ की जाती है। 2. उस महिला के द्वारा व्रत किया जाता है। 3. दोनों भाइयों के द्वारा गड्डा खोदा जाता है। 4. कन्याओं द्वारा गीत सुना जाता है। 5. हमारे द्वारा गुरु से शिक्षा ग्रहण की जाती है। 6. बालक के द्वारा समुद्र का जल डरते हुए छुआ जाता है। 7. राजा के द्वारा गांव जीता जाता है। 8. उनके द्वारा मेरा घर जलाया जाता है। 9. योगियों द्वारा संसार का दुःख जाना जाता है। 10. बहिन द्वारा भोजन करने के लिए घर जाया जाता है। 11. मुनियों द्वारा आगम जाना जाता है। 12. माता द्वारा पुत्र की अभिलाषा जानी जाती है। 13. महिलाओं द्वारा मुनि की स्तुति की जाती है। 14. उसके द्वारा गाय दूही जाती है। 15. राजा के द्वारा राज्य की शोभा देखी जाती है। 16. मेरे द्वारा रस्सी से गाय बांधी जाती है। 17. श्रमणी के द्वारा व्रत की विधि कही जाती है। 18. राजाओं के द्वारा वैभव भोगा जाता है। 19. माता के द्वारा भागता हुआ पुत्र रोका जाता है। 20. दुःख के कारण मौसी द्वारा रोया जाता है। 21. प्रयास करते हुए मामा द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। 22. बालक के द्वारा मधु चाटा जाता है। 23. महिला के द्वारा वस्त्र काटा जाता है। 24. तुम्हारे द्वारा धन प्राप्त किया

जाता है । 25. साधु के द्वारा कथा कही जाती है । 26. महिला के द्वारा झोंपड़ी लीपी जाती है । 27. पुत्र के द्वारा धन उपार्जन किया जाता है । 28. मुनि के द्वारा संसार का दुःख कहा जाता है । 29. स्वामिनी के द्वारा रत्न प्राप्त किया जाता है । 30 तुम्हारी पुत्री के द्वारा प्रशंसा की जाती है । 31. पुत्री के द्वारा जल से वृक्ष सींचा जाता है । 32. सेनापति के द्वारा शत्रु मारा जाता है । 33. मन्त्री द्वारा राजा का पुत्र हरण किया जाता है ।

उदाहरण—

मेरे द्वारा स्तुति आरम्भ की जाती है=मइ/मए/मे/ममए थुइ आढप्पइ ।

——

अभ्यास-39

अनियमित भूतकालिक कृदन्त

प्राकृत में भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकाल के प्रत्यय और भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। भूतकालिक कृदन्त के लिए क्रिया में **'अ/य'**, **त**, **द** प्रत्यय जोड़े जाते हैं[1]। जैसे —

हस + अ/य, त, द = हसिअ/हसिय, हसित, हसिद = हँसा,

ठा + अ/य, त, द = ठाअ/ठाय, ठात, ठाद = ठहरा,

झा + अ/य, त, द = झाअ/झाय, झात, झाद = ध्यान किया गया आदि।

इस प्रकार **अ, त, द** प्रत्यय के योग से बने भूतकालिक कृदन्त 'नियमित भूतकालिक कृदन्त' कहलाते हैं। इनमें मूलक्रिया को प्रत्यय से अलग करके स्पष्टतः समझा जा जा सकता है। इन कृदन्तों के रूप पुल्लिग में **'देव'** के समान, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के समान तथा स्त्रीलिंग में 'कहा' के समान चलेंगे।

किन्तु जब **'अ, त, द'** प्रत्यय जोड़े बिना ही भूतकालिक कृदन्त प्राप्त हो जाए या तैयार मिले तो वे अनियमित भूतकालिक कृदन्त कहलाते हैं। इनमें मूलक्रिया को प्रत्यय से अलग करके स्पष्टतः नहीं समझा जा सकता है। जैसे—

वुत्त = कहा गया,
दिट्ठ = देखा गया,
दिण्ण = दिया गया, आदि।

ये सभी अनियमित भूतकालिक कृदन्त हैं इनमें से क्रिया को अलग नहीं किया जा सकता है। इनके रूप भी पुल्लिग में 'देव' के समान, नपुंसकलिंग में 'कमल' के समान तथा स्त्रीलिंग में 'कहा' के समान चलेंगे।

सकर्मक क्रियाओं से बने हुए भूतकालिक कृदन्त (नियमित या अनियमित) कर्मवाच्य में ही प्रयुक्त होते हैं। केवल गत्यार्थक क्रियाओं से बने भूतकालिक कृदन्त (नियमित या अनियमित) कर्मवाच्य और कर्तृवाच्य दोनों में प्रयुक्त होते हैं। अकर्मक

---

1. देखे **'प्राकृत रचना सौरभ'** पाठ 42 व 57।

क्रियाओं से बने हुए भूतकालिक कृदन्त (नियमित या अनियमित) कर्तृवाच्य और भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं। अनियमित भूतकालिक कृदन्तों का ज्ञान साहित्य में उपलब्ध उदाहरणों के आधार से किया जाना चाहिए। यहां अनियमित भूतकालिक कृदन्त के विभक्तिरहित प्रयोग संग्रहीत हैं—

1. सकर्मक क्रियाओं से बने अनियमित भूतकालिक कृदन्त—

कृदन्त	कर्मवाच्य में अर्थ	प्रयोग
1. दिट्ठ	देखा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
2. संपुण्ण	पूर्ण कर दिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
3. खद्ध	खा लिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
4. दिण्ण	दिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
5. णिहिय	रखा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
6. पवन्न	पाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों मे
7. छुद्ध	डाल दिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
8. दड्ढ	जलाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
9. वुत्त	कहा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
10. दुम्मिय	कष्ट पहुंचाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
11. किअ	किया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
12. लुअ	काट दिया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
13. हय	मारा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में
14. णीय	ले जाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में

2. गत्यार्थक अनियमित भूतकालिक कृदन्त—

कृदन्त	कर्तृवाच्य में अर्थ	प्रयोग	कर्मवाच्य में अर्थ	प्रयोग
1. गय/गअ	गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	जाया गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में

2. **पत्त**	पहुंचा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	पहुंचा गया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में

3. अकर्मक क्रियाओं से बने अनियमित भूतकालिक कृदन्त—

कृदन्त	कर्तृवाच्य में अर्थ	प्रयोग	भाववाच्य में अर्थ	प्रयोग
1. **मुअ**	मरा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	मरा गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
2. **थिअ**	ठहरा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	ठहरा गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
3. **संतुट्ठ**	प्रसन्न हुआ	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	प्रसन्न हुआ गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
4. **नट्ठ**	नष्ट हुआ	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	नष्ट हुआ गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
5. **सुत्त**	सोया	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	सोया गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
6. **बद्ध**	बंधा	तीनो लिंगों व दोनों वचनों में	बंधा गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में
7. **भीय**	डरा	तीनों लिंगों व दोनों वचनों में	डरा गया	सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में

1.क सकर्मक क्रिया से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्त का सभी विकल्पों-सहित प्रयोग --

कर्मवाच्य में प्रयोग

किअ=किया गया

(1) मामा के द्वारा गर्व किया गया।
—माउलेण/माउलेणं गव्वो **किओ** ।

(2) बहिन के द्वारा व्रत किए गए।
—ससाअ/ससाइ/ससाए वया **किआ**।

(3) राजा के द्वारा शासन किया गया।
—नरिंदेण/नरिंदेणं सासणं **किअं**।

(4) मालिक द्वारा विभिन्न कर्म किए गए।
—सामिणा कम्माणि/कम्माइँ/कम्माइं **किआणि/किआइँ/किआइं**।

(5) गुरु के द्वारा परीक्षा की गई।
—गुरुणा परिक्खा **किआ**।

(6) युवती के दारा अभिलाषाएँ की गईं।
—जुवइअ/जुवइइ/जुवइए अहिलासा/अहिलासाउ/अहिलासाओ **किआ/ किआउ/किआओ**।

2.क गत्यार्थक क्रिया से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्त का सभी विकल्पों-सहित प्रयोग—

कर्तृवाच्य में प्रयोग—

गय/गअ=गया

(1) पुत्र घर गया।
—पुत्तो घर **गयो**।

(2) पोते घर गये।
—पोत्ता घरं **गया**।

(3) विमान जंगल गया।
—विमाणं वणं **गयं**।

(4) नागरिक घर गये।
—णयरजणाणि/णयरजणाइं/णयरजणाइँ घरं **गयाणि/गयाइं/गयाइँ**।

(5) कन्या घर गई।

—कन्ना घरं **गया**।

(6) पुत्रियां घर गईं।

—सुया/सुयाउ/सुयाओ घरं **गया/गयाउ/गयाओ**।

2.ख **काव्य में गत्यार्थक क्रिया के कर्मवाच्य के प्रयोग बहुत कम मिलते हैं। अतः यहां एक ही उदाहरण दिया जा रहा है—**

कर्मवाच्य में प्रयोग

(1) पुत्र के द्वारा घर जाया **गया**।

—पुत्तेण/पुत्तेणं घरो **गयो**।

3 क **अकर्मक क्रिया से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्त का सभी विकल्पों-सहित प्रयोग—**

कर्तृवाच्य में प्रयोग

मुअ=मरा

(1) शत्रु मरा।

—सत्तू **मुओ**।

(2) शत्रु मरे।

—सत्तू/सत्तउ/सत्तओ/सत्तवो/सत्तुणो **मुआ**।

(3) भय मरा।

—भयं **मुअं**।

(4) भय मरे।

—भयाइं/भयाइँ/भयाणि **मुआइं/मुआइँ/मुआणि**।

(5) पुत्री मरी।

—सुया **मुआ**।

(6) बहिनें मरीं।

—ससा/ससाउ/ससाओ **मुआ/मुआउ/मुआओ**।

3.ख भाववाच्य में प्रयोग

मुअ=मरा गया ।

(1) शत्रु के द्वारा मरा गया ।
—सत्तुणा **मुअं** ।

(2) शत्रुओं के द्वारा मरा गया ।
—सत्तूहि/सत्तूहिं/सत्तूहिँ **मुअं** ।

(3) नागरिक के द्वारा मरा गया ।
—णयरजणेण/णयरजणेण **मुअं** ।

(4) नागरिकों द्वारा मरा गया ।
—णयरजणेहि/णयरजणेहिं/णयरजणेहिँ **मुअं** ।

(5) पुत्री के द्वारा मरा गया ।
—सुयाअ/सुयाइ/सुयाए **मुअं** ।

(6) पुत्रियों के द्वारा मरा गया ।
—सुयाहि/सुयाहिं/सुयाहिँ **मुअं** ।

(क) सकर्मक क्रियाओं से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्तों के सभी विकल्पों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

1. राजा द्वारा सेनापति के लिए हाथी दिया गया । 2. मुनि द्वारा पिता के लिए आगम दिए गए । 3. माता द्वारा पुत्री के लिए धन दिया गया । 4. माता द्वारा पुत्री के लिए वस्त्र दिए गए । 5. राजा द्वारा सेनापति के लिए मणि दी गई । 6. मालिक द्वारा भाई के लिए गाएं दी गईं । 7 मामा के द्वारा घर में ग्रन्थ रखा गया । 8. हरि के द्वारा घर में आगम रखे गए । 9. दादा के द्वारा कलश में धन रखा गया । 10. दादी के द्वारा पोटलियां खेत में रखी गईं । 11 मौसी के द्वारा साड़ी पेड़ पर रखी गई । 12. महिलाओं के द्वारा कलश खेत में रखे गए । 13. तपस्वियों द्वारा जल प्राप्त किया गया । 14. मामा के द्वारा ग्रन्थ प्राप्त किए गए । 15. युवती के द्वारा भोजन प्राप्त किया गया । 16. बालकों द्वारा कमल प्राप्त किए गए । 17. राजा के द्वारा वैभव प्राप्त

किया गया। 18. बहिन के द्वारा मणि प्राप्त की गई। 19. स्वामी के द्वारा धनुष पृथ्वी पर डाल दिया गया। 20. राजा के द्वारा समुद्र में रत्न डाल दिया गया। 21. महिला द्वारा कुवे में धन डाल दिया गया। 22. मनुष्यों द्वारा खेत में लकड़ियां डाल दी गई। 23. मौसी द्वारा खेत में रस्सी डाल दी गई। 24. युवती द्वारा कलश में मणियां डाल दी गई। 25. पुत्र के द्वारा वस्त्र जलाया गया। 26. मन्त्री के द्वारा घर जलाए गए। 27. मामा के द्वारा पोटली जलाई गई। 28. राजा के द्वारा राज्य जलाए गए। 29 पुत्री के द्वारा रस्सी जलाई गई। 30. शत्रुओं के द्वारा झोंपडियां जलाई गई। 31 माता के द्वारा दुःख कहा गया। 32. मुनि के द्वारा आगम कहे गए। 33. मामा के द्वारा सत्य कहा गया। 34. बहिनों के द्वारा सुख (विभिन्न) कहे गए। 35. पुत्री द्वारा कथा कही गई। 36. माता द्वारा कथाएं कही गई। 37. राजा द्वारा मन्त्री कष्ट पहुंचाया गया। 38. दादा द्वारा पोते कष्ट पहुंचाए गए। 39. शत्रु द्वारा नागरिक कष्ट पहुंचाया गया। 40. मन्त्री द्वारा नागरिक कष्ट पहुँचाए गए। 41. बहिन द्वारा पुत्री कष्ट पहुंचायी गई। 42. बहिन द्वारा पुत्रियां कष्ट पहुंचायी गई। 43. मामा द्वारा सांप देखा गया। 44. मामा द्वारा सांप देखे गए। 45. बालक द्वारा विमान देखा गया। 46. बालक दारा विमान देखे गए। 47. माता के द्वारा गुफा देखी गयी। 48. माता द्वारा गुफाएँ देखी गई। 49. मुनि द्वारा विधि पूर्ण कर दी गई। 50. मुनियों द्वारा विधियाँ पूर्ण कर दी गयीं। 51. मनुष्य द्वारा कर्म पूर्ण कर दिया गया। 52. मनुष्यों द्वारा कर्म पूर्ण कर दिए गए। 53. माता के द्वारा पुत्री की अभिलाषा पूर्ण कर दी गयी। 54. माता के द्वारा पुत्री की अभिलाषाएँ पूर्ण कर दी गयीं। 55. सिंह के द्वारा गाय खा ली गयी। 56. सिंह के द्वारा गाएं खा ली गयीं। 57. पुत्र के द्वारा जामुन खा लिया गया। 58. पुत्रों के द्वारा जामुन खा लिए गए। 59. पुत्रों के द्वारा दही खा लिया गया। 60. कुत्ते के द्वारा हड्डियाँ खा ली गयीं। 61. मामा द्वारा पेड़ काट दिया गया। 62. मामाओं द्वारा पेड़ काट दिए गए। 63. पुत्र द्वारा कागज काट दिया गया। 64. पुत्र द्वारा कागज काट दिए गए। 65. सेनापति द्वारा शत्रु का घुटना काट दिया गया। 66. सेनापति द्वारा शत्रुओं के घुटने काट दिए गए। 67. राजा के द्वारा हाथी मारा गया। 68. राजा के द्वारा हाथी मारे गए। 69. सेनापति के द्वारा नागरिक मारा गया। 70. सेनापति के द्वारा नागरिक मारे गए। 71. शत्रु के द्वारा राजा की

बहिन मारी गयी। 72. शत्रु द्वारा राजा की बहिनें मारी गयीं। 73. मन्त्री के द्वारा पुत्र ले जाया गया। 74. मन्त्री के द्वारा पुत्र ले जाए गए। 75. राजा के द्वारा नागरिक ले जाया गया। 76. राजा के द्वारा नागरिक ले जाए गए। 77. मौसी के द्वारा पुत्री ले जायी गई। 78. मौसी के द्वारा पुत्रियाँ ले जायी गईं।

उदाहरण—

राजा द्वारा सेनापति के लिए हाथी दिया गया=नरिंदेण सेणावइणो हत्थी दिण्णो।

(ख) गत्यार्थक क्रियाओं से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्तों के सभी विकल्पों-सहित निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

1. पुत्र घर गया। 2. पुत्र घर गए। 3. पुत्र द्वारा घर जाया गया। 4. माता खेत पहुँची। 5. माताएँ खेत पहुँचीं। 6. माता द्वारा खेत पहुँचा गया।

उदाहरण—

पुत्र घर गया=पुत्तो घर गयो।

(ग) अकर्मक क्रियाओं से बने हुए अनियमित भूतकालिक कृदन्तों के सभी विकल्पों-सहित निम्नलिखित वाक्यों की प्राकृत में रचना कीजिए—

1. पुत्र प्रसन्न हुआ। 2. पुत्र प्रसन्न हुए। 3. नागरिक प्रसन्न हुआ। 4. नागरिक प्रसन्न हुए। 5. माता प्रसन्न हुई। 6. माताएं प्रसन्न हुईं। 7. गाँव नष्ट हुआ। 8. गाँव नष्ट हुए। 9. विमान नष्ट हुआ। 10. विमान नष्ट हुए। 11. शत्रु मरा। 12. शत्रु मरे। 13. नागरिक मरा। 14. नागरिक मरे। 15 पुत्री मरी। 16. पुत्रियाँ मरीं। 17. मामा ठहरा। 18. मामा ठहरे। 19. नागरिक ठहरा। 20. नागरिक ठहरे। 21. स्त्री ठहरी। 22. स्त्रियाँ ठहरीं। 23. ऊँट सोया। 24. ऊँट सोये। 25. नागरिक सोया। 26. नागरिक सोये। 27. बहिन सोयी। 28. बहिनें सोयीं। 29. पोता डरा। 30. पोते

डरे। 32. नागरिक डरा। 33. नागरिक डरे। 34. कन्या डरी। 35. कन्याएं डरीं। 36. शत्रु द्वारा मरा गया। 37. पुत्रियों द्वारा मरा गया। 38. शत्रुओं द्वारा मरा गया। 39. मामा द्वारा ठहरा गया। 40. स्त्रियों द्वारा ठहरा गया। 41. कर्मों द्वारा नष्ट हुआ गया। 42. बहिनों द्वारा सोया गया। 43. पोतों द्वारा डरा गया। 44 कन्या द्वारा डरा गया।

उदाहरण—

पुत्र प्रसन्न हुआ=पुत्तो संतुट्ठो।

अभ्यास-40

प्राकृत भाषा को अच्छी तरह समझने के लिए वाक्य में निहित प्रत्येक पद जैसे - संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, कृदन्त आदि का व्याकरणिकरूप से विश्लेषण करने का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

इसके लिए प्रत्येक पद की व्याकरणिक विश्लेषण-पद्धति तथा कुछ वाक्यों का व्याकरणिक विश्लेषण उदाहरणस्वरूप दिया जा रहा है।

संकेत-सूची

अक —अकर्मक क्रिया
अनि —अनियमित
आज्ञा —आज्ञा
कर्म —कर्मवाच्य
क्रिविअ—क्रिया विशेषण अव्यय
प्रे —प्रेरणार्थक क्रिया
भवि —भविष्यत्काल
भाव —भाववाच्य
भूकृ —भूतकालिक कृदन्त
व —वर्तमानकाल
वकृ —वर्तमान कृदन्त
वि —विशेषण
विधि —विधि
विधिकृ —विधिकृदन्त
स —सर्वनाम
संकृ —सम्बन्धक कृदन्त
सक —सकर्मक क्रिया
सवि —सर्वनाम विशेषण
स्त्री —स्त्रीलिंग
हेकृ —हेत्वर्थक कृदन्त

- ( ) —इस प्रकार के कोष्ठक में मूलशब्द रखा गया है।
- [( )+( )+( )....] इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर + चिह्न शब्दों में सन्धि का द्योतक है। यहां अन्दर के कोष्ठकों में मूलशब्द ही रखे गए हैं।
- [( ) - ( ) - ( ) ..] इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर '—' चिह्न समास का द्योतक है।
- [[( )—( )—( )] वि] जहां समस्त पद विशेषण का कार्य करता है वहाँ इस प्रकार के कोष्ठक का प्रयोग किया गया है।
- जहां कोष्ठक के बाहर केवल संख्या (जैसे 1/1, 2/1 आदि) ही लिखी हैं वहां उस कोष्ठक के अन्दर का शब्द 'संज्ञा' है।
- जहां कर्मवाच्य, कृदन्त आदि प्राकृत के नियमानुसार नहीं बने हैं वहां कोष्ठक के बाहर '**अनि**' भी लिखा गया है।

1/1 अक या सक — उत्तम पुरुष/एकवचन	3/2 — तृतीया/बहुवचन
1/2 अक या सक — उत्तम पुरुष/बहुवचन	4/1 — चतुर्थी/एकवचन
2/1 अक या सक — मध्यम पुरुष/एकवचन	4/2 — चतुर्थी/बहुवचन
2/2 अक या सक — मध्यम पुरुष/बहुवचन	5/1 — पंचमी/एकवचन
3/1 अक या सक — अन्य पुरुष/एकवचन	5/2 — पंचमी/बहुवचन
3/2 अक या सक — अन्य पुरुष/बहुवचन	6/1 — षष्ठी/एकवचन
1/1 — प्रथमा/एकवचन	6/2 — षष्ठी/बहुवचन
1/2 — प्रथमा/बहुवचन	7/1 — सप्तमी/एकवचन
2/1 — द्वितीया/एकवचन	7/2 — सप्तमी/बहुवचन
2/2 — द्वितीया/बहुवचन	8/1 — सम्बोधन/एकवचन
3/1 — तृतीया/एकवचन	8/2 — सम्बोधन/बहुवचन

व्याकरणिक विश्लेषण पद्धति

संज्ञा	नरिंदस्स	(नरिंद) 4/1
सर्वनाम	तेण	(त) 3/1 स
सर्वनाम विशेषण	सव्व	(सव्व) 2/1 सवि
क्रिया	होहिइ	(हो) भवि 3/1 अक
सम्बन्धक कृदन्त	णिसुणिऊण	(णिसुण + ऊण) संकृ
हेत्वर्थक कृदन्त	हसित्तए	(हस + त्तए) हेकृ
वर्तमानकालिक कृदन्त	जोयंतो	(जोय + न्त) वकृ 1/1
भूतकालिक कृदन्त	मारिओ	(मार→मारिअ) भूकृ 1/1
विशेषण	समग्गलं	(समग्गल) 2/1 वि
भाववाच्य	णच्चिज्जइ	(णच्च + इज्ज) व भाव 3/1 अक
कर्मवाच्य	विलसिज्जइ	(विलस + इज्ज) व कर्म 3/1 सक
प्रेरणार्थक	दरिसावमि	(दरिस + आव) प्रे व 1/1 सक
स्वार्थिक प्रत्यय	जंबूओ	(जंबूअ) 1/1 'अ' स्वार्थिक

अव्यय	विणु	अव्यय
क्रिया विशेषण	अवसेण	(अवस) 3/1 क्रिवि
भूतकालिक कृदन्त	मुक्को	(मुक्क) भूकृ 1/1 अनि
कर्मवाच्य अनियमित	लब्भइ	(लब्भइ) व कर्म 3/1 सक अनि

उदाहरण—

1. सुयणो न कुप्पइ च्चिय अह कुप्पइ मंगुलं न चिंतेइ ।

सुयणो	(सुयण) 1/1	सज्जन
न	अव्यय	नहीं
कुप्पइ	(कुप्प) व 3/1 सक	क्रोध करता है
च्चिय	अव्यय	भी
अह	अव्यय	यदि
मंगुलं	(मंगुल) 2/1	अनिष्ट
न	अव्यय	नहीं
चिंतेइ	(चिंत) व 3/1 सक	सोचता है

2. दूरट्ठिया न दूरे सज्जनचित्ताण पुव्वमिलियाणं ।

दूरट्ठिया	[(दूर) अ=दूर-(ट्ठिय) भूकृ 1/2 अनि]	दूरस्थित
न	अव्यय	नहीं
दूरे	अव्यय	दूर
सज्जनचित्ताण	[(सज्जन)-(चित्त) 4/2]	सज्जन चित्तों के लिए
पुव्वमिलियाणं	[(पुव्व) क्रिविअ=पूर्व में — (मिल) भूकृ 4/2]	पूर्व में मिले हुए (सज्जन चित्तों) के लिए

3. सीलं वरं कुलाओ दालिद्दं भव्वयं च रोगाओ ।

सीलं	(सील) 1/1	शील

वरं	अव्यय	श्रेष्ठतर
कुलाओ	(कुल) 5/1	कुल से
दालिद्दं	(दालिद्द) 1/1	निर्धनता
भव्वयं	(भव्व) 1/1 वि 'य' स्वार्थिक	अच्छी
च	अव्यय	तथा
रोगाओ	(रोग) 5/1	रोग से

———

अभ्यास-41

कस्सेसा भज्जा

हत्थिणाउरे नयरे सूरनामा रायपुत्तो णाणागुणरयण संजुत्तो वसइ। तस्स भारिया गंगाभिहाणा सीलाइगुणालंकिया परमसोहग्गसारा। सुमइनामा तेसिं धूया। सा कम्मपरिणामवसओ जणय-जणणी भाया-माउलेहिं पुढो-पुढो वराण दिन्ना।

चउरो वि ते वरा एगम्मि चेव दिणे परिणेउं आगया परोप्परं कलहं कुणन्ति। तओ तेसिं विसमे संगामे जायमाणे बहुजणक्खयं दट्ठूण अग्गिमि पविट्ठा सुमईकन्ना। तीए समं णिविडणेहेण एगो वरो वि पविट्ठो। एगो अट्ठीणि गंगप्पवाहे खिविउं गओ। एगो चिआरक्खं तत्थेव जलपूरे खिविऊण तद्दुक्खेणं मोहमहागह-गहिओ महीयले हिण्डइ। चउत्थो तत्थेव ठिओ तं ठाणं रक्खंतो पइदिणं एगमन्नपिंडं मुअंतो कालं गमेइ।

अह तइओ नरो महीयलं भमन्तो कत्थवि गामे रंधणघरम्मि भोअणं कराविऊण जिमिउं उवविट्ठो। तस्स घरसामिणी परिवेसइ। तया तीए लहुपुत्तो अईव रोइइ। तओ तीए रोसपरव्वसं गयाए सो बालो जलणम्मि खिविओ। सो वरो भोयणं कुणंतो उट्ठिउं लग्गो। सा भणइ—"अवच्चरूवाणि कस्स वि न अप्पियाणि होंति; जेसिं कए पिउणो अणेगदेवयापूयादाणमंतजवाइं किं किं न कुणन्ति। तुमं सुहेण भोयणं करेहि। पच्छा वि एयं पुत्तं जीवइस्सामि।" तओ सो वि भोयणं विहिऊण सिग्घं उट्ठिओ जाव ताव तीए नियघरमज्झाओ अमयरस-कुप्पयं आणिऊण जलणम्मि छडुक्खेवो कओ। बालो हसंतो निग्गओ। जणणीए उच्छंगे नीओ।

तओ सो वरो झायइ—"अहो अच्छरिअं! अहो अच्छरिअं! जं एवंविहजलणजलिओ वि जीविओ। जइ एसो अमयरसो मह हवइ ता अहमवि तं कन्नं जीवावेमि" त्ति चिंतिऊण धुत्तत्तेण कूडवेसं काऊण रयणीए तत्थेव ठिओ। अवसरं लहिऊण तं अमयरसकूवयं गिण्हिऊण हत्थिणाउरे आगओ।

यह किसकी पत्नि (है)

हस्तिनापुर नगर में शूर नामक राजकुमार रहता था (जो) नाना गुणरूपी रत्नों से युक्त (था)। उसकी पत्नी गंगा नामवाली, शीलादि गुणों से अलंकृत और परम सौभाग्यशाली (और पराक्रमवाली) (थी)। सुमति नामक उनकी पुत्री थी। वह कर्मफल के वश से पिता, माता, भाई और मामा के द्वारा अलग अलग वरों के लिए दे दी गई।

चारों ही वे वर एक ही दिन विवाह करने के लिए आ गये। और आपस में कलह करने लगे। तब उनके मध्य में उत्पन्न होते हुए विषम संग्राम व बहुत मनुष्यों के क्षय को देखकर सुमति कन्या आग में प्रविष्ट हुई, उसके साथ घनिष्ठ स्नेह के कारण एक वर भी प्रविष्ट हुआ। एक हड्डियों को गंगा के प्रवाह में डालने के लिए गया। एक चिता की राख को वहाँ ही जलधारा में डालकर उस दुःख के कारण मोहरूपी महाग्रहों से पकड़ा हुआ पृथ्वी पर भ्रमण करने लगा। चौथा वहीं ठहरा। उस स्थान की रक्षा करते हुए प्रतिदिन एक अन्य पिण्ड को छोड़ता हुआ काल बिताने लगा।

अब तीसरा मनुष्य पृथ्वी पर घूमता हुआ किसी ग्राम में पाकगृह में भोजन बनवाकर जीमने के लिए बैठा। उसके लिए घर स्वामिनी ने (भोजन) परोसा। तब उसका छोटा पुत्र अत्यन्त रोया। तब उसके द्वारा क्रोध के वशीभूत हुआ गया। वह बालक अग्नि में फेंक दिया गया। वह वर भोजन करता हुए उठने लगा। उसने कहा— "सन्तानरूप किसी के लिए भी अप्रिय नहीं होते हैं जिनके लिए माता-पिता अनेक देवताओं की पूजा, दान, मन्त्र, जाप आदि क्या-क्या नहीं करते हैं। तुम सुखपूर्वक भोजन करो। पीछे ही (मैं) इस पुत्र को जीवित कर दूंगी।" तब वह भी भोजन करके शीघ्र उठा, उसी समय उसके द्वारा (स्त्री के द्वारा) निज घर के भीतर से अमृत रस के घड़े को लाकर अग्नि में छिड़काव किया गया। बालक हँसता हुआ निकला। माता की गोद में लिया गया।

तब उस वर ने सोचा "अहो आश्चर्य! अहो आश्चर्य! इस प्रकार अग्नि से जला हुआ भी जिया। यदि यह अमृत रस मेरे लिए होता है तो मैं भी उस कन्या को जिला दूंगा। इस प्रकार सोचकर धूर्तता से कपट वेश धारण करके रात्रि में वहां ठहरा। अवसर पाकर उस अमृत रस के घड़े को लेकर, ग्रहण करके हस्तिनापुर आ गया।

तेण पुण तीए जणयादिसमक्खं चिग्रामज्झे ग्रमयरसो मुक्को। सा सुमइ कन्ना सालंकारा जीवंती उट्ठिया। तया तीए समं एगो वरो वि जीविग्रो। कम्म-वसग्रो पुणो चउरो वि वरा एगग्रो मिलिग्रा। कन्नापाणिग्गहणत्थमन्नोन्नं विवायं कुणंता बालचंदरायमन्दिरे गया। चउहिं वि कहिग्रं राइणो नियनियसरूवं। राइणा मंतिणो भणिया जहा – "एयाणं विवायं भंजिऊण एगो वरो पमाणीकायव्वो।" मंतिणो वि सव्वे परोप्परं वियारं कुणंति। न पुण केणावि विवाग्रो भज्जइ। जग्रो –

ग्रासन्ने रणरंगे मूढे मंते तहेव दुब्भिक्खे।
जस्स मुहं जोइज्जइ सो पुरिसो महियले विरलो॥

तया एगेण मंतिणा भणियं—"जइ मन्नह ता विवायं भज्जेमि।" तेहिं जंपियं – "जो रायहंसव्व गुणदोसपरिक्खं काऊण पक्खावायरहिग्रो वायं भंजइ तस्स वयणं को न मन्नइ ?" तग्रो तेण भणियं—"जेण जीविया, सो जम्महेउत्तणेण पिया जाग्रो। जो सहजीविग्रो सो एगजम्मट्ठाणेण भाया। जो ग्रट्ठीणि गंगामज्झम्मि खिविउं गग्रो सो पच्छापुण्णकरणेण पुत्तसमो जाग्रो। जेण पुण तं ठाणं रक्खियं, सो भत्ता।" एवं मंतिणा विवाए भग्गे, चउत्थेण वरेण कुरुचंदाभिहाणेण सा परिणीग्रा।

उसके द्वारा फिर उसके पिता आदि के समक्ष चिता के मध्य में अमृतरस छोड़ा गया। वह सुमति कन्या अलंकारसहित जीती हुई उठी। तब उसके साथ एक वर भी जिया। कर्म के वश से फिर चारों ही वर एक-एक करके मिल गए। कन्या से विवाह करने के लिए आपस में विवाद करते हुए बालचन्द राजा के मन्दिर में गए। चारों के द्वारा ही राजा के लिए निज बात कही गई। राजा के द्वारा मन्त्री कहे गए— इनके विवाद को समाप्त करके एक वर प्रमाणित किया जाना चाहिए। सब मन्त्रियों ने भी आपस में विचार किया। किसी से भी विवाद नहीं सुलझा। क्योंकि

समीपस्थ युद्ध में, कर्तव्य की सूझ से हीन व्यक्ति में, परामर्श में, उसी प्रकार अकाल में जिसका मुँह देखा जाता है वह पुरुष पृथ्वी पर दुर्लभ होता है।

तब एक मन्त्री के द्वारा कहा गया—"यदि(तुम लोग)मानोगे तो विवाद हल कर दूंगा।" उनके द्वारा कहा गया 'जो राजहंस के समान गुण-दोष परीक्षा करके पक्षपात रहित (होकर) विवाद को सुलझाता है उसकी बात को कौन नहीं मानेगा।" तब उसके द्वारा कहा गया– "जिसके द्वारा जिलाया गया, वह जन्म हेतुत्व के कारण पिता हुआ। जो एक साथ जिया वह एक जन्मस्थान होने के कारण भाई हुआ। जो अस्थियों को गंगा के मध्य में डालने के लिए गया वह पीछे पुण्य करने के कारण पुत्र के समान हुआ। जिसके द्वारा वह स्थान रक्षा किया गया वह पति है। इस प्रकार मन्त्री द्वारा विवाद नष्ट किया गया। कुरुचन्द नामवाले चौथे वर के द्वारा वह परणी गई।

कस्सेसा भज्जा

व्याकरणिक विश्लेषण

कस्सेसा	[(कस्स)+(एसा)]	
	कस्स (क) 6/1 स	=किसकी
	एसा (एता) 1/1 स	=यह
भज्जा	(भज्जा) 1/1	=पत्नी
हत्थिणाउरे	(हत्थिणाउर) 7/1	=हस्तिनापुर (में)
नयरे	(नयर) 7/1	=नगर में
सूरनामा[1]	[(सूर)-(नाम(अ)=नामक) 1/1]	=शूरनामक
रायपुत्तो	(रायपुत्त) 1/1	=राजपुत्र
णाणागुणरयण-संजुत्तो	[(णाणा)-(गुण)-(रयण)-(संजुत्त) भूकृ 1/1 अनि]	=नाना गुणरूपी रत्नों से युक्त
वसइ	(वस) व 3/1 अक	=रहता है (था)
तस्स	(त) 6/1 स	=उसकी
भारिया	(भारिया) 1/1	=पत्नी
गंगाभिहाणा	[(गंगा)+(अभिहाणा)] [(गंगा)-(अभिहाणा) 1/1 वि]	=गंगा नामवाली
सीलाइगुणालंकिया	[(सील)+(आइ)+(गुण)+(अलंकिया)] [(सील)-(आइ)-(गुण)-(अलंकिया) 1/1 वि]	=शीलादि गुणों से अलंकृत
परमसोहग्गसारा	[(परम) वि - (सोहग्ग) - (सारा) 1/1 वि]	=परम सौभाग्यशाली
सुमइनामा[1]	[(सुमइ)-(नाम(अ)=नामक) 1/1 वि]	=सुमति नामक

नोट —1 अव्यय का प्रयोग जब संज्ञा के साथ किया जाता है तब ह्रस्व का दीर्घ हो जाता है।

तेसिं	(त) 6/2 स	=उनकी
धूया	(धूया) 1/1	=पुत्री
सा	(ता) 1/1 स	=वह
कम्मपरिणामवसओ	[(कम्म)-(परिणाम)-(वस) 5/1 वि या (वसओ (अ))]	=कर्मफल के वश से
जणय-जणणी-भाया-माउलेहिं	[(जणय)-(जणणी)-(भाउ)-(माउल) 3/2]	=पिता, माता, भाई और मामा के द्वारा
पुढो-पुढो	अव्यय	=अलग-अलग
वराणं	(वर) 4/2	=वरों के लिए
दिन्ना	(दिन्ना) भूकृ 1/1 अनि	=दे दी गई
चउरो	(चउ) 1/2 वि	=चारों
वि	अव्यय	=ही
ते	(त) 1/2 स	=वे
वरा	(वर) 1/2	=वर
एगम्मि	(एग) 7/1 वि	=एक
चेव	अव्यय	=ही
दिणे	(दिण) 7/1	=दिन
परिणेउं	(परिण) हेकृ	=विवाह करने के लिए
आगया	(आगय) भूकृ 1/2 अनि	=आ गये
परोप्परं	(परोप्पर) 2/1 वि	=परस्पर/आपस में
कलहं	(कलह) 2/1	=कलह
कुणन्ति	(कुण) व 3/2 सक	=करते हैं (करने लगे)
तओ	अव्यय	=तब
तेसिं	(त) 6/2 स	=उनके
विसमे	(विसम) 7/1 वि	=विषम

संगामे	(संगाम) 7/1	=संग्राम में
जायमाणे	(जा→जाग्र) वकृ 7/1	=उत्पन्न होते हुए
बहुजणक्खयं	[(बहु)-(जण)-(क्खय) 2/1]	=बहुत मनुष्यों के क्षय को
दट्ठूण	संकृ अनि	=देखकर
अग्गिम्मि	(अग्गि) 7/1	=आग में
पविट्ठा	(पविट्ठ) भूकृ 1/1 अनि	=प्रविष्ट हुई
सुमइकन्ना	[(सुमइ)-(कन्ना) 1/1]	=सुमति कन्या
तीए	(ता) 3/1 स	=उसके
समं	अव्यय	=साथ
णिविडणेहेण	[(णिविड) वि-(णेह) 3/1]	=घनिष्ठ स्नेह के कारण
एगो	(एग) 1/1 वि	=एक
वरो	(वर) 1/1	=वर
वि	अव्यय	=भी
पविट्ठो	(पविट्ठ) भूकृ 1/1 अनि	=प्रविष्ट हुआ
एगो	(एग) 1/1 वि	=एक
अट्ठीणि	(अट्ठि) 2/2	=अस्थियों को
गंगप्पवाहे	[(गंगा)-(प्पवाह) 7/1]	=गंगा के प्रवाह में
खिविउं	(खिव) हेकृ	=डालने के लिए
गग्रो	(गग्र) भूकृ 1/1 अनि	=गया
एगो	(एग) 1/1 वि	=एक
चिग्रारक्खं	[(चिग्रा)-(रक्ख) 2/1)	=चिता की राख को
तत्थेव	[(तत्थ)+(एव)] तत्थ (क्रिविग्र), एव-ग्रव्यय	=वहां ही
जलपूरे	[(जल)-(पूर) 7/1]	=जलधारा में
खिविऊण	(खिव) संकृ	=डालकर

तद्दुक्खेण	(तद्दुक्ख) 3/1	=उस दुःख के कारण
मोहमहागह-गहिओ	[(मोह)–(महा)-(गह)–(गह) भूकृ 1/1]	=मोहरूपी महा-ग्रहों से पकड़ा हुआ
महीयले	(महीयल) 7/1	=पृथ्वी पर
हिण्डइ	(हिण्ड) व 3/1 सक	=भ्रमण करता है (करने लगा)
चउत्थो	(चउत्थ) 1/1 वि	=चौथा
तत्थेव	[(तत्थ)+(एव)]तत्थ (क्रिविअ), एव (अ)	=वहाँ, ही
ठिओ	(ठिअ) भूकृ 1/1 अनि	=ठहरा
तं	(त) 2/1 सवि	=उस
ठाणं	(ठाण) 2/1	=स्थान की
रक्खंतो	(रक्ख) वकृ 1/1	=रक्षा करते हुए
पइदिणं	[पइ(अ)=प्रति-(दिण) 1/1]	=प्रतिदिन
एगमन्नपिंडं	[(एगं)+(अन्न)+पिंड)] [(एगं)–(अन्न)-(पिंड) 2/1]	=एक अन्य पिंड को
मुअंतो	(मुअ) वकृ 1/1	=छोड़ते हुए
कालं	(काल) 2/1	=काल
गमेइ	(गम) व 3/1 सक	=बिताता है(बिताने लगा)
अह	अव्यय	=अब
तइओ	(तइअ) 1/1 वि	=तीसरा
नरो	(नर) 1/1	=मनुष्य
महीयलं[1]	(महीयल) 2/1	=पृथ्वी पर

नोट—1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग भी पाया जाता है।

भमन्तो	(भम) वकृ 1/1	=घूमता हुआ
कत्थवि	अव्यय	=किसी
गामे	(गाम) 7/1	=ग्राम में
रंधणघरम्मि	[(रंधण)-(घर) 7/1]	=पाकगृह में
भोअणं	(भोअण) 2/1	=भोजन
कराविऊण	(कर+आव) प्रे. संकृ	=बनवाकर
जिमिउं	(जिम) हेकृ	=जीमने के लिए
उवविट्ठो	(उवविट्ठ) भूकृ 1/1 अनि	=बैठा
तस्स	(त) 4/1 स	=उसके लिए
घरसामिणी	[(घर)-(सामिणी) 1/1]	=घर स्वामिनी ने
परिवेसइ	(परिवेस) व 3/1 सक	=परोसती है (परोसा)
तया	अव्यय	=तब
तीए	(ता) 6/1 स	=उसका
लहुपुत्तो	[(लहु) वि-(पुत्त) 1/1]	=छोटा पुत्र
अईव	अव्यय	=अत्यन्त
रोइइ	(रोअ) व 3/1 अक	=रोता है (रोया)
तओ	अव्यय	=तब
तीए	(ता) 3/1 स	=उसके द्वारा
रोसपरव्वसं	[(रोस)-(पर)-(व्वस) 1/1]	=क्रोध के वशीभूत
गयाए	(गय) भूकृ 7/1 अनि	=होने पर
सो	(त) 1/1 स	=वह
बालो	(बाल) 1/1	=बालक
जलणम्मि	(जलण) 7/1	=अग्नि में
खिविओ	(खिव) भूकृ 1/1	=फैंक दिया गया
सो	(त) 1/1 स	=वह
वरो	(वर) 1/1	=वर
भोयणं	(भोयण) 2/1	=भोजन
कुणंतो	(कुण) वकृ 1/1	=करता हुआ
उट्ठिउ	(उट्ठ) हेकृ	=उठने के लिए

लग्गो	(लग्ग) भूकृ 1/1 अनि	=लगा
सा	(ता) 1/1 स	=वह (उसने)
भणइ	(भण) व 3/1 सक	=कहती है (कहा)
अवच्चरूवाणि	[(अवच्च)-(रूव) 1/2]	=संतानरूप
कस्स	(क) 4/1 स	=किसी के लिए
वि	अव्यय	=भी
न	अव्यय	=नहीं
अप्पियाणि	(अप्पिय) 1/2 वि	=अप्रिय
होंति	(हो) व 3/2 अक	=होते हैं
जेसि	(ज) 6/2 स	=जिनके
कए	अव्यय	=लिए
पिउणो	(पिउ) 1/2	=माता-पिता
अणेगदेवयापूयादाण-मंतजवाइं	[(अणेग)+(देवया)+(पूया)+(दाण)+(मंत)+(जव)+(आइ)] [(अणेग)-(देवया)-(पूया)-(दाण)-(मंत)-(जव)-(आइ) 2/1]	=अनेक देवताओं की पूजा, दान, मन्त्र, जप आदि
किं-किं	(किं) 1/1 स	=क्या-क्या
न	अव्यय	=नहीं
कुणन्ति	(कुण) व 3/2 सक	=करते हैं
तुमं	(तुम्ह) 1/1 स	=तुम
सुहेण	(सुह) 3/1 क्रिविअ	=सुखपूर्वक
भोयण	(भोयण) 2/1	=भोजन
करेहि	(कर) विधि 2/1 सक	=करो
पच्छा	अव्यय	=पीछे
वि	अव्यय	=ही

एयं	(एअ) 2/1 सवि	=इस
पुत्तं	(पुत्त) 2/1	=पुत्र को
जीवइस्सामि	(जीव) भवि 1/1 सक	=जिला दूंगी
तओ	अव्यय	=तब
सो	(त) 1/1 स	=वह
वि	अव्यय	=भी
भोयणं	(भोयण) 2/1	=भोजन
विहिऊण	(विह) संकृ	=करके
सिग्घं	(सिग्घ) 1/1	=शीघ्र
उट्ठिओ	(उट्ठ) भूकृ 1/1	=उठा
जाव ताव	अव्यय	=उसी समय
तीए	(ता) 3/1 स	=उसके द्वारा
णियघरमज्झाओ	[(णिय) वि - (घर) - (मज्झ) 5/1]	=निजघर के भीतर से
अमयरसकुप्पयं	[(अमय) - (रस) - (कुप्प)-अ स्वार्थिक 2/1]	=अमृतरस के घड़े को
आणिऊण	(आण) संकृ	=लाकर
जलणम्मि	(जलण) 7/1	=अग्नि में
छडुक्खेवो	(छडुक्खेव) 1/1	=छिड़काव
कओ	(कअ) भूकृ 1/1 अनि	=किया गया
बालो	(बाल) 1/1	=बालक
हसंतो	(हस) वकृ 1/1	=हँसता हुआ
निग्गओ	(निग्गअ) भूकृ 1/1 अनि	=निकला
जणणीए	(जणणी) 3/1	=माता के द्वारा
उच्छंगे	(उच्छंग) 7/1	=गोद में
नीओ	(नी) भूकृ 1/1	=लिया गया

तम्रो	अव्यय	=तब
सो	(त) 1/1 स	=वह
वरो	(वर) 1/1	=वर
झायइ	(झा→झाअ) व 3/1 सक	=सोचता है (सोचा)
अहो	अव्यय	=आश्चर्यसूचक अव्यय (अहो)
अच्छरिअं	(अच्छरिअ) 1/1	=आश्चर्य
जं	अव्यय	=कि
एवंविहजलणजलिओ	[(एवंविह(अ)=इस प्रकार) - (जलण) - (जल) भूकृ 1/1]	=इस प्रकार अग्नि से जला हुआ
वि	अव्यय	=भी
जीविओ	(जीव) भूकृ	=जिया
जइ	अव्यय	=यदि
एसो	(एव) 1/1 स	=यह
अमयरसो	[(अमय) - (रस) 1/1]	=अमृतरस
मह	(अम्ह) 4/1 स	=मेरे लिए
हवइ	(हव) व 3/1 अक	=होता है
ता	अव्यय	=तो
अहमवि	[(अहं)+(अवि)] अहं (अम्ह)1/1 स	=मैं
	अवि (अ)	=भी
तं	(ता) 2/1 सवि	=उस
कन्नं	(कन्ना) 2/1	=कन्या को
जीवावेमि	(जीव+आव) प्रे व 1/1 सक	=जिलाऊँगा
त्ति	अव्यय	=इस प्रकार
चिंतिऊण	(चिंत) संकृ	=सोचकर
धुत्तत्तेण	[(धुत्त)+(अत्तेण)] [(धुत्त) - (अत्त) 3/1]	=धूर्तता से

कूडवेस	[(कूड) – (वेस) 2/1]	=कपटवेश
काऊण	संकृ अनि	=धारण करके
रयणीए	(रयणी) 7/1	=रात्रि में
तत्थेव	[(तत्थ)+(एव)] तत्थ क्रिविअ, एव (अ)	=वहां ही
ठिओ	(ठिअ) भूकृ 1/1 अनि	=ठहरा
अवसरं	(अवसर) 2/1	=अवसर
लहिऊण	(लह) संकृ	=पाकर
तं	(त) 2/1 सवि	=उस
अमयरसकूवयं	[(अमय)-(रस)-(कूवय) 2/1]	=अमृतरस के घड़े को
गिण्हिऊण	(गिण्ह) संकृ	=लेकर
हत्थिणाउरे	(हत्थिणाउर) 7/1	=हस्तिनापुर
आगओ	(आगय) भूकृ 1/1 अनि	=आ गया
तेण	(त) 3/1 स	=उसके द्वारा
पुण	अव्यय	=फिर
तीए	(ता) 6/1 स	=उसके
जणयादिसमक्खं	[(जणय)+(आदि)+(समक्खं)] [(जणय)-(आदि)-(समक्ख) 1/1]	=पिता आदि के समक्ष
चिआमज्झे	[(चिआ)-(मज्झ) 7/1]	=चिता के मध्य में
अमयरसो	[(अमय)-(रस) 1/1]	=अमृतरस
मुक्को	(मुक्क) भूकृ 1/1 अनि	=छोड़ा गया
सा	(ता) 1/1 स	=वह
सुमइकन्ना	[(सुमइ)-(कन्ना) 1/1]	=सुमति कन्या
सालंकारा	[(स)+(अलंकारा)] [(स) वि-(अलंकारा) 1/1]	=अलकारसहित

जीवंती	(जीव) वकृ 1/1	=जीती हुई
उट्ठिया	(उट्ठ) भूकृ 1/1	=उठी
तया	अव्यय	=तब
तीए[1]	(ता) 3/1	=उसके
समं	अव्यय	=साथ
एगो	(एग) 1/1	=एक
वरो	(वर) 1/1	=वर
वि	अव्यय	=भी
जीविओ	(जीव) भूकृ 1/1	=जिया
कम्मवस्सओ	[(कम्म)-(वस्स) 5/1]	=कर्म के वश से
पुणो	अव्यय	=फिर
चउरो	(चउ) 1/2	=चारों
वि	अव्यय	=ही
वरा	(वर) 1/2	=वर
एगओ	अव्यय	=एक-एक करके
मिलिआ	(मिल) भूकृ 1/2	=मिल गए
कन्नापाणिग्गहणत्थ-मन्नोन्नं	[(कन्ना)+(पाणिग्गहण)+(अत्थं)+(अन्नोन्नं)] [(कन्ना) – (पाणिग्गहण) – (अत्थ) – (अन्नोन्न) 2/1 वि]	=कन्या से विवाह करने के लिए आपस में
विवायं	(विवाय) 2/1	=विवाद
कुणंता	(कुण) वकृ 1/2	=करते हुए
बालचंदरायमन्दिरे	[(बालचन्दराय)-(मंदिर) 7/1]	=बालचन्द राजा के मन्दिर में

नोट —1. 'साथ' के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

गया	(गय) भूकृ 1/2 अनि	=गए
चउहिं	(चउ) 3/2	=चारों के द्वारा
वि	अव्यय	=ही
कहिग्रं	(कह) भूकृ 1/1	=कही गयी
राइणो	(राइ) 4/1	=राजा के लिए
नियनियसरूवं	[(निय) वि – (निय) वि – (सरूव) 1/1]	=अपनी-अपनी बात
राइणा	(राइ) 3/1	=राजा के द्वारा
मंतिणो	(मंति) 1/2	=मन्त्री
भणिया	(भण) भूकृ 1/2	=कहे गए
जहा	अव्यय	=जैसे
एयाणं	(एत) 6/2 स	=इनके
विवायं	(विवाय) 2/1	=विवाद को
भंजिऊण	(भंज) संकृ	=समाप्त करके
एगो	(एग) 1/1 वि	=एक
वरो	(वर) 1/1	=वर
पमाणीकायव्वो	(पमाणीकायव्व) विधिकृ 1/1 अनि	=प्रमाणित किया जाना चाहिए
मंतिणो	(मंति) 1/2	=मन्त्रियों ने
वि	अव्यय	=भी
सव्वे	(सव्व) 1/2 स	=सब
परोप्परं	(परोप्पर) 2/1 वि	=आपस में
वियारं	(वियार) 2/1	=विचार
कुणंति	(कुण) व 3/2 सक	=करते हैं (किया)
न	अव्यय	=नहीं
पुण	अव्यय	=फिर
केणावि	[(केण)+(अवि)] केण (क) 3/1 स, अवि (अ)	=किसी के द्वारा भी
विवाग्रो	(विवाग्र) 1/1	=विवाद
भज्जइ	(भज्जइ) व 3/1 सक कर्म अनि	=सुलझता है (सुलझा)
जग्रो	अव्यय	=क्योंकि

आसन्ने	(आसन्न) 7/1 वि	=समीपस्थ
रणरंगे	[(रण)-(रंग) 7/1]	=युद्ध में
मूढे	(मूढ) 7/1	=कर्तव्य की सूझ से हीन व्यक्ति में
मंते	(मंत) 7/1	=परामर्श में
तहेव	अव्यय	=उसी प्रकार
दुब्भिक्खे	(दुब्भिक्ख) 7/1	=अकाल में
जस्स	(ज) 6/1 स	=जिसका
मुहं	(मुह) 1/1	=मुँह
जोइज्जइ	(जो+इज्ज) व कर्म 3/1 सक	=देखा जाता है
सो	(त) 1/1 स	=वह
पुरिसो	(पुरिस) 1/1	=पुरुष
महियले	(महियल) 7/1	=पृथ्वी पर
विरलो	(विरल) 1/1 वि	=दुर्लभ

तया	अव्यय	=तब
एगेण	(एग) 3/1 वि	=एक
मंतिणा	(मंति) 3/1	=मन्त्री के द्वारा
भणियं	(भण) भूकृ 1/1	=कहा गया
जइ	अव्यय	=यदि
मन्नह	(मन्न) विधि 2/2 सक	=मानो
ता	अव्यय	=तब
विवाय	(विवाय) 2/1	=विवाद
भज्जेमि	(भज्ज) व 1/1 सक	=हल करता हूँ (कर दूंगा)
तेहिं	(त) 3/2 स	=उनके द्वारा
जंपियं	(जंप) भूकृ 1/1	=कहा गया
जो	(ज) 1/1 स	=जो
रायहंसव्व	[(रायहंस)-(व्व(अ)=समान)]	=राजहंस के समान
गुणदोसपरिक्खं	[(गुण)-(दोस)-(परिक्ख) 2/1]	=गुण-दोष परीक्षा
काऊण	(कर) संकृ	=करके

पक्खवायरहिश्रो	[(पक्खवाय)-(रहिश्र) 1/1 वि]	=पक्षपातरहित
वायं	(वाय) 2/1	=विवाद को
भंजइ	(भंज) व 3/1 सक	=सुलझाता है
तस्स	(त) 6/1 स	=उसकी
वयणं	(वयण) 2/1	=बात को
को	(क) 1/1 स	=कौन
न	अव्यय	=नहीं
मन्नइ	(मन्न) व 3/1 सक	=मानता है (मानेगा)
तश्रो	अव्यय	=तब
तेण	(त) 3/1 स	=उसके द्वारा
भणियं	(भण) भूकृ 1/1	=कहा गया
जेण	(ज) 3/1 स	=जिसके द्वारा
जीविया	(जीव) प्रे भूकृ 1/1	=जिलाया गया
सो	(त) 1/1 स	=वह
जम्महेउत्तणेण	[(जम्म)-(हेउ)-(त्तण) 3/1]	=जन्म हेतुत्व के कारण
पिया	(पिउ) 1/1	=पिता
जाश्रो	(जाश्र) भूकृ 1/1 अनि	=हुश्रा
जो	(ज) 1/1 स	=जो
सहजीविश्रो	[(सह(श्र)=साथ) - (जीव) भूकृ 1/1]	=साथ जिया
सो	(त) 1/1 स	=वह
एगजम्मट्ठाणेण	[(एग)-(जम्म)-(ट्ठाण) 3/1]	=एक जन्मस्थान होने के कारण
माया	(माउ) 1/1	=भाई
जो	(ज) 1/1 स	=जो
श्रट्ठीणि	(श्रट्ठि) 2/2	=श्रस्थियों को
गंगामज्झम्मि	[(गंगा)-(मज्झ) 7/1]	=गंगा के मध्य में
खिविउं	(खिव) हेकृ	=डालने के लिए
गश्रो	(गश्र) भूकृ 1/1 अनि	=गया
सो	(त) 1/1 स	=वह

पच्छापुण्णकरणेण	[(पच्छा(अ)=पीछे)-(पुण्ण)-(करण) 3/1]	=पीछे पुण्य करने के कारण
पुत्तासमो	[(पुत्त)-(सम) 1/1 वि]	=पुत्र के समान
जाओ	(जाअ) भूकृ 1/1 अनि	=हुआ
जेण	(ज) 3/1 स	=जिसके द्वारा
पुण	अव्यय	=और
तं	(त) 1/1 स	=वह
ठाणं	(ठाण) 1/1	=स्थान
रक्खियं	(रक्ख) भूकृ 1/1	=रक्षा किया गया
सो	(त) 1/1 स	=वह
भत्ता	(भत्तु) 1/1	=पति
एवं	अव्यय	=इस प्रकार
मंतिणा	(मंति) 3/1	=मन्त्री द्वारा
विवाए	(विवाअ) 7/1	=विवाद
भग्गे	(भग्ग) भूकृ 7/1 अनि	=नष्ट किया गया (होने पर)
चउत्थेण	(चउत्थ) 3/1 वि	=चौथे
वरेण	(वर) 3/1	=वर के द्वारा
कुरुचंदाभिहाणेण	[(कुरुचन्द)+(अभिहाणेण)] [(कुरुचन्द)-(अभिहाण) 3/1]	=कुरुचन्द नामवाले
सा	(ता) 1/1 स	=वह
परिणीआ	(परिण) भूकृ 1/1	=परणी गई

———

अभ्यास-42

गामिल्लओ सागडिओ

अत्थि कोइ कम्हिइ गामेल्लओ गहवइ परिवसइ। सो य अण्णया कयाइं सगडं धण्णभरियं काऊणं, सगडे य तित्तिरं पंजरगयं बंधेत्ता पट्ठिओ नयरं। नयरगओ य गंधियपुत्तेहिं दीसइ। सो य तेहिं पुच्छिओ—"किं एयं ते पंजरए?" त्ति।

तेण लवियं—'तित्तिरो' त्ति।

तओ तेहिं लवियं—'किं इमा सगडतित्तिरी विक्कायइ?' तेण लवियं—'आमं, विक्कायइ।' तेहिं भणिओ—'किं लब्भइ?' सागडिएण भणियं—'काहावणेणं' त्ति।

तओ तेहिं काहावणो दिण्णो, सगडं तित्तिरं च घेत्तुं पयत्ता। तओ तेणं सागडिएणं भण्णइ—'कीस एयं सगडं नेहि?' त्ति।

तेहिं भणियं—'मोल्लेणं लइयय' त्ति।

तओ ताणं ववहारो जाओ जितो सो सागडिओ, हिओ य सो सगडो तित्तिरीए समं।

सो सागडिओ हियसगडोवगरणो जोग-खेम-निमित्तं आणिएल्लियं वइल्लं घेत्तूणं विक्कोसमाणो गंतुं पयत्तो, अण्णेण य कुलपुत्तएणं दीसइ, पुच्छिओ य—'कीस विक्कोससि?'

तेण लवियं—'सामि! एवं च एवं च अइसंधिओ हं।'

तओ तेण साणुकंपेण भणिओ—'वच्च ताणं चेव गेहं एव च एवं च भणहि' त्ति।

तओ सो तं वयणं सोऊण गओ, गंतूण य तेण भणिआ "सामि! तुब्भेहिं मम भंडभरिओ सगडो हिओ ता इमं पि बइल्लं गेण्हह। मम पुण सत्तुयादुपालियं देह,

ग्रामीण (गामिल्लग्र) गाड़ीवान (सागडिग्र)

कहीं कोई ग्रामीण गृहपति था (जो) (कहीं) (गांव में) रहता था। और उसने किसी समय कभी एक बार धन से भरी हुई गाड़ी को लेकर, और गाड़ी में पिंजरे में रखे हुए तीतर को बांधकर नगर को प्रस्थान किया। नगर में गया और गंधी पुत्रों द्वारा देखा गया। उनके द्वारा वह पूछा गया—तुम्हारे पिंजरे में यह क्या है ?

उसके द्वारा कहा गया—'तीतर'।

तब उनके द्वारा कहा गया—क्या यह गाड़ी में रखा हुग्रा तीतर बेचा जाएगा ? उसके द्वारा कहा गया—'हां, बेचा जाएगा।' उनके द्वारा कहा गया 'क्या प्राप्त किया जाएगा ?' गाड़ीवाले द्वारा कहा गया—'रुपये द्वारा'।

तब उनके द्वारा रुपया दिया गया। गाड़ी और तीतर को ग्रहण करने के लिए प्रवृत्त हुए। तब उस गाड़ीवाले के द्वारा कहा जाता है—(तुम) यह गाड़ी क्यों ले जाते हो ? [कीस(ग्र)=क्यों, किस कारण से]

उनके द्वारा कहा गया—'मोल से ली गई है' (लग्र→लइय-य)

तब उनका फैसला हुग्रा। (उसमें) वह गाड़ीवाला जीत लिया गया। और वह गाड़ी तीतर के साथ ले जाई गई।

(जिसका) गाड़ीरूपी साधन (उवगरण) ले जाया गया (है) (ऐसा) वह गाड़ीवाला योगक्षेम के लिए लाए गए बैल को लेकर चिल्लाता हुग्रा जाने के लिए प्रवृत्त हुग्रा। दूसरे कुलपुत्र के द्वारा देखा गया, (वह) पूछा गया—क्यों रोते हो ?

उसके द्वारा कहा गया—हे स्वामी ! इस प्रकार और इस प्रकार मैं ठग लिया गया हूँ।

तब उसके द्वारा दयासहित कहा गया—उनके ही घर जाग्रो और इस प्रकार, इस प्रकार कहो।

तब वह उस वचन को सुनकर गया और जाकर उसके द्वारा कहा गया—हे स्वामी ! तुम सबके द्वारा मेरी वस्तुग्रों से भरी हुई गाड़ी ली गई है, तो यह बैल भी ले

जं घेत्तूण वच्चामि त्ति । न य अहं जस्स व कस्स व हत्थेण गेण्हामि, जा तुज्झ घरिणी पाणेहि वि पिययरी सव्वालंकारभूसिया तीए दायव्वा, तओ मे परा तुट्ठी भविस्सइ । जीवलोगब्भंतरं व अप्पाणं मन्निस्सामि ।"

ततो तेहिं सक्खी आहूया, भणियं च—'एवं होउ' त्ति । तओ ताणं पुत्तमाया सत्तुयादुपालियं घेत्तूण निग्गया, तेण सा हत्थे गहिया, घेत्तूण य तं पट्ठिओ ।

तेहिं वि भणिओ—'किमेयं करेसि ?'

तेण भणियं—'सत्तुयादुपालियं नेमि ।'

ततो ताणं सद्देण महाजणो संगहिओ, पुच्छिया—'किमेयं ?' ति । ततो तेहिं जहावत्तं सव्वं परिकहियं । समागयजणेण य मज्झत्थेणं होऊण ववहारनिच्छओ सुओ, पराजिया य ते गंधियपुत्ता । सो य किलेसेण तं महिलियं मोयाविओ, सगडो अत्थेण सुबहुएण सह परिदिण्णो ।

लो। और मेरे लिए (तुम) दो पालि (कटोरी) सत्तु दे दो । जिसको लेकर मैं जाऊँगा। और(वह) मैं जिस किसके हाथ से ग्रहण नहीं करूँगा। सब अलंकारों से भूषित प्राणों से भी अधिक प्यारी जो तुम्हारी पत्नी है, उसके द्वारा दिया जाना चाहिए। तब मेरी उत्तम सन्तुष्टि होगी। (मैं) अपने को जीवलोक के अन्दर (भाग्यशाली) मानूँगा।

तब उनके द्वारा गवाही ((सक्खि) वि) बुलाई गई और वह कही गई—इसी प्रकार होवे। तब उन पुत्रों की माता दो पालि सत्तु लेकर निकली—उसके द्वारा वह हाथ पर पकड़ ली गई, उसको लेकर (उसने) प्रस्थान किया।

उनके द्वारा ही कहा गया—'यह क्या करते हो ?'

उसके द्वारा कहा गया— दो पालि सत्तु को ले जाता हूँ।'

तब उनके शब्द से महाजन एकत्र हुए, (पूछा) (गया)—यह क्या है ? तब उनके द्वारा जैसा हुआ वैसा सब कह दिया गया। आये हुए मनुष्यों द्वारा मध्यस्थता से बनकर न्याय का निश्चय सुना गया। वे गंधी पराजित हुए। कठिनाईपूर्वक उस महिला को उसने छुड़वाया। गाड़ी अच्छी तरह प्रचुर अर्थ के साथ दे दी गई।

अपभ्रंश अनुवाद

गामिल्लउ सागडिउ[1]

अत्थि कोइ कहिं गामेल्लउ गहवइ परिवसइ। सो य अण्णया कयाइं सगडु धण्णभरिउ करेविणु सगडि य तित्तरी पंजरगउ बंधेवि पट्ठिउ नयरु। नयरगउ य गंधियपुत्तहिं देक्खिउ। सो य तहिं पुच्छिउ—'किं एहु तुज्झु पंजरए ?' त्ति।

तेण लविउ—तित्तिरु त्ति।

तओ (तो) तहिं लविउ—किं इमु सगडतित्तिरी विक्किज्जइ ? तेण लविउ—'आमं, विक्किज्जइ।' तहिं भणिउ—'किं लब्भइ ?' सागडिएण भणिउ—'कहावणेणं' त्ति।

तओ (तो) तहिं काहावणु दिण्णु, सगडु तित्तिरु च घेत्तुं पवत्ता। तओ (तो) तेणं सागडिएणं भण्णइ—'कीस एहु सगडु नेहि ?' त्ति।

तहिं भणिउ—'मोल्लेणं लइयय' त्ति।

तओ (तो) ताहं ववहारु जाउ जिउ सो सागडिउ, हिउ य सो सगडु तित्तिरीएं सहुं।

सो सागडिउ हियसगडु उवगरणु जोग खेम-निमित्तु आणिउ बइल्लु गहेवि विक्कोसमाणु गमेव्वउ पयत्तु, अण्णें य कुलपुत्तें देक्खिअ, पुच्छिउ य—कीस विक्कोससि ?'

तेण लविउ—'सामि ! एम च एम च अइसंधिउ हउं।'

तओ (तो) तेण साणुकंपें (सो) भणिउ—'वच्च ताहं चेव गेहु एम च एम च भणहि' त्ति।

तओ (तो) सो तं वयणु सुणि गउ, गमेवि य तेण (ते) भणिया—'सामि ! तुम्हेहिं महु भंडभरिउ सगडु हिउ, तावेंहि इमु पि बइल्लु गेण्हह। महु पुणु सत्तुया

1. 'पाइअगज्जसंगहो' में प्रकाशित 'गामिल्लओ सागडिओ' का डॉ. कमलचन्द सोगाणी-कृत अपभ्रंश रूपान्तरण।

दुपालिआ देह, जं गहेप्पि वच्चउं त्ति । णउ य हउं जासु व कासु व हत्थें गण्हाउं जा तुज्झ घरिणी पाणेहिं वि पिययरी सव्वालंकारभूसिया ताए दायव्वा, तावेहिं महु परु तुट्ठी भवेसइ । जीवलोगब्भंतरं व अप्पाणु मन्नेसउं ।"

तओ (तो) तेहिं सक्खी आहूया, भणिउ च—'एम होउ' त्ति । तओ (तो) ताहं पुत्तमाया सत्तुया दुपालिया गहेविणु णिग्गया, तेण सा हत्थे गहिया, गहेविणु य तं पट्ठिउ ।

तेहिं वि (सो) भणिउ—'किं एहु करेसि ?'

तेण भणिउ—'सत्तुया दुपालिया नेउं ।'

तओ (तो) ताहं महं महाजणु संगहिउ—(ते) पुच्छिया-- 'किं एहु ?' त्ति । तओ (तो) तेहिं जहावत्तु सव्वु परिकहिउ । समागयजणेण य मज्झत्तेणं होइ (तेहिं) ववहारनिच्छउ सुणिउ, पराजिआ य ते गंधियपुत्ता । सो य किलेसेण तं महिलिउ मोयाविउ, सगडु अत्थेण सु बहुएण सहुं परिदिण्णु ।

अभ्यास-43

ससुरगेहवासीणं चउजामायराणं कहा

कत्थ वि गामे नरिंदस्स रज्जसंतिकारगो पुरोहिओ आसि। तस्स एगो पुत्तो, पंच य कन्नगाओ संति। तेण चउरो कन्नगाओ विउसमाहण-पुत्ताणं परिणाविआओ। कयाई पंचमीकन्नगाए विवाहमहूसवो पारद्धो। विवाहे चउरो जामाउणो समागया। पुण्णे विवाहे जामायरेहिं विणा सव्वे संबंधिणो नियनियघरेसु गया। जामायरा भोयण-लुद्धा गेहे गंतुं न इच्छंति। पुरोहिओ विआरेइ—'सासूए अईव पिया जामायरा, तेण अहुणा पंच छ दिणाइं एए चिट्ठंतु, पच्छा गच्छेज्जा।' ते जामायरा खज्जरसलुद्धा तओ गच्छिउं न इच्छेज्जा। परुप्परं ते चिंतेइरे—'ससुर-गिहनिवासो सग्गतुल्लो नराणं' किल एसा सुत्ती सच्चा, एवं चिंतिऊणं एगाए भित्तीए एसा सुत्ती लिहिआ। एगया एयं सुत्तिं ससुरेण वाइऊण चिंतिअं—'एए जामायरा खज्जरसलुद्धा कयावि न गच्छेज्जा, तओ एए बोहियव्वा' एवं चिंतिऊण तस्स सिलोगपायस्स हिट्ठंमि पायत्तिगं लिहिअं—

"जइ वसइ विवेगी पंच छव्वा दिणाइं।
दहिघयगुडलुद्धा मासमेगं वसेज्जा
स हवइ खरतुल्लो माणवो माणहीणो॥"

तेहिं जामायरेहिं पायत्तिगं वाइअं पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तओ गंतुं नेच्छंति। ससुरो वि चिंतेइ—'कहं एए नीसारिअव्वा? साउभोयणरया एए खरसमाणा माण-हीणा संति, तेण जुत्तीए निक्कासणिज्जा।' पुरोहिओ नियं भज्जं पुच्छइ—'एएसिं जामाऊणं भोयणाय किं देसि?' सा कहेइ—'अइप्पियजामायराणं तिकालं दहि-घय-गुडमीसिअमन्नं पक्कन्नं च सएव देमि।' पुरोहिओ भज्जं कहेइ – अज्जयणाओ आरब्भ तुमए जामायराणं वज्जकुडो थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो।'

पिअस्स आणा अणइक्कमणीअ, त्ति चिंतिऊण सा भोयणकाले ताणं थूलं रोट्टगं घयजुत्तं देइ। तं दट्ठूणं पढमो मणीरामो जामाया मित्ताणं कहेइ—"अहुणा

ससुर के घर में रहने वाले चार दामादों की कथा

किसी ग्राम में राजा के राज्य में शान्ति स्थापित करनेवाला पुरोहित रहता था। उसके एक पुत्र और पांच कन्याएं थीं (कन्नगा)। उसके द्वारा चार कन्याएं विज्ञ ब्राह्मण पुत्रों के साथ विवाह करवा दी गई। किसी समय पांचवीं कन्या का विवाह महोत्सव प्रारम्भ हुआ। विवाह में चार दामाद आये। विवाह के पूर्ण होने पर दामादों के अलावा सब सम्बन्धी अपने-अपने घर चले गये। भोजन के लोभी दामाद घर में जाने के लिए इच्छुक नहीं थे। पुरोहित ने विचार किया—(ये) दामाद सासू के अत्यन्त प्रिय हैं। इसलिए ये पांच छः दिन ठहरे (रुके) हैं पीछे चले जायेंगे। वे भोजन-रस लोभी दामाद बाद में भी जाने के लिए इच्छुक नहीं हुए। आपस में उन्होंने विचार किया—ससुर का गृह मनुष्यों के लिए स्वर्गतुल्य (होता है)। निश्चय ही यह सूक्ति सच्ची है। इस प्रकार विचारकर एक भीत पर यह सूक्ति लिखी गई। एक बार इस सूक्ति को पढ़कर ससुर के द्वारा विचार किया गया—ये भोजनरस लोभी दामाद कभी भी नहीं जायेंगे, तब ये समझाए जाने चाहिए। इस प्रकार सोच-कर उस श्लोक के चरण के नीचे तीन चरण लिखे गये—

विवेकीजन 5–6 दिन ही रहते हैं, यदि दही, घी एवं गुड़ का लोभी एक साथ ठहरता है, तो वह गधे के समान मनुष्य मानहीन ही होता है।

उन दामादों के द्वारा (यद्यपि) तीनों पाद पढ़े गये तब भी भोजनरस के लालची होने के कारण जाने की इच्छा नहीं की। ससुर ने भी विचार किया - ये कैसे निकाले जाने चाहिए? स्वादिष्ट भोजन में लीन ये गधे के समान मानहीन हैं, इसलिए (ये) युक्तिपूर्वक निकाले जाने चाहिए। पुरोहित नित्य पत्नी को पूछता है—(तुम) इन दामादों को भोजन के लिए क्या देती हो? उसने कहा—अतिप्रिय दामादों के लिए तीन बार दहि, घी, गुड़ से मिश्रित अन्न और पकवान सदैव देती हूँ। पुरोहित ने पत्नी को कहा—तुम्हारे द्वारा दामादों के लिए कठोर की हुई स्थूल (और) घी लगी हुई रोटी दी जानी चाहिए।

पति की आज्ञा टाली नहीं जानी चाहिए। इस प्रकार विचारकर वह भोजन के समय उनके लिए स्थूल रोटी घी लगी हुई देती है। उसको देखकर प्रथम

एत्थ वसणं न जुत्तं, नियघरंमि अओ साउभोयणं अत्थि, तओ इओ गमणं चिय सेयं। ससुरस्स पच्चूसे कहिऊण हं गमिस्सामि।" ते कहिंति--"भो मित्त ! विणा मुल्लं भोयणं कत्थ सिया, एयं वज्जकुडरोट्टगं साउं गणिऊण भोत्तव्वं, जओ -'परन्नं दुल्लहं लोगे' इअ सुई तए किं न सुआ ? तव इच्छा सिया तया गच्छसु, अम्हाणं ससुरो कहिही तया गमिस्सामो।" एवं मित्ताणं वयणं सोच्चा पभाए ससुरस्स अग्गे गच्छित्ता सिक्खं आणं च मग्गेइ। ससुरो वि तं सिक्खं दाऊण 'पुणावि आगच्छेज्जा' एवं कहिऊण किंचि अणुसरिऊण अणुण्णं देइ। एवं पढमो जामायरो 'वज्जकुडेण मणीरामो' निस्सरिओ।

पुणरवि भज्जं कहेइ— अहुणा अज्जयणाओ जामायराणं तिलतेल्लेण जुत्तं रोट्टगं दिज्जा।' सा भोयणसमए जामायराणं तिलतेल्लजुत्त रोट्टगं देइ। तं दट्ठूण माहवो नाम जामायरो चिंतेइ—'घरंमि वि एयं लब्भइ, तओ इओ गमणं सुहं, मित्ताणं पि कहेइ--'हं कल्ले गमिस्सं, जओ भोयणे तेल्लं समागयं।' तया ते मित्ता कहिंति —"अम्हकेरा सासू विउसी अत्थि, तेण सीयलं तिलतेल्लं चिअ उयरग्गि-दीवणेण सोहणं, न घयं, तेण तेल्लं देइ, अम्हे उ अत्थ ठास्सामो।" तया माहवो नाम जामायरो ससुरपासे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गेइ। तया ससुरो 'गच्छ गच्छ' त्ति अणुण्णं देइ, न सिक्खं। एवं 'तिलतेल्लेण माहवो' बीओ वि जामायरो गओ। तइअचउत्थजामायरा न गच्छंति। 'कहं एए निक्कासणिज्जा' इअ चिंतित्ता लद्धुवाओ ससुरो भज्जं पुच्छेइ—'एए जामाउणो रत्तीए सयणाय कया आगच्छन्ति ?' तया पिया कहेइ—कयाइ रत्तीए पहरे गए आगच्छेज्जा, कया दुतिपहरे गए आगच्छंति।'

पुरोहिओ कहेइ—'अज्ज रत्तीए दारं न उग्घाडियव्वं, अहं जागरिस्सं।' ते दोण्णि जामायरा संझाए गामे विलसिउं गया, विविहकीलाओ कुणंता नट्टाइं च पासंता, मज्झरत्तीए गिहद्दारे समागया। पिहिअं दारं दट्ठूण दारुग्घाडणाए उच्चसरेण अक्कोसंति—'दारं उग्घाडेसु' त्ति, तया दारसमीवे सयणत्थे पुरोहिओ जागरंतो कहेइ— 'मज्झरत्ति जाव कत्थं तुम्हे थिआ ? अहुणा न उग्घाडिस्सं, जत्थ उग्घाडिअद्दारं अत्थि,

मणीराम (नामक) दामाद ने मित्रों को कहा—अब यहां रहना ठीक नहीं है। निज घर में इसकी अपेक्षा स्वादिष्ट भोजन है, इसलिए यहां से गमन ही उत्तम (है)। ससुर को प्रभात में कहकर मैं जाऊंगा। उन्होंने (मित्रों ने) कहा—हे मित्र! बिना मूल्य भोजन कहां है (इसलिए) यह कठोर की हुई रोटी स्वादवाली गिनकर खाई जानी चाहिए। क्योंकि लोक में दूसरे की रोटी दुर्लभ है। यह कहावत तुम्हारे द्वारा क्या नहीं सुनी गई? तुम्हारी इच्छा है तो जाओ, हमारे लिए तो ससुर कहेंगे तो (हम) जायेंगे। इस प्रकार मित्रों के वचन को सुनकर प्रभात में ससुर के आगे जाकर सीख और आज्ञा मांगी। ससुर भी उसको शिक्षा देकर 'फिर भी आना' इस प्रकार कहकर कुछ पीछे जाकर आज्ञा दी। इस प्रकार प्रथम दामाद मणीराम, कठोर की हुई रोटी से निकाल दिया गया।

फिर पत्नी को कहता है—अब " दामादों के लिए तिल के तेल से युक्त रोटी दी जानी चाहिए। वह भोजन के समय दामादों के लिए तिल के तेल से युक्त रोटी देती है। उसको देखकर माधव नामक दामाद विचार करता है। घर में भी यह प्राप्त किया जाता है इसलिए यहां से गमन सुखकारी है, मित्रों को भी कहता है—मैं कल जाऊँगा, क्योंकि भोजन में तेल दिया गया (है)। तब उन मित्रों ने कहा—हमारी सासु विदुषी हैं, क्योंकि शीतल तिलों का तेल ही उदर की अग्नि का उद्दीपक होने के कारण सुन्दर है, घी नहीं, इसलिए तेल देती है। हम सब ही यहां ठहरेंगे। तब माधव नामक दामाद ससुर के पास जाकर सीख व अनुज्ञा मांगता है। तब ससुर ने जाओ, जाओ (कहा), इस प्रकार आज्ञा दी, सीख नहीं दी। इस प्रकार तिल के तेल के कारण माधव नामक दूसरा दामाद गया। तीसरे चौथे दामाद नहीं गए। किस प्रकार ये निकाले जाने चाहिए, इस प्रकार विचार करके उपाय प्राप्त किया हुआ ससुर पत्नी को पूछता है - ये दामाद रात्रि में सोने के लिए कब आते हैं? तब पत्नी ने कहा — कभी रात्रि में एक पहर गये आते हैं, कभी दो-तीन पहर गये आते हैं।

पुरोहित ने कहा—आज रात्रि में द्वार नहीं खोला जाना चाहिए, मैं जागूंगा। वे दोनों दामाद सायंकाल ग्राम में मनोरंजन के लिए गए। विविध क्रीडाएं (कीला) करते हुए और नाटक देखते हुए मध्यरात्रि में घर के द्वार पर आए। घर को ढका हुआ देखकर द्वार खोलने के लिए उच्च स्वर से पुकारा—द्वार खोलो। तब द्वार के समीप सोने के लिए जागते हुए पुरोहित ने कहा—मध्यरात्रि को भी तुम

तत्थ गच्छेह' एवं कहिऊण मोणेण थिओ। तया ते दुण्णि समीवत्थियाए तुरंगसालाए गया। तत्थ अात्थरणाभावे अईवसीयबाहिया तुरंगमपिट्ठच्छाइआवरणवत्थं गहिऊण भूमीए सुत्ता। तया विजयरामेण जामाउणा चिंतिअं—'एत्थ सावमाणं ठाउं न उइअ।' तओ सो मित्तं कहेइ—'हे मित्त! अम्हं सुहसज्जा का? इमं भूलोट्टण च कत्थ? अओ इओ गमणं चिअ वरं।' स मित्तो बोल्लेइ—'एआरिसदुहे वि परन्न कत्थ?' अहं तु एत्थ ठाहिस्सं। तुमं गंतुमिच्छसि जइ, तया गच्छसु।' तओ सो पच्चूसे पुरोहियसमीवे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गीअ। तया पुरोहिओ सुट्ठु त्ति कहेइ। एवं सो विजयरामो 'भूसज्जाए विजयरामो' वि निग्गओ।

अहुणा केवलं केसवो जामायरो तत्थ थिओ संतो गंतुं नेच्छइ। पुरोहिओ वि केसवजामाउणो निक्कासणत्थं जुत्ति विआरेइ। एगया नियपुत्तस्स कण्णे किंचि वि कहिऊण जया केसवजामायरो भोयणत्थं उवविट्ठो, पुरोहिअस्स य पुत्तो समीवे ठिओ वट्टइ, तया पुरोहिओ समागओ समाणो पुत्ते पुच्छइ—'वच्छ!' एत्थ मए रुप्पगं मुत्तं, तं च केण गहिअं?' सो कहइ—'अहं न जाणामि।' पुरोहिओ बोल्लेइ—'तुमए च्चिय गहिअं, हे असच्चवाइ! पाव! धिट्ठ! देहि ममं तं, अन्नहा तुमं मारइस्सं हं' ति कहिऊण सो उवाणहं गहिऊण मारिउं धाविओ। पुत्तो वि मुट्ठि बंधिऊण पिउस्स सम्मुहं गओ। दोण्णि ते जुज्झमाणे दट्ठूण केसवो ताणं मज्झे गंतूण—'मा जुज्झह, मा जुज्झह' त्ति कहिऊण ठिओ। तया सो पुरोहिओ हे जामायर! 'अवसरसु अवसरसु' कहिऊण तं उवाणहेण पहरेइ। पुत्तो वि 'केसव! दूरीभव दूरीभव' त्ति कहिऊण मुट्ठीए तं केसवं पहरेइ। एवं पिउपुत्ता केसवं ताडिंति। तओ सो तेहिं धक्कामुक्केण ताडिज्जमाणो सिग्घं भग्गो, एवं धक्कामुक्केण केसवो' सो अकहिऊण गओ।

तद्दिणे पुरोहिओ निवसहाए विलंबेण गओ। नरिंदो तं पुच्छइ—'किं विलबेण तुम आगओ सि।' सो कहेइ—"विवाहमहूसवे चउरो जामायरा समागआ। ते उ भोयणरसलुद्धा चिरं ठिआवि गंतुं न इच्छंति। तओ जुत्तीए सव्वे निक्कासिआ ते एवं—

कहां ठहरे ? अब नहीं खोलूंगा। जहां द्वार खुला है, वहां जाओ। इस प्रकार कहकर मौन हुआ। तब वे दोनों समीप में स्थित घुड़साल में गए। वहां बिस्तर के अभाव में अत्यन्त ठण्ड से बीमार (तुरंगम) घोड़े की पीठ पर (अच्छाइ) ढकनेवाले आवश्यक वस्त्र को ग्रहण करके भूमि पर सोए। तब विजयराम दामाद के द्वारा विचारा गया—यहां अपमानसहित ठहरने के लिए उचित नहीं है। तब उसने मित्र को कहा – हे मित्र ! हमारी सुख शय्या क्या है ? और यह जमीन पर लोटना कैसे होगा ? अतः यहां से गमन ही श्रेष्ठ है। उस मित्र ने कहा इस जैसे दुःख में भी पर अन्न कहां ? मैं तो यहां ठहरूंगा। यदि तुम जाने की इच्छा रखते हो तो जाओ। तब उसने प्रभात में पुरोहित के समीप जाकर सीख व अनुज्ञा मांगी (भूतकाल) तब पुरोहित ने कहा, अच्छा। इस प्रकार वह विजयराम, भूशय्यावाला विजयराम' भी निकाला गया।

अब केवल केशव दामाद वहां ठहरा रहा, जाने की इच्छा नहीं की। पुरोहित भी केशव दामाद को निकालने के लिए युक्ति विचारता है। एक बार निज पुत्र के कान में कुछ भी कहकर जब केशव दामाद भोजन के लिए बैठा। पुरोहित का पुत्र समीप बैठा रहा तब पुरोहित आया (और) पुत्र को पूछा– हे पुत्र ! यहां मेरे द्वारा रुपया छोड़ा गया है और वह किसके द्वारा लिया गया है ? उसने कहा—मैं नहीं जानता हूँ। पुरोहित कहता है—तुम्हारे द्वारा ही लिया गया है, हे असत्यवाद ! हे पापी ! हे धीठ ! उसको मुझे दो। अन्यथा मैं तुमको मारूंगा। इस प्रकार कहकर वह जूता लेकर मारने के लिए दौड़ा। पुत्र भी मुट्ठी को बांधकर पिता के सम्मुख हो गया। वे दोनों लड़ते हुए (रहे) तब केशव उनको देखकर उनके मध्य में जाकर, मत लड़ो, मत लड़ो इस प्रकार कहकर खड़ा रहा। तब वह पुरोहित, हे दामाद ! हटो हटो कहकर उसको जूते से पीटा। पुत्र भी हे केशव ! दूर हो, दूर हो इस प्रकार कहकर मुट्ठी से उस केशव को पीटा। इस प्रकार पिता-पुत्र ने केशव को ताड़ा। तब वह उनके द्वारा धक्का मुक्के में ताड़ा जाते हुए शीघ्र भाग गया, इस प्रकार धक्का मुक्के से केशव बिना कहकर गया।

उस दिन पुरोहित राजसभा में देर से गया। राजा ने उसको पूछा—तुम देर से क्यों आए हो। उसने कहा—विवाह महोत्सव में चार दामाद आए। वे भोजनरस के लोभी चिरकाल तक ठहरे और जाने के लिए इच्छा नहीं करते हैं। तब युक्तिपूर्वक वे सभी निकाले गये, इस प्रकार –

वज्जकुडेण मणीरामो, तिलतेल्लेण माहवो ।
भूसज्जाए विजयरामो, धक्कामुक्केण केसवो ।।

त्ति, सव्वो वुत्तंतो नरिंदस्स अग्गे कहिओ । नरिंदो वि तस्स बुद्धीए अईव तुट्ठो ।
उवएसो—

जामायरचउक्कस्स सुणिऊण पराभवं ।
ससुरस्स गिहावासे सम्माणं जाव संवसे ।।

———

कठोर की हुई रोटी से मणीराम, तिलों के तेल से माधव, भूशय्या से विजयराम (और) धक्का मुक्के से केशव निकाले गए। इस प्रकार सभी वृतान्त राजा के सामने कहा गया। राजा भी उसकी बुद्धि से अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ।
उपदेश —

चार दामाद के पराभव को सुनकर (तुम) ससुर के गृहवास में सम्मान-पूर्वक ही बसो।

———

अभ्यास-44

विउसीए पुत्तबहूए कहाणगं

कम्मि नयरे लच्छीदासो सेट्ठी वरीवट्टइ। सो बहुधणसंपत्तीए गव्विट्ठो आसि। भोगविलासेसु एव लग्गो कयावि धम्मं ण कुणेइ। तस्स पुत्तो वि एयारिसो अत्थि। जोव्वणे पिउणा धम्मिअस्स धम्मदासस्स जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पाणिग्गहणं पुत्तस्स काराविय‌ं। सा कन्ना जया अट्ठवासा जाया, तया तीए पिउपेरणाए साहुणीसगासाओ सव्वण्णधम्मसवणेण सम्मत्तं अणुव्वयाइं य गहीयाइं, सव्वण्णधम्मे अईव निउणा संजाआ।

जया सा ससुरगेहे आगया तया ससुराइं धम्माओ विमुहं दट्ठूण तीए बहुदुहं संजायं। कहं मम नियवयस्स निव्वाहो होज्जा ? कहं वा देवगुरुविमुहाणं ससुराईणं धम्मोवएसो भवेज्जा, एवं सा वियारेइ।

एगया 'संसारो असारो, लच्छी वि असारा, देहोवि विणस्सरो, एगो धम्मो च्चिय परलोगपवन्नाणं जीवाणमाहारु' त्ति उवएसदाणेण नियभत्ता सव्वण्णधम्मेण वासिओ कओ। एवं सासूमवि कालंतरे बोहेइ। ससुरं पडिबोहिउ सा समयं मग्गेइ।

एगया तीए घरे समणगुणगणालंकिओ महव्वइ नाणी जोव्वणत्थो एगो साहू भिक्खत्थं समागओ। जोव्वणे वि गहीयवयं संतं दंतं साहुं घरंमि आगयं दट्ठूण आहारे विज्जमाणे वि तीए वियारियं—'जोव्वणे महव्वयं महादुल्लहं, कहं एएण एयंमि जोव्वणत्तणे गहीयं ?' ति परिक्खत्थं समस्साए पुट्ठं—'अहुणा समओ न संजाओ, किं पुव्वं निग्गया ?' तीए हियथगयभावं नाऊण साहुणा उत्तं—"समयनाण कया मच्चू होस्सइ त्ति नत्थि नाणं, तेण समयं विणा निग्गओ।" सा उत्तरं नाऊण तुट्ठा। मुणिणा वि सा पुट्ठा—'कइ वरिसा तुम्ह संजाया ?' मुणिस्स पुच्छाभावं नाऊण वीसवासेसु जाएसु वि तीए 'बारसवास' त्ति उत्तं। पुणरवि 'ते सामिस्स कइ वासा जात' त्ति ? पुट्ठं। तीए पियस्स पणवीसवासेसु जाएसु वि पंचवासा उत्ता, एवं सासूए 'छम्मासा' कहिया। ससुरस्स पुच्छाए सो 'अहुणा न उप्पण्णो अत्थि' ति भणिआ।

विदुषी पुत्रवधू का कथानक

किसी नगर में लक्ष्मीदास सेठ भली प्रकार से रहता था। वह बहुत धन-सम्पत्ति के कारण अत्यन्त गर्वीला था। भोगविलासों में ही (वह) लगा हुआ (था) (और) कभी भी धर्म नहीं करता था। उसका पुत्र भी ऐसा ही था। यौवन में पिता द्वारा धार्मिक धर्मदास की यथानाम शीलवती कन्या के साथ पुत्र का विवाह करवा दिया गया। जब वह कन्या आठ वर्ष की हुई, तब उसके द्वारा पिता की प्रेरणा से (एक) साध्वी के पास सर्वज्ञ के धर्म के श्रवण से सम्यकत्व और अणुव्रत ग्रहण किए गए। सर्वज्ञ के धर्म में वह बहुत निपुण हुई।

जब वह ससुर के घर में आ गई, तब ससुर आदि को धर्म से विमुख देखकर, उसके द्वारा बहुत दुःख प्राप्त किया गया। मेरे निजव्रत का निर्वाह कैसे होगा ? अथवा देव-गुरु से विमुख ससुर आदि के लिए धर्मोपदेश कैसे सम्भव होगा ? इस प्रकार वह विचार करती है।

संसार असार है, लक्ष्मी भी असार है, देह भी विनाशशील है, एक धर्म ही परलोक जानेवाले जीव के लिए आधार है, इस प्रकार एक बार उपदेश देने से निज पति सर्वज्ञ के धर्म में संस्कारित किया गया। कुछ समय पश्चात् (वह) इस प्रकार सास को भी समझाती है। ससुर को समझाने के लिए वह समय खोजने लगी।

एक बार उसके घर में श्रमण-गुण-समूह से अलंकृत महाव्रती, ज्ञानी, यौवन में स्थित एक साधु भिक्षा के लिए आए। यौवन में ही व्रत को ग्रहण किए हुए शान्त और जितेन्द्रिय साधु को घर में आया हुआ देखकर आहार को प्राप्त करते हुए होने पर ही उसके द्वारा विचार किया गया — यौवन में महाव्रत अत्यन्त दुर्लभ (है)। इनके द्वारा इस यौवन अवस्था में (महाव्रत) कैसे ग्रहण किए गए ? इस प्रकार परीक्षा के लिए समस्या का उत्तर पूछा गया—अभी समय न हुआ, पहिले ही (आप) क्यों निकल गए ? उसके हृदय में उत्पन्न भाव को जानकर साधु के द्वारा कहा गया—ज्ञान समय (है)। कब मृत्यु होगी, ऐसा ज्ञान किसी को नहीं है। इसलिए समय के बिना निकल गया। वह उत्तर को समझकर सन्तुष्ट हुई। मुनि के द्वारा वह भी पूछी गई—तुम्हें उत्पन्न हुए कितने वर्ष हुए ? मुनि के प्रश्न के आशय को जानकर बीस वर्ष हो जाने पर भी उसके द्वारा बारह वर्ष कहे गए। फिर, तुम्हारे स्वामी (का जन्म हुए) कितने वर्ष हुए ? इस प्रकार (यह) पूछा गया। उसके द्वारा प्रिय का (जन्म हुए) पच्चीस वर्ष हो जाने पर भी पाँच वर्ष कहा गया। इस प्रकार सासू का छः माह कहा गया, ससुर के लिए पूछने पर 'वह अभी उत्पन्न नहीं हुआ है' इस प्रकार शब्द कहे गए।

एवं वहू-साहूणं वट्टा अंतट्ठिएण ससुरेण सुआ । लद्धभिक्खे साहुंमि गए सो अईव कोहाउलो संजाओ, जओ पुत्तवहु म उद्दिस्स 'न जाउ' त्ति कहेइ । रुट्ठो सो पुत्तस्स कहणत्थ हट्टं गच्छइ । गच्छन्तं ससुरं सा वएइ—'भोत्तूणं हे ससुर ! तुं गच्छसु ।' ससुरो कहेइ—'जइ हं न जाओ म्हि, तया कहं भोयणं चव्वेमि-भक्खेमि' इअ कहिऊण हट्टे गओ । पुत्तस्स सव्वं वुत्तंतं कहेइ—'तव पत्ती दुरायारा असब्भवयणा अत्थि, अओ तं गिहाओ निक्कासय ।'

सो पिउणा सह गेहे आगओ । वहुं पुच्छइ—किं माउपिउणो अवमाणं कयं ? साहुणा सह वट्टाए किं असच्चमुत्तारं दिण्णं ?' तीए उत्तं—'तुम्हे मुणिं पुच्छह, सो सव्वं कहिहिइ ।' ससुरो उवस्सए गंतूण सावमाणं मुणिं पुच्छइ—'हे मुणे, अज्ज मम गेहे भिक्खत्थं तुम्हे किं आगया ?' मुणी कहेइ—'तुम्हाण घरं ण जाणामि, तुमं कुत्थ वससि ?' सेट्ठी वियारेइ 'मुणी असच्चं कहेइ ।' पुणरवि पुट्ठं—'कत्थ वि गेहे बालाए सह वट्टा कया किं ?' मुणी कहेइ—'सा बाला अईव कुसला, तीए मम वि परिक्खा कया ।' तीए हं वुत्तो—'समयं विणा कहं निग्गओ सि ?' मए उत्तरं दिण्णं—"समयस्स 'मरणसमय' नाणं नत्थि, तेण पुव्ववयम्मि निग्गओ म्हि ।" मए वि परिक्खत्थं सव्वेसिं ससुराईणं वासाइं पुट्ठाइं । तीए सम्मं कहियाइं । सेट्ठी पुच्छइ—'ससुरो न जाओ इअ तीए किं कहियं ?' मुणिणा उत्तं—'सा चिय पुच्छिज्जउ, जओ विउसीए तीए जहत्थो भावो नज्जइ ।

ससुरो गेहं गच्चा पुत्तवहुं पुच्छइ—'तीए मुणिस्स पुरओ किमेवं वुत्तं—मे ससुरो जाओ वि न ।' तीए उत्त—"हे ससुर, धम्महीणमणुसस्स माणवभवो पत्तो वि अपत्तो एव, जओ सद्धम्मकिच्चेहि सहलो भवो न कओ सो मणुसभवो निप्फलो चिय । तओ तुम्हं जीवणं पि धम्महीणं सव्वं गयं तेण मए कहिअं मम ससुरस्स उप्पत्ती एव न ।" एवं सच्चत्थाणे तुट्ठो धम्माभिमुहो जाओ । पुणरवि पुट्ठं—'तुमए सासूए छम्मासा कहं कहिआ ?' तीए उत्त—'सासुं पुच्छह' ।' सेट्ठिणा सा पुट्ठा ।

इस प्रकार बहू और साधु की वार्ता भीतर बैठे हुए ससुर के द्वारा सुनी गई। भिक्षा को प्राप्त साधु के चले जाने पर वह अत्यन्त क्रोध से व्याकुल हुआ, क्योंकि पुत्रवधु मुझको लक्ष्य करके कहती है कि (मैं) उत्पन्न नहीं हुआ। वह रूठ गया, (और) पुत्र को कहने के लिए दुकान पर गया। जाते हुए ससुर को वह कहती है—हे ससुर! आप भोजन करके जाएं। ससुर कहता है यदि मैं उत्पन्न नहीं हुआ हूँ, तो भोजन कैसे चबाऊँगा-खाऊँगा। इस (बात) को कहकर दुकान पर गया। पुत्र को सब वार्ता कहता है—तेरी पत्नी दुराचारिणी है और अशिष्ट बोलनेवाली है, इसलिए (तुम) उसको घर से निकालो।

वह पिता के साथ घर में आया। (वह) बहू को पूछता है (तुम्हारे द्वारा) माता-पिता का अपमान क्यों किया गया? साधु के साथ वार्ता में असत्य उत्तर क्यों दिए गए? उसके द्वारा कहा गया - तुम्ही मुनि को पूछो, वह सब कह देंगे। ससुर ने उपासरे में जाकर अपमानसहित मुनि को पूछा—हे मुनि! आज मेरे घर में भिक्षा के लिए तुम क्यों आए? मुनि ने कहा—तुम्हारे घर को नहीं जानता हूँ, तुम कहां रहते हो? सेठ विचारता है कि मुनि असत्य कहता है। फिर पूछा गया—क्या किसी भी घर में बाला के साथ वार्ता की गई? मुनि ने कहा—वह बाला अत्यन्त कुशल है। उसके द्वारा मेरी भी परीक्षा की गई। उसके द्वारा मैं कहा गया—समय के बिना तुम कैसे निकले हो? मेरे द्वारा उत्तर दिया गया—समय का-मरण समय का ज्ञान नहीं है, इसलिए आयु के पूर्व में ही निकल गया हूँ। मेरे द्वारा भी परीक्षा के लिए ससुर आदि सभी के वर्ष (आयु) पूछे गए (तो) उसके द्वारा (बाला के द्वारा) उचित प्रकार से उत्तर कहे गए। सेठ ने पूछा—ससुर उत्पन्न नहीं हुआ, यह उसके द्वारा क्यों कहा गया? मुनि के द्वारा कहा गया—वह ही पूछी जाए, क्योंकि उस विदुषी के द्वारा यथार्थ भाव जाने जाते (जाने गये) हैं।

ससुर घर जाकर पुत्रवधू से पूछता है—तुम्हारे द्वारा मुनि के समक्ष इस प्रकार से क्यों कहा गया (कि) मेरा ससुर उत्पन्न ही नहीं (हुआ) है। उसके द्वारा कहा गया—हे ससुर! धर्महीन मनुष्य का मनुष्यभव प्राप्त किया हुआ भी प्राप्त नहीं किया हुआ (अप्राप्त) ही है, क्योंकि सत्-धर्म की क्रिया के द्वारा (मनुष्य) भव सफल नहीं किया गया (है) (तो) वह मनुष्य जन्म निरर्थक ही है। उस कारण से तुम्हारा सारा जीवन धर्महीन ही गया, इसलिए मेरे द्वारा कहा गया—मेरे ससुर की उत्पति ही नहीं है। इस प्रकार सत्य बात पर (वह) सन्तुष्ट हुआ और धर्माभिमुख हुआ। फिर

ताए वि कहिग्रं—"पुत्तवहूणं वयणं सच्चं, जग्रो मम सव्वण्णुधम्मपत्तीए छम्मासा एव जाया, जग्रो इग्रो छम्मासाग्रो पुव्वं कत्थ वि मरणपसंगे ग्रह गया। तत्थ थीणं विविह-गुणदोसवट्टा जाया।"

एगाए वुड्ढाए उत्तं –"नारीण मज्झे इमीए पुत्तवहू सेट्ठा। जोव्वणवए वि सासू-भत्तिपरा धम्मकज्जम्मि स एव ग्रपमत्ता, गिहकज्जेसु वि कुसला नन्ना एरिसा। इमीए सासू निब्भगा, एरिसीए भत्तिवच्छलाए पुत्तवहूए वि धम्मकज्जे पेरिज्जमाणावि धम्मं न कुणेइ इमं सोऊण बहुगुणरंजिग्रा तीए मुहाग्रो धम्मो पत्तो। धम्मपत्तीए छम्मासा जाया, तग्रो पुत्तवहूए छम्मासा कहिग्रा, तं जुत्तं।"

पुत्तो वि पुट्ठो, तेण वि उत्तं –"रत्तीए समयधम्मोवएसपराए भज्जाए संसारासारदंसणेण भोगविलासाणं च परिणामदुहदाइत्तणेण वासाणईपूरतुल्लजुव्वणत्तणेण य देहस्स खणभंगुरत्तणेण जयम्मि धम्मो एव सारु त्ति उवदिट्ठो हं सव्वण्णुधम्माराहगो जाग्रो, ग्रज्ज पंचवासा जाया। तग्रो वहूए मं उद्दिस्स पंचवासा कहिग्रा, तं सच्चं।" एवं कुडुंबस्स धम्मपत्तीए वट्टाए विउसीए य पुत्तवहूए जहत्थवयणं सोऊण लच्छीदासो वि पडिबुद्धो वुड्ढत्तणे वि धम्मं ग्राराहिग्र सग्गइं पत्तो सपरिवारो।

———

पूछा गया—तुम्हारे द्वारा सासू की (उम्र) छः मास कैसे कही गई ? उसके द्वारा उत्तर दिया गया—सासू को पूछो। सेठ के द्वारा वह पूछी गई । उसके द्वारा भी कहा गया—पुत्र की बहू के वचन सत्य हैं, क्योंकि मेरी सर्वज्ञ-धर्म की प्राप्ति में छः माह ही हुए हैं, क्योंकि इस लोक में छः मास पूर्व मैं किसी (की) मृत्यु प्रसंग में गई। वहां उस स्त्री (वहू) के विविध गुण-दोषों की वार्ता हुई।

(वहां) एक वृद्धा के द्वारा कहा गया—स्त्रियों के मध्य में इसकी पुत्रवधु श्रेष्ठ है। यौवन की अवस्था में भी वह सासू की भक्ति में लीन (तथा) धर्म कार्यों में भी अप्रमादी है, गृहकार्यों में भी कुशल (उसके) समान दूसरी नहीं है। इसकी सासू अभागी है ऐसी भक्ति प्रेमी पुत्रवधु द्वारा धर्म-कार्य में प्रेरित किए जाते हुए भी धर्म नहीं करती है। इसको सुनकर बहू के गुणों से प्रसन्न हुई (मेरे द्वारा) उसके मुख से धर्म प्राप्त किया गया। धर्म-लाभ में छः मास हुए। इसलिए पुत्रवधु के द्वारा छः मास कहे गये, वह युक्त है।

पुत्र भी पूछा गया, उसके द्वारा भी कहा गया—रात्रि में सिद्धान्त और धर्म के उपदेश में लीन पत्नी के द्वारा संसार में असार के दर्शन से और भोगविलास के परिणाम के दुःखदाई होने से, वर्षा नदी के जल-प्रवाह के समान यौवनावस्था के कारण और देह की क्षणभंगुरता से, जगत मे धर्म ही सार (है), इस प्रकार बताया गया। मैं सर्वज्ञ के धर्म का आराधक बना, आज पांच वर्ष पूरे हुए। इसीलिए बहू के द्वारा मुझको लक्ष्य करके पांच वर्ष कहे गए, वह सत्य है। इस प्रकार कुटुम्ब के लिए धर्म-लाभ की वार्ता से विदुषी पुत्रवधू के यथार्थ वचन को सुनकर लक्ष्मीदास भी ज्ञानी (हुआ) और बुढापे में (उसके द्वारा) भी धर्म पाला गया। उसने सपरिवार सन्मार्ग प्राप्त किया।

विउसीहे पुत्त-बहूहे कहाणगु[1]

कहिं णयरि लच्छीदासु सेट्ठि वरीवट्टइ। सो बहुधण-संपत्तिए गव्विट्ठु आसि। भोगविलासहिं एव लग्गु कयावि धम्मु ण कुणेइ। तासु पुत्तु वि एयारिसु अत्थि। जोव्वणि पिउए धम्मिअहो धम्मदासहो जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पुत्तसु पाणिग्गहणु कराविउ। सा कन्ना जइयहुं अट्ठवासा जाया, तइयहुं ताए पिउ पेरणाए साहुणी सगासहु सव्वण्ण धम्म सवणें सम्मत्तु अणुव्वयइं य गहीयइं, सव्वण्ण धम्मि अईव निउणा संजाआ।

जइयहुं सा ससुर गेहि आगया तइयहुं ससुराइ धम्महु विमुहु देक्खेवि ताए बहुदुहु संजाउ। कहं मज्झु नियवय निव्वाहु होसइ ? कहं वा देवगुरुहुं विमुहहं ससुराइ धम्मोवएसु भवेसइ, एवं सा वियारेइ।

एगया संसारु असारु, लच्छी वि असारा, देहु वि विणस्सरु, एक्कु धम्मु च्चिय परलोअपवन्नहं जीवहं आहारु त्ति उवएसदाणें नियभत्ता सव्वण्ण धम्में वासिउ कउ। एवं सासू वि कालंतरे बोहेइ। ससुर पडिबोहेवं सा समयु मग्गेइ।

एगया ताहे घरि समणगुणगणालंकिउ महव्वइ नाणी जोव्वणत्थु एक्कु साहु भिक्खसु समागउ। जोव्वणि वि गहीयवय संत दंत साहु घरे आगय देक्खेप्पिणु आहारे विज्जमाणे वि ताए वियारिय-जोव्वणे महव्वय महादुल्लहु, कहं एतें एतहिं जोव्वणत्तणे गहीय ? इति परिक्खेवं समस्साहे उत्तर पुट्ठं—अहुणा समउ न संजाउ किं पुव्वं निग्गया ? ताहे हियये गउ भाउ णाइ साहुए उत्तु—'समयनाणु', कया मच्चु होसइ त्ति नत्थि नाणु, तेण समय विणा निग्गउ। सा उत्तरु णाएवि तुट्ठा। मुणिएं वि सा पुट्ठा—कइ वरिसा तुहुं संजाया ? मुणि पुच्छाभावु णाइ वीसवासेहिं जाअहिं वि ताए बारसवासु त्ति उत्तु। पुणु 'तुज्झ-सामि कइ वासा जाआ' ति पुट्ठु ताहे पियहो पण-वीसवासहिं जाअहिं वि पंचवासा उत्ता, एवं सासूहे 'छमासा' कहिया। मुणिएं ससुरहो पुच्छिउ, सो 'अहुणा न उप्पण्णु अत्थि' ति सट्टा भणिया।

---

1. 'पाइयगज्जसंगहो' में प्रकाशित 'विउसीए पुत्तवहूए कहाणगं' का डॉ. कमलचन्द सोगाणीकृत अपभ्रंश रूपान्तरण।

एवं बहू साहु वट्टा अंतद्दिठएं ससुरें सुआ। लद्धभिक्खे साहुहि गए सो अईव काहाउलु संजाउ, जओ पुत्तवहू मइं उद्दिस्सेवि 'न जाउ' त्ति कहेइ। रुट्ठु सो पुत्तसु कहेवि हट्टु गच्छइ। गच्छन्तु ससुरु सा वयइ—भुञ्जेवि हे ससुरु ! तुहुं गच्छहि। ससुर कहेइ—जइ हउं न जाउ अत्थि, तो कहं भोयणु चव्वेमि-भक्खेमि, इअ कहेप्पिणु हट्टि गउ। पुत्तसु सव्वु वुत्तंतु कहेइ – तउ पत्ती दुरायारा असब्भवयणा अत्थि, अओ तं गिहाहु निक्कास।

सो पिउं सह गेहि आगउ। (सो) बहू पुच्छइ—किं माउ पिउ अवमाणु कउ ? साहुं सह वट्टाहिं किं असच्चु उत्तरु दिण्णु ? ताए उत्तु – तुम्हे मुणि पुच्छह, सो सव्वु कहिहिइ। ससुरु उवस्सइ जाएवि सावमाणु मुणि पुच्छइ– हे मुणि, अज्जु महु गेहि भिक्खसु तुम्हे किं आगया ? मुणि कहेइ– तुम्हहं घरु ण जाणामि, तुहुं कुत्थ वसहि ? सेट्ठि वियारेइ—मुणि असच्चु कहेइ। पुणु पुट्ठु—कत्थ वि गेहि बालाए सह वट्टा कया किं ? मुणि कहेइ—'सा बाला अईव कुसला, ताए महु वि परिक्खा कया।' तया हउं वुत्तु—समया विणा कहं निग्गउ सि ? मइं उत्तरु दिण्णु – "समयहो-मरणसमयहो नाणु नत्थि, तेण पुव्ववये निग्गउ म्हि।" मइं वि परिक्खेवि सव्वाहु ससुराइ वासाइं पुट्ठाइं। ताए सम्मं कहियाइं। सेट्ठि पुच्छइ—ससुरु न जाउ इअ ताए किं कहिय ? मुणि उत्तु—सा चिअ पुच्छिज्जउ, जओ 'विउसीए ताए जहत्थु भावु णाइज्जइ।'

ससुरु गेहु जाइ पुत्तावहु पुच्छइ – 'तइं मुणि पुरओ किं एव वुत्त—महु ससुरु जाउ वि न।' ताए उत्त—'हे ससुर, धम्महीण मणुसहो माणव भवु पत्तु वि अपत्तु एव, जओ सद्धम्म किच्चहिं सहलु भवु न कउ सो मणुसभव निप्फल चिय। तओ तउ जीवणु पि धम्महीणु सव्वु गउ। तेण मइं कहिअ—महु ससुरहो उप्पत्ति एव न।' एवं सच्चि ठाणि तुट्ठु धम्माभिमुहु जाउ। पुणु पुट्ठु पइं सासू छम्मासा कहं कहिआ ? ताए उत्त – सासू पुच्छह। सेट्ठिएं सा पुट्ठा। ताए वि कहिअ पुत्तावहू वयणु सच्चु, जओ महु सव्वण्हु धम्मपत्तीहि छमासा एव जाया, जओ छमासाहु पुव्वं कत्थ वि मरण-पसंगे हउं गया। तत्थ थीहु विविहगुणदोसवट्टा जाया।

एगाए वुड्ढाए उत्त नारीहु मज्झे इमाहे पुत्तवहू सेट्ठा। जोव्वणवए वि सासूभत्तिपरा धम्मकज्जे सा एव अपमत्ता, गिहकज्जहिं वि कुसला नन्ना एरिसा। इमाहे सासू निब्भगा, एरिसीए भत्तिवच्छलाए पुत्तवहूए वि धम्मकज्जि पेरिज्जमाणावि

धम्मु न कुणेइ, इमु सुणेवि बहुगुणरंजिम्रा ताहे मुहहे धम्मो पत्तो। धम्मपत्तीहिं छमासा जाया, तम्रो पुत्तवहूए छम्मासा कहिम्रा, तं जुत्तु।

पुत्तु वि पुट्ठु, तेण वि उत्तु—रत्तिहिँ समय-धम्मोवएसपराए भज्जाए संसारासारदंसणें भोगविलासहं च परिणामदुहदाइत्तणें, वासाणईपूरतुल जुव्वणतणे य देहसु खणभंगुरतणे जयि धम्म एव सारु ति उवदिट्ठु। हउं सव्वण्णु-धम्मारागहो जाउ, ग्रज्जु पंचवासा जाया। तम्रो बहुए मइं उद्दिस्सेवि पंचवासा कहिम्रा, त सच्चु। एव कुडुंबसु धम्मपत्तिहे वट्टाए विउसीहे य पुत्तबहूहे जहत्थवयणु सुणेप्पिणु लच्छीदासु वि पडिबुद्ध वुड्ढत्तणि वि धम्मु ग्राराहिउ सग्गइ पत्तु सपरिवारु।

अभ्यास-45

अमंगलियपुरिसस्स कहा

एगंमि नयरे एगो अमंगलिओ मुद्धो पुरिसो आसि। सो एरिसो अत्थि, जो को वि पभायंमि तस्स मुहं पासेइ, सो भोयणं पि न लहेज्जा। पउरा वि पच्चूसे कया वि तस्स मुहं न पिक्खंति। नरवइणा वि अमंगलियपुरिसस्स वट्टा सुणिआ। परिक्खत्थं नरिंदेण एगया पभायकाले सो आहूओ, तस्स मुहं दिट्ठं। जया राया भोयणत्थमुव-विसइ, कवलं च मुहे पक्खिवइ, तया अहिलंमि नयरे अकम्हा परचक्कभएण हलबोलो जाओ। तया नरवइ वि भोयणं चिच्चा सहसा उत्थाय ससेण्णो नयराओ बाहिं निग्गओ।

भयकारणमदट्ठूण पुणो पच्छा आगओ। समाणो नरिंदो चिंतेइ—'अस्स अमंगलियस्स सरूवं मय पच्चक्खं दिट्ठं तओ एसो हंतव्वो' एवं चिंतिऊण अमंगलियं बोल्लाविऊण वहत्थं चंडालस्स अप्पेइ। जया एसो रुयंतो, सकम्मं निंदंतो चंडालेण सह गच्छंतो अत्थि, तया एगो कारुणिओ बुद्धिनिहाणो वहाइ नेइज्जंतमाणं तं दट्ठूणं कारणं णच्चा तस्स रक्खणाय कण्णे किंपि कहिऊण उवाय दंसेइ। हरिसंतो जया वहत्थंभे ठविओ, तया चंडालो तं पुच्छइ—'जीवणं विणा तव कावि इच्छा सिया, तया मग्गि-यव्वं।' सो कहेइ—'मज्झ नरिंदमुहदंसणेच्छा अत्थि' तया सो नरिंदसमीवमाणीओ। नरिंदो तं पुच्छइ—'किमेत्थ आगमणपओयणं?'

सो कहेइ—"हे नरिंद, पच्चूसे मम मुहस्स दंसणेण भोयणं न लब्भइ, परंतु तुम्हाणं मुहपेक्खणेण मम वहो भविस्सइ, तया पउरा किं कहिस्संति? मम मुहाओ सिरिमंताणं मुहदंसणं केरिसफलयं संजाअं, नायरा वि पभाए तुम्हाणं मुहं कहं पासि-हिरे।" एवं तस्स वयणजुत्तीए संतुट्ठो नरिंदो वहाएसं निसेहिऊणं पारितोसिअं च दच्चा तं अमंगलियं संतोसीअ।

अमांगलिक पुरुष की कथा

एक नगर में एक अमांगलिक मूर्ख पुरुष था। वह ऐसा था जो कोई भी प्रभात में उसके मुंह को देखता वह भोजन भी नहीं पाता (उसे भोजन भी नहीं मिलता)। नगर के निवासी भी प्रातःकाल में कभी भी उसके मुंह को नहीं देखते थे। राजा के द्वारा भी अमांगलिक पुरुष की बात सुनी गई। परीक्षा के लिए राजा के द्वारा एक बार प्रभातकाल में वह बुलाया गया, उसका मुख देखा गया। ज्योंहि राजा भोजन के लिए बैठा और मुंह में (रोटी का) ग्रास रखा त्योंहि समस्त नगर में अकस्मात् शत्रु के द्वारा आक्रमण के भय से शोरगुल हुआ। तब राजा भी भोजन को छोड़कर (और) शीघ्र उठकर सेना-सहित नगर से बाहर गया।

और भय के कारण को न देखकर बाद में आया। अहंकारी राजा ने सोचा— इस अमांगलिक के स्वरूप को मेरे द्वारा प्रत्यक्ष देखा गया, इसलिए यह मारा जाना चाहिए। इस प्रकार विचारकर अमांगलिक को बुलवाकर वध के लिए चांडाल को सौंप दिया। जब यह रोता हुआ स्व-कर्म की (को) निन्दा करता हुआ चाण्डाल के साथ जा रहा था, तब एक दयावान, बुद्धिमान ने वध के लिए ले जाए जाते हुए उसको देखकर, कारण को जानकर उसकी रक्षा के लिए कान में कुछ कहकर उपाय दिखलाया। (इसके फलस्वरूप वह) प्रसन्न होते हुए (चला)। जब (वह) वध के खम्भे पर खड़ा किया गया तब चाण्डाल ने उसको पूछा— जीवन के अलावा तुम्हारी कोई भी, (वस्तु की) इच्छा हो, तो (तुम्हारे द्वारा) (वह वस्तु) मांगी जानी चाहिए। उसने कहा— मेरी इच्छा राजा के मुख-दर्शन की है। तब वह राजा के सामने लाया गया। राजा ने उसको पूछा— यहां आने का प्रयोजन क्या है?

उसने कहा हे राजा! प्रातःकाल में मेरे मुख के दर्शन से (तुम्हारे द्वारा) भोजन ग्रहण नहीं किया गया, परन्तु तुम्हारा मुख देखने से मेरा वध होगा तब नगर के निवासी क्या कहेंगे? मेरे मुंह (दर्शन) की तुलना में श्रीमान् का मुख-दर्शन कैसा फल उत्पन्न करता है? नागरिक भी प्रभात में तुम्हारे मुख को कैसे देखेंगे? इस प्रकार उसकी वचन की युक्ति से राजा सन्तुष्ट हुआ। (वह) वध के आदेश को रद्द करके और उसको पारितोषिक देकर प्रसन्न हुआ। (इससे) वह अमांगलिक भी सन्तुष्ट हुआ।

अपभ्रंश अनुवाद

अमंगलिय पुरिसहो कहा[1]

एक्कहिं णयरि एक्कु अमंगलिउ मुद्धु पुरिसु आसि। सो एरिसु अत्थि जो को वि पभाये तहो मुह पासेइ, सो भोयणु पि न लहेइ। पउरा वि पच्चूसे कयावि तहो मुहु न पिक्खहिं। नरवइएं वि अमंगलिय पुरिसहो वट्टा सुणिआ। परिक्खेवं नरिंदें एगया पभायकाले सो आहूउ, तासु मुहु दिट्ठु। जइयहुं राउ भोयणा उवविसइ, कवलु च मुहि पक्खिवइ, तइयहुं अहिलि नयरे अकम्हा परचक्क भयें हलबोलु जाउ। तावेहिं नरवइ वि भोयणु चयेवि सहसा उट्ठेविणु ससेण्णु नयरहे बाहिं निग्गउ।

भय कारणु अदट्ठूण पुणु पच्छा आगउ। समाणु नरिंदु चिंतेइ—इमहो अमंगलियहो सरूवु मइं पच्चक्खु दिट्ठु, तओ एहो हंतव्वो। एवं चिंतेप्पि अमंगलिय कोक्काविएप्पिणु वहेवं चंडालसु अप्पेइ। जइयहुं एहो रुवंतु, सकम्मु निंदंतु चंडालें सह गच्छंतु अत्थि, तइयहुं एक्कु कारुणिउ बुद्धिणिहाणु वहाहे नेइज्जमाणु तं दट्ठूणं कारणु णाइ तासु रक्खणसु कण्णि किंपि कहेप्पिणु उवाय दंसेइ। हरिसंतु जावेहिं वहस्सु थंभि ठविउ तावेहिं चंडालु तं पुच्छइ—'जीवणु विणा तउ कावि इच्छा होइ, तया मग्गियव्वा।' सो कहेइ—महु नरिंद मुह दंसण इच्छा अत्थि। तया सो नरिंद समीवं आणिउ। नरिंदु तं पुच्छइ—एत्थु आगमण किं पओयणु ?

सो कहेइ—हे नरिंदु ! पच्चूसे महु मुहस्सु दंसणें भोयणु न लहिज्जइ। परन्तु तुम्हहं मुह पेक्खणें मज्झु वहु भवेसइ, तइयहुं पउर किं कहेसंति/कहेसहिं। महु मुहहे सिरिमंतहं मुह दंसणु केरिसु फलउ जाउ ? नायरा वि पभाए तुम्हहं मुह कहं पासिहिरे? एवं तासु वयण जुत्तिए संतुट्ठु नरिंदु। सो वहाएसु निसेहेवि पारितोसिउ च दायवि हरिसिउ सो अमंगलिउ वि संतुस्सिउ।

---

1. 'पाइयगज्जसंगहो' (प्राच्य भारती प्रकाशन, आरा) में प्रकाशित प्राकृत कथा 'अमंगलिय पुरिसस्सकथा' का डॉ. कमलचन्द सोगाणीकृत अपभ्रंश रूपान्तरण।

अभ्यास-46

गेहे सूरो

एगंमि गामे एगो सुवण्णयारो वसइ। तस्स रायपहस्स मज्झमाए हट्टिगा विज्जइ। सया मज्झरत्तीए सो सुवण्णभरियं मंजूसं गहिऊणं नियघरंमि आगच्छइ। एगया तस्स भज्जाए चिंतिअं—"एसो मम भत्ता सव्वया मंजूसं गहिऊणं मज्झरत्तीए गेहे आगच्छइ, तं न वरं, जओ कयावि मग्गे चोरा मिलेज्जा तया किं होज्जा ?" तओ तीए नियभत्तारो वुत्तो—"हे पिअ ! मज्झरत्तीए तुज्झ गिहे आगमणं न सोहणं ति, मज्झमाए कयावि को वि मिलेज्जा तया किं होज्जा ?" सो कहेइ—"तुं मम बलं न जाणासि, तेण एवं बोल्लेसि। मम पुरओ नरसयं पि आगच्छेज्ज, ते किं कुणेज्जा ? ममग्गओ ते किमवि काउं न समत्था। तुमए भयं न कायव्वं।" एवं सुणिऊण तीए चिंतिअं—'गेहेसूरो मम पिओ अत्थि, समए तस्स परिक्खं काहिमि।'

एगया सा नियघरसमीववासिणीए खत्तियाणीए घरे गंतूण कहेइ—"हे पियसहि ! तुं तव भत्तुणो सव्वं वत्थभूसं मज्झ अप्पेहि, मम किं पि पओयण अत्थि।" तीए खत्तियाणीए अप्पणो पिअस्स असिसहिअ-सिरवेढण-कडिपट्टाइ-सुहडवेसं सव्वं समप्पिअं। सा गहिऊण गेहे गया।

जया रत्तीए एगो जामो गओ, तया सा तं सव्वं सुहडवेसं परिहाय, असिं गहिऊण निस्संचारे रायपहंमि निग्गया। पिअस्स हट्टाओ नाइदूरे रुक्खस्स पच्छा अप्पणं आवरिअ ठिआ। कियंतकाले सो सोण्णारो हट्टं संवरिय, मंजूसं च हत्थेण गहिऊण सो भयभंतो इओ तओ पासंतो सिग्घं गच्छंतो जाव तस्स रुक्खस्स समीवं आगओ, तया पुरिसवेसधारिणी सा सहसा नीसरिऊण मउणेण तं निब्भच्छेइ—'हुं, हुं, सव्वं मुंचेहि, अन्नहा मारइस्सं।' सो अकम्हा रुंधिओ भएण थरथरंतो 'मं न मारेसु, मं न मारेसु' इअ कहिऊण मंजूसा अप्पिआ। तओ सा सव्वपरिहिअवत्थग्गहणाय करवालग्गं तस्स वच्छंमि ठविऊण सन्नाए वसणाइं पि कड्ढावेइ। तया सो परिहिअ-कडिपट्टयमेत्तो जाओ। तओ सा कडिपट्टयं पि मरणभयं दंसिऊण कड्ढावेइ। सो अहुणा जाओ इव नग्गो जाओ। सा सव्वं गहिऊण घरंमि गया, घरदारं पिहिऊण अंतो थिआ।

घर में शूर

एक गांव में एक स्वर्णकार रहता था। राजपथ के मध्य भाग में उसकी दुकान थी। वह सदा मध्यरात्रि में सोने से भरी हुई पेटी को लेकर निजघर में आता था। एक बार उसकी पत्नी के द्वारा सोचा गया—यह मेरा पति पेटी को लेकर सदैव मध्यरात्रि में घर में आता है, वह ठीक नहीं है। क्योंकि कभी मार्ग में चोर मिलेंगे तो क्या होगा ? तब उसके द्वारा अपना पति कहा गया - "हे प्रिय ! मध्यरात्रि में तुम्हारा इस प्रकार घर में आगमन शोभता नहीं है, मध्यभाग में कभी भी कोई मिलेगा तो क्या होगा ?" उसने कहा—"तुम मेरे बल को नहीं जानती हो, इसलिए (ही) तुम बोलती हो। मेरे सामने सैंकड़ों मनुष्य भी आयेंगे, वे क्या करेंगे ? मेरे सामने वे कुछ भी करने के लिए समर्थ नहीं हैं। तुम्हारे द्वारा भय नहीं किया जाना चाहिए।" इस प्रकार सुनकर उसके द्वारा विचारा गया—मेरा पति घर में शूर है, (मैं) समय पर उसकी परीक्षा करूँगी।

एक बार वह अपने घर के समीप रहनेवाली क्षत्रियाणी के घर में जाकर कहती है—"हे प्रिय सखी ! तुम तुम्हारे पति के सभी वस्त्र-आभूषण मेरे लिए दे दो, मेरा कोई प्रयोजन है।" उस क्षत्रियाणी के द्वारा अपने प्रिय की तलवारसहित सिर ढकनेवाला तथा कटिपट्ट आदि योद्धा की वेशभूषा (आदि) सब ही दे दी गई। वह (उन्हें) लेकर घर में गई।

जब रात्रि में एक प्रहर बीता तब वह उस सभी योद्धावेश को पहिनकर तलवार को लेकर संचाररहित राजमार्ग पर निकल गई। पति की दुकान से नजदीक पेड़ के पीछे अपने को छिपाकर खड़ी रही। कुछ समय में वह सुनार दुकान को बन्द करके, पेटी को हाथ से लेकर भय से घबराया हुआ इधर-उधर देखता हुआ, शीघ्र जाता हुआ जब उस पेड़ के समीप आया तब पुरुष का वेश धारण करनेवाली वह अचानक निकलकर मौन से उसका तिरस्कार करती है (और संकेत से कहती है)— हुं-हुं, सब छोड़ो अन्यथा मार दूंगा। वह अचानक रोक लिया गया, भय से थर-थर कांपता हुआ- 'मुझको मत मारो, मुझको मत मारो,' इस प्रकार कहकर पेटी दे दी। तब उसने सभी पहिने हुए वस्त्रों को लेने के लिए तलवार की नोक उसकी छाती पर रखकर पहने हुए वस्त्र भी उतरवा लिये। तब वह कटिपट्टमात्र ही पहने हुए रहा। तब उस कटिपट्ट को भी मरणभय को दिखाकर उतरवा लिया। अब वह बच्चे के समान नग्न हुआ। वह सब लेकर घर गई, घर के द्वार को ढककर (बन्दकर) अन्दर बैठ गई।

सो सुवण्णयारो भएण कंपमाणो इओ तओ अवलोएंतो मग्गे आवणवीहीए गच्छंतो कमेण जया सागवावारिणो हट्टसमीवमागओ, तया केण जणेण पक्कचिब्भडं बाहिरं पक्खित्तं, तं तु तस्स सुवण्णयारस्स पिट्ठभागे लग्गिअं। तेण नायं केणावि अहं पहरिओ। पिट्ठदेसे हत्थेण फासेइ, तत्थ चिब्भडस्स रसं बीआइं च फासिऊणं विआरिअ—"अहो हं गाढयरं पहरिओ म्हि, तेण घाएण सह सोणिअं पि निग्गयं, तम्मज्झे कीडगावि समुप्पन्ना एवं अच्चंतभयाउलो तुरिअं तुरिअं गच्छंतो घरद्दारे समागओ।

पिहिअं घरद्दारं पासिऊण नियभज्जाए आहवणत्थं उच्चसरेण कहेइ –'हे मयणस्स मायरे, दारं उग्घाडेहि, दारं उग्घाडेहि।' सा अब्भंतरत्थिआ सुणंती वि असुणंतीव किंचि काल थिआ। अइवक्कोसणे सा आगच्च दारं उग्घाडिअ एवं पुच्छइ— किं वहुं अक्कोससि ?' सो भयभंतो गिहम्मि पविसिअ भज्जं कहेइ—'दारं सिग्घं पिहाहि, तालगं पि देसु।' तीए सव्वं काऊण पुट्ठं—'किं एवं नग्गो जाओ ?' तेण वुत्तं—'अब्भंतरे अववरए चल. पच्छा मं पुच्छ।' गिहस्स अंते अववरए गच्चा निच्चिंतो जाओ। तीए पुणो वि पुट्ठं—'किं एवं नग्गो आगओ ?' तेण कहियं—"चोरेहिं लुंठिओ, सव्वं अवहरिअ नग्गो कओ।' सा कहेइ—"पुव्वं मए कहियं, हे सामि ! तए एव मज्झरत्तीए मंजूसं गहिऊण न आगंतव्वं, तुमए न मन्निअं तेण एवं जायं।" सो कहेइ—"अहं महाबलिट्ठो वि किं करेमि ? जइ पंच छ वा चोरा आगया होज्जा, तया ते सव्वे अहं जेउं समत्थो, एए उ सयसो थेणा आगया, तेणाहं तेहिं सह जुज्झमाणो पराजिओ, सव्वं लुंठिऊण नग्गो कओ, पिट्ठदेसे य असिणाहं पहरिओ। पासेसु पिट्ठदेसं घाएण सह कीडगावि उप्पन्ना।"

तीए तस्स पिट्ठदेसं पासित्ता णायं—चिब्भडस्स रसं बीयाइं च इमाइं संति। भत्तुस्सं वि कहिअं—'सामि ! भयभंतेण तए एवं जाणियं, केण वि अहं पहरिओ एवं तओ सोणिअं निग्गयं, तत्थ य कीडगा वि समुप्पन्ना, तं न सच्चं। तुं चिब्भडेण पहरिओ सि, तस्स रसं बीयाइं च पिट्ठदेसे लग्गाइं" ति। तओ

वह सुनार भय से कांपता हुआ, मार्ग में इधर-उधर देखता हुआ बाजार मार्ग से जाता हुआ सीमा से जब साग के व्यापारी की दुकान के समीप गया (पहुँचा) तब किसी मनुष्य के द्वारा पकी हुई ककड़ी (खीरा) बाहर फेंकी गई और वह उस सुनार की पीठ पर लगी। उसके द्वारा समझा गया (कि) किसी के द्वारा मैं प्रहार किया गया हूँ। (उसने) पीठ पर हाथ से छुआ, वहां (उसके द्वारा) खीरे के रस और बीज को छूकर विचार किया गया—अहो, मैं प्रगाढरूप से प्रहार किया गया हूँ, इसलिए घाव के साथ खून भी निकला है, उसमें कीड़े भी उत्पन्न हुए हैं। इस प्रकार भय से अत्यन्त व्याकुल (वह) जल्दी-जल्दी चलता हुआ घर-द्वार पर पहुंचा।

बन्द हुए घरद्वार को देखकर अपनी पत्नी को बुलाने के लिए उच्च स्वर से कहा—"हे मदन की माता! द्वार खोलो, द्वारा खोलो।" वह अन्दर बैठी रही। सुनती हुई भी न सुनती हुई (सी) कुछ काल ठहरी। बहुत गुस्सा करने पर उसने आकर और दरवाजे को खोलकर इस प्रकार पूछा—"बहुत क्यों चिल्लाते हो?" भय से ग्रस्त वह घर में घुसकर पत्नी से कहता है—"द्वार शीघ्र बन्द करो, ताला भी लगाओ।" सब करके उसके द्वारा पूछा गया—"इस प्रकार नग्न क्यों हुए?" उसके द्वारा कहा गया—"अन्दर कोठरी में चलो, पीछे मुझको पूछो"। घर की अन्तिम कोठरी में जाकर निश्चित हुआ। फिर उसके द्वारा पूछा गया—"इस प्रकार नग्न क्यों आये?" उसके द्वारा कहा गया—"चोरों द्वारा लूटा गया हूँ, सब छीनकर नग्न किया गया हूँ।" उसने कहा—"मेरे द्वारा पहले (भी) कहा गया है (कि) हे स्वामी! तुम्हारे द्वारा मध्यरात्रि में पेटी को लेकर नहीं आया जाना चाहिए, तुम्हारे द्वारा (यह) नहीं माना गया, इसलिए इस प्रकार हुआ है।" उसने कहा—"मैं महाबलवान (हूँ, तो भी) क्या करूं? यदि पांच या छः चोर आये होते तो उन सबको मैं जीतने के लिए समर्थ होता किन्तु ये सैकड़ों चोर आये इसलिए मैं उनके साथ लड़ते हुए हरा दिया गया, सब लूटकर नग्न किया गया और पीठ में तलवार से प्रहार किया गया। पीठ को देखो, घावसहित कीड़े भी उत्पन्न हुए (हो गए)।"

उसके द्वारा उसकी पीठ को देखकर जान लिया गया—ये खीरे के बीज और रस हैं। पति के लिए ही कहा गया—"हे स्वामी! भय से ग्रस्त होने के कारण तुम्हारे द्वारा इस प्रकार जाना गया है। किसी के द्वारा मैं प्रहार किया गया (और) इस प्रकार उससे खून निकला तथा वहां कीड़े भी उत्पन्न हुए वह सत्य नहीं है। तुम खीरे के द्वारा प्रहार किए गए हो, उसका रस और बीज पीठ में लगे हैं।" तब उसके

तस्स देहपक्खालणाय सा जलं गहिऊण आगया, नियपइस्स देहसुद्धि करेऊण परिहाण-वत्थप्पणं ताइं चेव वत्थाइं अप्पेइ। सो ताइं वत्थाइं पासिऊणं धिट्ठत्तणेण कहेइ—"हुं, हुं, मए तयच्चिय तुमं नाया, मए चिंतिअं—मम भज्जा किं करेइ ? तेणाहं भयभंतो इव तत्थ थिओ, सव्वावहरणमुवेक्खिअं, अन्नहा मए पुरओ इत्थीए का सत्ती ?" सा कहेइ—"हे भत्तार ! तव बलं मए तया चेव नायं, गेहेसूरो तुमं असि, अओ अज्जयणाओ तुमए मज्झरत्तीए मंजूसं गहिऊण कयावि न, आगंतव्वं" ति भज्जाए वयणं सो अंगीकरेइ।

———

देह–प्रक्षालन के लिए वह जल लेकर आई। अपने पति की देह की सफाई करके, पहनने के लिए अर्पण में (उसने) वे ही वस्त्र दिए। वह उन वस्त्रों को देखकर ढीठता से कहता है—हुं-हुं मेरे द्वारा उस समय ही तुम जान ली गई थीं। मेरे द्वारा विचार किया गया—मेरी पत्नी क्या करती है ? इसलिए भय से ग्रस्त की तरह वहां रहा और सब अपहरण की उपेक्षा की गई। अन्यथा मेरे सामने स्त्री की क्या शक्ति है ? उसने कहा—"हे स्वामी ! तुम्हारा बल मेरे द्वारा उसी समय ही जान लिया गया (था), तुम गृह-शूर हो। अतः आज से तुम्हारे द्वारा मध्यरात्रि में पेटी को लेकर कभी भी न आया जाना चाहिए।" इस प्रकार पत्नी के वचन को उसने अंगीकार किया।

अपभ्रंश अनुवाद

गेहि सूरु

एक्कहिं गामे एक्कु सुवण्णयारु वसइ । तासु रायपहहो मज्झभाए हट्टिग्रा (हट्टी) विज्जइ । सया मज्झरत्तिहिं सो सुवण्णभरिउ मंजूसा गहेप्पिणु नियघरि आगच्छइ । एक्कया तासु भज्जाए चिंतिउ—एहो महु भत्तारु सया मंजूसा गहेप्पिणु मज्झरत्तिहिं गेहि आगच्छइ, तं ण वरु । जावेंहि कयावि मग्गे चोरा मिलेसंति तावेंहि किं होसइ ? तइयहुं ताए नियभत्तारु वुत्तु—"हे पिउ ! मज्झरत्तिहिं तउ गिहे आगमणु णवि सोहणु ति । मज्झभाए कयावि को वि मिलेसइ तइयहुं किं होसइ ?" सो कहेइ—"तुहुं महु बलु णहि जाणहि, तेण एव बोल्लसि । महु अग्गए नरसउ पि आगच्छेसहिं ते कि करेसहिं मज्झु अग्गए ते किं वि करेवं णउ समत्था । तइं मउ णउ करिएव्वउं ।" एम सुणिवि ताए चिंतिउ-गेहि सूरु महु पिउ अत्थि, समए तासु परिक्खा करेसउं ।

एक्कया सा नियघर समीववासिणीहे खत्तियाणीहे घरि गमेप्पिणु कहेइ—"हे पियसहि ! तुहुं तुज्झ भत्तारहो सव्वु वत्थभूसु मज्झु अप्पि, महु किं पि पओयणु अत्थि ।" ताए खत्तियाणी अप्पहो पिआसु असिसहिअ सिरवेढण, कडिपट्टाइ, सुहडवेसु सव्वु समप्पिउ । सा गहेवि गेहि गया ।

जइयहुं रत्तिहिं एक्कु जामु गउ तइयहुं सा तं सव्वु सुहडवेसु परिहाइ, असि गहेप्पि निस्संचारे रायपहे निग्गया । पिअहो हट्टाहु नाइदूरे रुक्खसु पच्छा अप्पाणु आवरेविणु ठिआ । किंचि काले सो सोण्णारो हट्टु संवरेवि, मंजूसा च हत्थेण गहेप्पिणु सो भयभंतो एत्तहे-तेत्तहे पासंतु झत्ति गच्छंतु जावेंहि तासु रुक्खसु समीउ आगउ, तावेंहि पुरिसवेसधारिणी सा अत्थकए नीसरवि मउणें तं निब्भच्छेइ - हुं हुं सव्वु मुंचि, अण्णहा मारिहिउं । सो सहसत्ति रुंधिउ, भएण थरथरंतो 'मइं ण मारेसु, मइं ण मारेसु' एम कहेप्पि मंजूसा अप्पिआ । तओ (तो) तइयहुं सा सव्व परिहिअवत्थगहणस्सु करवाल-अग्गु तासु वच्छि ठविवि वसणाइ पि कड्ढावेइ । ताम सो परिहियकडिपट्टय-मेत्तो जाओ । तओ (तो) सा कडिपट्टय पि मरणभय दंसावि कड्ढावेइ । सो एवहिं जाओ इव नग्गु जाउ । सा सव्वु गहिवि घरि गया, घरदारु पिहेवि अंतो थिआ ।

सो सुवण्णयारु भएण कंपमाणु एत्तहे-तेत्तहे अवलोएंतु मग्गि आवणवीहीहिं गच्छंतु जइयहुं सागवावारी हट्टसमीव आगउ तइयहुं केण जणेण पक्कचिब्भडु बाहिर पक्खित्तु, तं तु तासु सुवण्णयारस्सु पिट्ठभागे लग्गिउ । तेण णाउ केणावि हउं पहरिउ । पिट्ठदेसि हत्थें फासेइ, तेत्थु चिब्भडस्सु रसु बीआइं च फासेवि विआरिउ-अहो ! हउं गाढयरु पहरिउ म्हि । तेण घाएण समउ सोणिउ पि निग्गउ, तासु मज्झे कीडगा वि समुप्पन्ना । एम अच्चंतभयाउलो तुरन्तें गच्छंतु घरदारे समागउ ।

पिहिउ घरदारु पासिवि नियभज्जा आहवणहो उच्चसरे कहेइ—"हे मयणस्सु माया ! दारु उग्घाडे, दारु उग्घाडे ।" सा अब्भंतरि थिया सुणंति वि असुणंति व किंचि कालु थिआ । अइ अक्कोसणे सा आगच्छिवि दारु उग्घाडिउ एम पुच्छइ—"किं अइ अक्कोससि ?" सो भयभतु गिहि पविसिउ भज्जा कहेइ—"दारु तुरन्तें पिहाहि तालगु पि देसु ।" ताए सव्वु करिवि पुट्ठु—"किं एव नग्गु जाउ ?" तेण वुत्तु—अब्भंतरि अववरइ चलि, पच्छा मइं पुच्छ ।" गिहसु अंते अववरइ गमेवि निच्चितु जाउ । ताए पुणु वि पुट्ठु—"किं एम नग्गु आगउ ?" तेण कहिउ—"चोरहिं लुंठिउ, सव्वु अवहरेवि नग्गु कउ ।" सा कहेइ—"पुव्वि मइं कहिउ—हे सामि ! पइं एव मज्झ-रत्तिहिं मंजूसा गहेवि ण आगच्छेव्वउं, तइं ण मण्णिउ तेण एम जाउ" । सो कहेइ—"हउं महाबलिट्ठु वि किं करउं ? जइ पंच-छ वा चोरा आगया होज्जा तावेहिं ता सव्वा हउं जाएवं समत्थु, एइ उ सउ थेणा आगया, तेण हउं तहिं सहुं जुज्झमाणु पराजिउ, सव्वु लुंठेवि नग्गु किउ, पिट्ठदेसु य असिएं हउं पहरिउ । पासे पिट्ठदेसु, घाएण समउ कीडगावि उप्पन्ना ।"

ताए तासु पिट्ठदेसु पासि णाउ—चिब्भडस्सु रसु बियाइं च इमाइं संति । भत्तारहो वि कहिउ—"सामि ! भयभंतेण पइं एम जाणिउ—'केण वि हउं पहरिउ एम तावेहिं सोणिउ निग्गउ, तेत्थु य कीडगा वि समुप्पन्ना' तं णउ सच्च । तुहुं चिब्भ-डेण पहरिउ सि, तासु रसु बीयाइं च पिट्ठदेसि लग्गाइं ति ।" तओ (तो) तहो देह-

पक्खालणस्सु सा जल गहेप्पिणु आगया, नियपइ देहसुद्धि करेवि परिहाणवत्थ अप्पणि ताइं चेव वत्थाइं अप्पेइ। सो ताइं वत्थाइं पासि धिट्ठतणेण कहेइ—हुं,हुं, मइं तावेहि च्चिय तुहुं णाया, मइं चिंतिउ—महु भज्जा किं करेइ ? तेण हउं भयभंतो इव तेत्थु थिउ, सव्वाहरणु उवेक्खिउ अण्णहा महु अग्गए इत्थी का सत्ती ? सा कहेइ—"हे भत्तार ! तउ बलु मइं तामहिं चेव णाउ, तुहुं गेहि सूरु अत्थि, तेण अज्जयणाहु तइं मज्झरत्तिहिं मंजूसा गहि कयावि णउ आगच्छेव्वउं" ति भज्जा-वयणु सो अंगीकरेइ।

परिशिष्ट

परिशिष्ट

अंक-योजना

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
अपभ्रंश साहित्य अकादमी,
(जैनविद्या संस्थान)
भट्टारकजी की नसियां,
सवाई रामसिंह रोड़,
जयपुर-302004

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर
अपभ्रंश डिप्लोमा परीक्षा, ...
प्रथम – प्रश्नपत्र
अपभ्रंश साहित्य का इतिहास एवं हिन्दी का आदिकाल
अवास्तविक क्रमांक........................

अंक योजना —

1. प्रश्न के उत्तर में जहां दो या दो से अधिक गलतियों की सम्भावना हो वहाँ उत्तर के मूल्यांकन में एक गलती के लिए $\frac{1}{2}$ अंक कम कर दिया जायेगा। किन्तु जहाँ एक गलती की ही सम्भावना हो वहाँ उत्तर में गलती होने पर शून्य अंक दिया जायेगा।

2. प्रत्येक गलती लाल स्याही के गोले O से दर्शायी जायेगी।

3. प्राप्तांक के कुल योग में $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{2}$ या $\frac{3}{4}$ आने पर अगला पूर्णाङ्क कर दिया जायेगा। (जैसे $60\frac{1}{4}=61$)।

परीक्षार्थी का क्रमांक—
अंकों में........................
शब्दों में........................

पंजीयन संख्या ....
प्रश्नपत्र—प्रथम
विषय – अपभ्रंश साहित्य
परीक्षा तिथि........................

प्रश्न संख्या	प्राप्तांक
1	....
2	....
3	....
4	....
5	....
6	....
7	....
8	....
9	....
10	....

कुल योग
अंकों में........................
शब्दों में........................

परीक्षक के हस्ताक्षर...........
दिनांक........................

श्रेणी योजना— पूर्णाङ्क=150

1. विशिष्ट श्रेणी—80% या अधिक (120 अक)

2. प्रथम श्रेणी—

   सामान्य अंक—60% या अधिक (90 अंक)

   प्रतिष्ठा अंक—80% या अधिक (120 अंक)
   (किसी एक प्रशनपत्र में)

3. द्वितीय श्रेणी—50% या अधिक (75 अंक)

4. पास श्रेणी —36% या अधिक (54 अंक)

मॉडल प्रश्नपत्र

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार अपभ्रंश डिप्लोमा परीक्षा, ...

प्रश्नपत्र—प्रथम

अपभ्रंश साहित्य का इतिहास एवं हिन्दी का आदिकाल

समय—3 घण्टे | पूर्णाङ्क—150

नोट—निम्नलिखित में से कोई से 5 प्रश्न करिए।

इस प्रश्नपत्र में 10 प्रश्न पूछे जायेंगे। इनमें से कोई से 5 प्रश्न करना अनिवार्य होगा। सभी प्रश्न समान अंकों के होंगे।

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार अपभ्रंश डिप्लोमा परीक्षा, ...

प्रश्नपत्र – द्वितीय

अपभ्रंश काव्य और काव्यांश

समय—3 घण्टे पूर्णाङ्क—150

1. निम्नलिखित काव्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 45
(प्रत्येक पाठ में से एक काव्यांश पूछा जायेगा)।

2. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 20
(प्रत्येक पाठ में से दो गद्यांश पूछे जायेंगे)।

3. निम्नलिखित काव्यांशों का अन्वय कीजिए। 10
(दो काव्यांशों का अन्वय पूछा जायेगा)।

4. निम्नलिखित गद्यांश व पद्यांश का अकादमी-पद्धति से व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए। 20
(एक गद्यांश व एक पद्यांश का व्याकरणिक विश्लेषण पूछा जायेगा)।

5. समीक्षात्मक लेख में से कोई एक प्रश्न पूछा जायेगा। 20

6. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त छन्दों के मात्रा लगाकर उनके नाम व लक्षण लिखिए। 16
(इसमें आठ छन्द पूछे जायेंगे)।

7. जिन छन्दों के निम्नलिखित लक्षण हैं, उनके नाम लिखिए। 10
(इसमें पाँच छन्द पूछे जायेंगे)।

8. अपभ्रंश के छन्दों का हिन्दी में प्रयोग पर एक प्रश्न पूछा जायेगा। 5

9. अपभ्रंश की हिन्दी छन्दों को देन पर एक प्रश्न पूछा जायेगा। 4

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार अपभ्रंश डिप्लोमा परीक्षा, ...

प्रश्नपत्र—तृतीय

प्राकृत एवं अपभ्रंश—व्याकरण रचना

समय—3 घण्टे पूर्णांक—150

1. निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत एवं अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए। प्राकृत अनुवाद की संरचना भी लिखिए। (संज्ञा-सर्वनाम शब्दों, क्रियाओं तथा कृदन्तों के केवल एक विकल्प का प्रयोग कीजिए। अनुवाद–20 अंक
संरचना–10 अंक
(10 वाक्य पूछे जायेंगे) 30

2. क. निम्नलिखित प्राकृत के पद्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 16
(प्रत्येक चयनिका में से दो पद्य पूछे जायेंगे)

ख. निम्नलिखित प्राकृत के पद्यों का अकादमी पद्धति से व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए। 4
(प्रत्येक चयनिका में से पद्य की एक पंक्ति का व्याकरणिक विश्लेषण पूछा जायेगा)

3. निम्नलिखित अपभ्रंश के पद्य का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 2
क. (चयनिका में से दो पद्य पूछे जायेंगे)

ख. निम्नलिखित अपभ्रंश के पद्य का व्याकरणिक विश्लेषण कीजिए। 2
(चयनिका में से एक प्रश्न पूछा जायेगा)

4. निम्नलिखित प्राकृत के गद्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 12
(प्रत्येक पाठ में से एक गद्यांश पूछा जायेगा)

5. क. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए। 2
(4 शब्दों में सन्धि पूछी जायेगी)

ख. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि विच्छेद कीजिए। 2
(4 शब्दों का सन्धि विच्छेद पूछा जायेगा)

6. निम्नलिखित पद्य में आए हुए समासों को बताइए। 4
(कोई एक पद्य पूछा जायेगा)

7. प्राकृत की किसी एक विभक्ति के प्रयोग की व्याख्या पूछी जायेगी। 4
(प्राकृत की किसी एक विभक्ति के सम्बन्ध में पूछा जायेगा)

8. निर्देशानुसार निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के प्राकृत एवं अपभ्रंश के रूप सभी विकल्पों में लिखिए। 5
(इसमें पांच शब्द पूछे जायेंगे)

9. निर्देशानुसार निम्नलिखित सर्वनामों के प्राकृत एवं अपभ्रंश के रूप सभी विकल्पों में लिखिए। 3
(इसमें तीन शब्द पूछे जायेंगे)

10. निम्नलिखित अपभ्रंश व प्राकृत के वाक्यों को शुद्ध कीजिए। 4
(इसमें दो प्राकृत व दो अपभ्रंश के वाक्य पूछे जायेंगे)

11. निम्नलिखित अपभ्रंश व प्राकृत के वाक्यों का निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। 4
(इसमें दो अपभ्रंश व दो प्राकृत के वाक्य पूछे जायेंगे)

12. निम्नलिखित वाक्यों का दो प्रकार से प्राकृत एव अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए। 2
(इसमें दो वाक्य पूछे जायेंगे)

13. अनियमित भूतकालिक कृदन्तों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए। 5
(इसमें पांच वाक्य पूछे जायेंगे)

14. अनियमित कर्मवाच्यों के क्रिया-रूपों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए। 5
(इसमें पांच वाक्य पूछे जायेंगे)

15. निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के प्राकृत में सभी विकल्पोंसहित क्रिया-रूप लिखिए। 4
(इसमें चार क्रियारूप पूछे जायेंगे)

16. निम्नलिखित कृदन्तों का प्रयोग करते हुए प्राकृत के वाक्य बनाइए तथा उनका हिन्दी अनुवाद भी कीजिए। ये सभी कृदन्त विभक्ति चिह्नरहित हैं। 4
(इसमें चार कृदन्त पूछे जायेंगे)

17. निर्देशानुसार निम्नलिखित क्रियाओं के कृदन्त के रूप में किसी एक विकल्प का प्रयोग करते हुए प्राकृत एवं अपभ्रंश के वाक्य बनाइए। 4
(इसमें दो क्रियाएँ पूछी जायेंगी)

18. प्रेरणार्थक प्रत्ययों में से किसी एक का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत एवं अपभ्रंश में अनुवाद कीजिए। 4
(इसमें दो वाक्य पूछे जायेंगे)

19. निम्नलिखित वाक्यों में से कृदन्त छांटिए और उनके नाम लिखिए। जहां आवश्यक हो वहां विभक्ति बताइए। 4
(इसमें दो वाक्य अपभ्रंश व दो वाक्य प्राकृत के पूछे जायेंगे)

20. निम्नलिखित प्राकृत की क्रियाओं के काल, वचन और पुरुष लिखिए। 5
(इसमें पाँच क्रियाएँ पूछी जायेंगी)

21. अपठित प्राकृत गद्य पूछा जायेगा। 8

22. अपभ्रंश प्राकृत व्याकरण साहित्य पर प्रश्न पूछा जायेगा। 5

अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

पत्राचार अपभ्रंश डिप्लोमा परीक्षा, ...

प्रश्नपत्र – चतुर्थ

पाण्डुलिपि—सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पक्ष

समय—3 घण्टे पूर्णाङ्क—150

खण्ड—क

नोट – निम्नलिखित अध्यायों में से तीन प्रश्न पूछे जाएंगे। कोई एक प्रश्न करना अनिवार्य होगा।

अध्याय 1, 2, 3, 4, 5

1. 25

2. 25

3. 25

खण्ड—ख

निम्नलिखित अध्यायों में से तीन प्रश्न पूछे जायेंगे। कोई दो प्रश्न करना अनिवार्य होगा।

अध्याय 6, 7, 8, 9

4. 25

5. 25

6. 25

खण्ड—ग

(सभी प्रश्न कीजिए)

7. पठित अंश (इसमें 20 पंक्तियाँ पूछी जायेंगी)। 30

8. अपठित अंश (इसमें 20 पंक्तियाँ पूछी जायेंगी)। 20

9. प्रशस्ति, प्रारम्भ (इसमें से एक प्रश्न पूछा जायेगा)। 5

10. पांडुलिपि का परिचय पत्र बनाना (इसमें से एक प्रश्न पूछा जायेगा)। 5

11. वेष्टन बांधना (इसमें से एक प्रश्न पूछा जायेगा)। 5

———

शुद्धि-पत्र

क्र. सं.	पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
1.	2	2	अनरुप	अनुरूप
2.	19	11	मलरूप	मूलरूप
3.	23	2	जुज्झमि/जुज्झामि/ जुज्झेमि	जुज्झमु/जुज्झेमु/ जुज्झामु
4.	35	1	खलहु	खेलहु
5.	36	12	तुहं/तुं/तुह	तुमं/तुं/तुह
6.	114	2	चाएिए	चाहिए